नाटकों के देश में



नाटकों के देश में

एशिया और प्रशांत क्षेत्र
के बाल नाटक

अनुवाद

मस्तराम कपूर

एकः सूते सकलम्

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

एशिया और प्रशांत क्षेत्र के बाल-नाटकों का यह संग्रह मूल रूप में अंग्रेजी में *एशियन/पैसिफिक कोपब्लिकेशन प्रोग्राम (एसीपी)* के अंतर्गत छपा था। एशियन कल्चरल सेंटर फार यूनेस्को के इस कार्यक्रम को एशिया और प्रशांत क्षेत्र के यूनेस्को के सदस्य राज्यों का संयुक्त प्रयास और यूनेस्को का सहयोग प्राप्त था। इन नाटकों और चित्रों का सहयोग इस क्षेत्र के 14 देशों ने किया है और इनका चयन एशिया तथा प्रशांत क्षेत्र के यूनेस्को के सदस्य देशों के परामर्श से एशियाई/प्रशांत क्षेत्रीय सहप्रकाशन कार्यक्रम की क्षेत्रीय संपादकीय-समिति ने किया है। यह पुस्तक सहप्रकाशन कार्यक्रम का 19 वां प्रकाशन है। कार्यक्रम के अंतर्गत *एशियन/पैसिफिक कोपब्लिकेशन प्रोग्राम* की सभी पुस्तकों का कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है और इन्हें सारी दुनिया के बच्चों ने पढ़ा है।

मूल संस्करण : एशियन कल्चरल सेंटर फार यूनेस्को, 6 फुकुरोमाची, शिंजुकु-कु, टोकियो 162, जापान द्वारा प्रकाशित

ISBN 81-237-0993-5

पहला संस्करण : 1994
दूसरी आवृत्ति : 2001 *(शक 1922)*

Together in Dramaland *(Hindi)*
रु. 26.00
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क नयी दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

अनुक्रम

आओ दोस्त बनायें

आस्ट्रेलिया



आओ दोस्त बनायें

—ग्रेग मेकार्ट

● *पात्र-परिचय*

उदकू-फुदकू	एक खुशमिजाज कंगारू
चबड़-तबड़	लालची भेड़ें
मिमी रानी	एक भेड़ जो लालची नहीं है
छैल-छबीला	बनठन का शौकीन प्यारा उल्लू
नीरा मौसी	बात का बतंगड़ बनाने वाली बिल्ली
हरफनमौला	सबका मददगार
अनखू	दुष्ट भेड़िया 1
कनखू	दुष्ट भेड़िया 2
मनखू	दुष्ट भेड़िया 3
निक्की दीदी	सबका हाथ बंटाने वाली चंचल चिड़िया

दृश्य एक

(उदकू-फुदकू मंच पर आता है और इधर-उधर उछल-कूद करता है, जैसे किसी चीज की तलाश में हो। अंत में वह संतुष्ट हो जाता है।)

उदकू-फुदकू : आहा ! क्या मजा है। यहां कोई भी नहीं है।

(वह अपनी पोटली खोलता है और घास का भोजन करने की तैयारी करता है।)

उदकू-फुदकू : क्या कहने ! हरी, ताजी, रसभरी घास। इससे अच्छा भोजन कहां मिल सकता है ?

(वह थोड़ी सी घास खाता है। कुछ दूरी पर लालची भेड़ों, चबड़-तबड़ का सामूहिक गान सुनाई देता है।)

चबड़-तबड़ : सोना ! सोना ! सोना !
हम निकलीं धन की खोज में
सोना। सोना ! सोना !
खतरनाक चट्टानों में
गड्ढों में या खाइयों में
सोना ! सोना ! सोना !
हमें अपनी जेबें भरनी हैं।
सोना मोती माणिक लेकर
जी भरके मौज करनी है।

उदकू-फुदकू : यह क्या हो रहा है ? अरे, ये तो कोई नये लोग हैं। शायद विदेशी. . . । बड़े शहर से आये हैं धपड़ धपड़ करते, मेरी सुंदर साफ-सुथरी घास को रौंदते हुए। यह सब मुझे पागल बना देगा।

(वह उत्तेजित होकर मंच पर आगे-पीछे उछलने लगता है।)

उदकू-फुदकू : इन्हें चाहिए हीरे-जवाहर, सोना ! ढेर सारा सोना। छिः ! धन के भुक्खड़। मैं तो तंग आ गया हूं। मैं इन भुक्खड़ों को बताते-बताते हार गया कि सोना कहां मिलेगा। यह सब जानकारी मेरी पूंछ की नोक पर है।

(वह अपनी पोटली उठाने लगता है।)

उदकू-फुदकू : जानते हो, मैं क्या करूंगा ? मैं यहां छिप जाऊंगा। अगर वो मुझे नहीं ढूंढ पाये तो चुपचाप चले जायेंगे और फिर यहां सिर्फ मैं हूंगा और मेरी सुंदर-सुंदर घास।

(वह दर्शकों के बीच जा बैठता है।)

उदकू-फुदकू : शी . . . उन्हें मत बताना कि मैं यहां हूं। शी. . .

(चबड़-तबड़ *भेड़ें गीत गाती और नाचती दिखाई देती हैं। वे मेमनों की तरह ऊन से लिपटी दिखाई देती हैं और लगता है उनमें सोचने की शक्ति शायद ही हो।)*

चबड़-तबड़ : सोना ! सोना ! सोना !
हम निकलीं धन की खोज में
सोना ! सोना ! सोना !
खतरनाक चट्टानों में
गड्ढों में या खाइयों में
सोना ! सोना ! सोना !
हमें अपनी जेबें भरनी हैं।
सोना, मोती, माणिक लेकर
जी भरके मौज करनी है।

(उदकू-फुदकू, चबड़-तबड़ *भेड़ों के गीत और नृत्य पर मुग्ध होता है, विशेषकर सबसे छोटी भेड़* मिर्मी रानी*के नृत्य पर। गीत समाप्त होने के बाद वह जोर से ताली बजाता है और तुरंत उसे अपनी गलती का अहसास होता है।)*

उदकू-फुदकू : ओह। मेरी खुशी तो पोटली से निकलकर बाहर आ गयी। अरे आज तो मैं जीत नहीं पाऊंगा।

(चबड़-तबड़ भेड़ें–मिर्मी रानी *को छोड़कर—उसे देख लेती हैं और आगे बढ़कर उसे मंच पर खींच लाती हैं।)*

चबड़-तबड़ 3 : वहां कोई है।

चबड़-तबड़ 1 : हम सोचती थीं यहां कोई नहीं है।

चबड़-तबड़ 2 : मुझे खुशी है कि हमने तुम्हें देख लिया। तुम यहीं के लगते हो।

चबड़-तबड़ 1 : हमें तुम्हारी थोड़ी सी मदद चाहिए। हम. . .

चबड़-तबड़ 3 : हमें सोना चाहिए। सोना, सोना, सोना और जल्दी।

चबड़-तबड़ 4 : हमें दिखाओ। कहां मिलेगा ?

चबड़-तबड़ 3 : हम बड़ी दूर से आयी हैं. . .

चबड़-तबड़ 2 : कुछ भी जिससे धन मिले। नीलम, माणिक, कुछ भी. . .

(*प्रश्नों की झड़ी के कारण उदकू-फुदकू की कुछ समझ में नहीं आता।* चबड़-तबड़ भेड़ें उसे *कभी खींचती हैं, कभी धकेलती हैं।*)

उदकू-फुदकू : अरे-अरे, एक मिनट रुको।

चबड़-तबड़ 2 : अच्छा लो। अब बताओ, समस्या क्या है ?

चबड़-तबड़ 3 : अरे बोलो ना, क्या बात है ?

उदकू-फुदकू : तुमने तो मेरी हवा निकाल दी। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं आ रहा हूं या जा रहा हूं।

चबड़-तबड़ : तुम न आ रहे हो न जा रहे हो। तुम यहीं पर खड़े हो।

चबड़-तबड़ 4 : हम सोने की तलाश में हैं। बताओ, हमें कहां जाना चाहिए।

उदकू-फुदकू : मैं ठीक-ठीक बता सकता हूं कि तुम्हें कहां जाना चाहिए . . .

चबड़-तबड़ 2 : मैं सारी बात समझाती हूं। हम सब सिडनी से आयी हैं। हमने सुना है यहां बहुत धन है। हम उसी धन की तलाश में आयी हैं। हम सोना और दूसरे कीमती हीरे-मोतियों से मालामाल होने आयी हैं।

चबड़-तबड़ 1 : हमें पक्का पता चला है कि यहां बहुत सोना है। हम सिर्फ इतना जानना चाहते हैं कि वह कहां मिलेगा।

उदकू-फुदकू : तुम लोगों को सोना किसलिए चाहिए ?

चबड़-तबड़ 4 : मैं तो यामाह मोटर साइकिल खरीदूंगी ताकि मुझे चार पंजों पर घिसट-घिसट कर न चलना पड़े। मैं तो चाहती हूं कि एक छलांग लगाकर गद्दी पर बैठूं और ब्रूम . . . ब्रूम . . . भर्रर . . .

चबड़-तबड़ 3 : (चबड़-तबड़ **4** *को पकड़कर और उसे गिरने से बचाते हुए*). . . और मैं सोने से हवाई जहाज खरीदूंगी ताकि मैं पंछियों की तरह उड़ सकूं. . . पंछियों से भी बहुत ऊंचे. . . .शूम . . . *(वह कूद कर* चबड़-तबड़ *की पीठ पर चढ़ जाती है और हवाई जहाज की तरह उड़ने का अभिनय करती है।)*

चबड़-तबड़ 2 : मैं तो सोने से बढ़िया-बढ़िया कपड़े, अंगूठियां और कानों की बालियां लूंगी। मैं ऊन से उकता गयी हूं। अब मुझे कोई और चीज चाहिए। नरम-नरम बालों वाला या कंगारू की खाल का कोट . . . (उदकू-फुदकू *उसकी बात सुनकर चौंकता है।)*

चबड़-तबड़ 1 : भई, मैं तो सागर पार के देशों में जाऊंगी। मेरे दादा परदादा स्पेन से आये थे। वो मेरिनो थे।

चबड़-तबड़ 2,3,4 : अब बताओ, हमें सोना कहां मिलेगा ?

उदकू-फुदकू : अच्छा-अच्छा मैं बताता हूं। कुछ सोना तो उस पहाड़ के ऊपर और कुछ उसके नीचे. . .

(चबड़-तबड़ *भेड़ें उसकी बताई हुई दिशा में भागती हैं और* उदकू-फुदकू *उनके धक्के से गिरते-गिरते बचता है।)*

उदकू-फुदकू : मुझे आज तक जितने भी लोग मिले हैं उनमें से चबड़-तबड़ भेड़ें सबसे ज्यादा मूर्ख, खुदगर्ज और लालची हैं। छिः , पैसे की भूखी, सोने के लिए पागल।

(उसकी नजर मिमी रानी *पर पड़ती है जो* चबड़-तबड़ *भेड़ों के आने के बाद अलग-थलग रही थी।)*

उदकू-फुदकू : ओह, माफ कीजिए। मैंने आपको देखा ही नहीं. . . ।

मिमी : कोई बात नहीं। मैंने इसका बुरा नहीं माना। *(वह मुस्कुराती है।)*

उदकू-फुदकू : ओह, मैंने कहा आप . . . मेरा मतलब तुम कौन . . .

मिमी : मेरा नाम मिमी है। आपका नाम . . . ?

उदकू-फुदकू : मैं . . . ! मैं. . . मैं एक कंगारू हूं। लेकिन तुम मुझे उदकू-फुदकू कह सकती हो।

मिमी : हैलो श्रीमान उदकू-फुदकू, आप कैसे हैं ?

उदकू-फुदकू : क्या. . . क्या तुम भी सिडनी से आ रही हो ?

मिमी : जी, मैं भी सिडनी से आ रही हूं।

उदकू-फुदकू : तो फिर तुम भी दूसरी भेड़ों की तरह सोना क्यों नहीं ढूंढ रही ?

मिमी : सोने-वोने में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। मैं जैसी हूं वैसी ही रहना मुझे अच्छा लगता है।

उदकू-फुदकू : ओह . . . *(कुछ रुककर)* मेरा मतलब है अगर तुम्हारी सोने में दिलचस्पी नहीं है तो शायद तुम मेरे साथ गांवों की सैर करना चाहोगी।

मिमी : मुझे बहुत अच्छा लगेगा।

उदकू-फुदकू : मैं इस सारे इलाके को जानता हूं। यह मेरा घर है। मैं तुम्हारा परिचय अपने सब मित्रों से करा सकता हूं-एमू, प्लैटिपस, कोला, कूकाबरा. . .

मिमी : मैं इनसे पहले कभी नहीं मिली।

उदकू-फुदकू : मैं एमू से कहूंगा, वह तुम्हें पीठ पर बिठाकर घुमायेगा। वह यहां का सबसे तेज दौड़ने वाला जानवर है।

मिमी : हाय . . . कितना मजा आयेगा !

उदकू-फुदकू : और प्लैटिपस तुम्हें तैरने वाली सबसे अच्छी जगहें दिखा सकता है।

मिमी : और शायद कूकाबरा यह बता सकता है कि वह हमेशा किसका मजाक उड़ाता रहता है।

उदकू-फुदकू : हां हां, जरूर बता सकता है। लेकिन यह सब तो शुरुआत है। हम तारों की छाया में सोयेंगे, अलाव के पास बैठकर गाने गायेंगे, नदी में नहायेंगे और पहाड़ों पर पिकनिक मनाने जायेंगे।

मिमी : हम यह सब कब करेंगे।

उदकू-फुदकू : अभी . . .

(वह अपनी पोटली संभालता है और मिमी का हाथ पकड़कर भागने लगता है। बीच में वे चबड़-तबड़ भेड़ों से जा टकराते हैं जो सोने से थैले भर कर लौट रही हैं।)

चबड़-तबड़ 1 : तुमने ठीक कहा था। हमें सोने के बहुत बढ़िया ढेले मिले।

चबड़-तबड़ 2 : मदद के लिए धन्यवाद। लेकिन आगे बढ़ना चाहिए।

चबड़-तबड़ 3 : आगे और भी सोना है। नमस्ते।

चबड़-तबड़ 4 : तुम भी आओ मिमी। हम जा रही हैं।

उदकू-फुदकू :
मिमी : } लेकिन वह तो . . . मैं तो यहीं रहूंगी।

चबड़-तबड़ 3 : क्या बकवास करती हो। चलो . . .

(चबड़-तबड़ 3 *और* 4 मिमी *को पकड़कर अपना गाना गाती मंच से बाहर निकल जाती हैं।* उदकू-फुदकू *हक्का बक्का होकर देखता रहता है और बाद में रो पड़ता है।*)

उदकू-फुदकू : (*सिसकते हुए*) ओ . . . वह चली गयी। मेरी मिमी चली गयी। मेरी पहली दोस्त, मेरी इकलौती दोस्त। मैं उसे ढूंढ कर छोड़ूंगा। भले ही मेरी सारी उम्र इसमें निकल जाये।

(वह रोते-सिसकते बाहर निकल जाता है। थोड़ी देर के लिए मंच पर सन्नाटा रहता है।)

दृश्य दो

(*छैल-छबीला उल्लू पूंछ वाली पोशाक पहने, सिर पर पतीले जैसा टोप लगाए, काले रंग का बंद छाता हाथ में लिए* नीरा मौसी *के साथ आता है। वह* छैल-छबीले *की बांहों में बांहें डाले हुए है। दोनों बहुत खुश नजर आते हैं।*)

छैल-छबीला : हे मेरे पुराने इंग्लैंड. . . . विदा ! हमेशा हमेशा के लिए विदा !

नीरा मौसी : और घर में पीछे छूटे सभी को विदा।

छैल-छबीला : पुराने इंग्लैंड को विदा . . . और धूप से जगमगाते आस्ट्रेलिया को हैलो. . . हैलो . . .

नीरा मौसी : प्यारे, तुम ठीक कहते हो। यहां काफी धूप है। (*छाता तानकर*) . . . कितनी गरमी है।

छैल-छबीला : पुराने इंग्लैंड के सर्दी-कोहरे और बर्फ-पानी से तो यह अच्छा ही है। तुम्हारा क्या खयाल है ?

नीरा मौसी : मुझे कोई शिकायत नहीं। मैं तो खुश ही हूं। बस पसीना आ रहा है। इतनी सी बात है।

छैल-छबीला : पसीना आना तुम्हारे लिए अच्छा है। (*आगे बढ़ कर उसके हाथों को थपथपाता है।*) इससे शरीर खुल जाता है। (*वह एक ठूंठ पर बैठता है।*) ऊंह . . . तुम ठीक कहती हो। यहां तो बहुत गरमी है। (*वह रुमाल से चेहरा पोंछता है।*)

छैल-छबीला : हां, नीरा, अब जब हम आस्ट्रेलिया आ गये हैं। (*खड़ा होकर अपने शरीर को सीधा करता है।*) मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूं।

नीरा मौसी : बोलो . . .

छैल-छबीला : (*घुटनों के बल बैठकर और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर*) . . . ओ नीरा, मेरी प्यारी नीरा। तुम कितनी सुंदर हो। बहुत इंतजार हो चुका। अब हमें शादी कर लेनी चाहिए।

नीरा मौसी : तुम बहुत अच्छे हो छैल-छबीले। लेकिन शादी की अंगूठी कहां से आयेगी?

छैल-छबीला : अंगूठी?

नीरा मौसी : हां अंगूठी। अंगूठी के लिए क्या करें?

छैल-छबीला : ओह . . . . छोड़ो भी। मैं नहीं जानता। क्या तुम्हारे पास कोई अंगूठी नहीं है?

नीरा मौसी : नहीं। मेरे पास तो नहीं है।

छैल-छबीला : (*उठते हुए*) फिर तो बात खत्म हुई। क्या बदकिस्मती है। क्या तुम अंगूठी की शर्त छोड़ नहीं सकती?

नीरा मौसी : ऐसी बात मत करो प्यारे . . .

छैल-छबीला : परेशान मत हो प्रिये। मैं जरूर कोई इंतजाम करूंगा।

(दोनों निराश होकर कुछ दूर होकर बैठ जाते हैं। पीछे कहीं उदकू-फुदकू *की सुबकियां सुनाई देती हैं।)*

छैल-छबीला : (नीरा मौसी *के पास जाकर)* रो मत प्रिये। मुझे उम्मीद है कोई न कोई रास्ता निकल आयेगा।

नीरा मौसी : मैं कहां रो रही थी?

छैल-छबीला : ओह . . . मुझे लगा तुम रो रही हो। (*वापस अपनी जगह जाता है।* उदकू-फुदकू *की सुबकियां फिर सुनाई देती हैं।)*

नीरा मौसी : (छैल छबीले*के पास जाकर*) प्यारे, तुम्हें इस तरह परेशान होने की जरूरत नहीं है।

छैल-छबीला : मैं कहां परेशान हूं।

नीरा मौसी : मैंने सुना तुम रो रहे थे।

छैल-छबीला : नहीं, तुमने गलत सुना। मुझे लगा तुम रो रही हो।

(दोनों इशारे से श्रोताओं को बताते हैं कि दूसरा कितना कमजोर दिल है। इतने में उदकू-फुदकू*परेशान सा मंच पर आकर कूदने लगता है। उसने खानकर्मी की टोपी पहन रखी है अथवा शायद उसने सिर के ऊपर टार्च बांध रखी है और अपनी पोटली में टेलीस्कोप लिये हुए है। वह सुबक रहा है।)*

छैल-छबीला : ओह . . . यह तो बहुत परेशान दिखता है।

नीरा मौसी : इसे क्या तकलीफ होगी?

छैल-छबीला : पता नहीं। लेकिन मैं कह सकता हूं कि मैं उसकी तरह दिखने लगूं तो मैं भी बहुत परेशान हो जाऊंगा।

नीरा मौसी : (उदकू -फुदकू *के पास जाकर*) माफ कीजिए। बिना परिचय के इस तरह आपके पास आने के लिए क्षमा चाहती हूं। क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकती हूं ?

उदकू-फुदकू : नहीं, मेरी कोई मदद नहीं कर सकता। तब तक जब तक मुझे मेरी मिमी रानी नहीं मिल जाती।

नीरा मौसी : मिमी रानी ?

(*वह* छैल-छबीले *की तरफ देखती है।* छैल-छबीला *अपने कंधे उचका लेता है।* उदकू-फुदकू *और भी सुबकने लगता है।*)

नीरा मौसी : कौन है यह मिमी रानी ?

उदकू-फुदकू : (*सुबकियों में रुक-रुक कर*) वह दुनिया में सबसे सुंदर है। वह मुझे प्यार करती है और मैं उसे प्यार करता हूं। हम शादी करने वाले थे। मैं उसे आस्ट्रेलिया दिखाना चाहता था। लेकिन सोने की भूखी दूसरी चबड़-तबड़ भेड़ें उसे खींच कर अपने साथ ले गयीं। मैंने उसे बहुत ढूंढ़ा, बहुत ढूंढ़ा लेकिन मुझे वह नहीं मिली। ऊ . . . ऊ . . . ऊ . . .

नीरा मौसी : मुझे आपसे बहुत हमदर्दी है।

छैल-छबीला : माफ कीजिए . . . क्या कहा कि आप उससे शादी करने वाले थे?

उदकू-फुदकू : हां. . . (ऊ. . . . ऊ. . . . *कर रोता है।*)

छैल-छबीला : मैं और नीरा भी शादी करने पर विचार कर रहे थे। लेकिन हमारे पास अंगूठी नहीं है। अगर तुम्हारे पास अंगूठी हो तो हमें दे दो क्योंकि तुम्हें तो अब उसकी जरूरत नहीं पड़ेगी।

(*यह सुन कर* उदकू-फुदकू *जोर-जोर से रोने लगता है।* नीरा मौसी *इशारे से* छैल-छबीले *की कठोरता पर नाराजगी जाहिर करती है* ।)

नीरा मौसी : (उदकू-फुदकू *से*) मुझे यकीन है तुम्हें तुम्हारी मिमी रानी मिल जायेगी। दुखी मत हो। मुझे अपने इस खूबसूरत देश के बारे में कुछ बताओ।

उदकू-फुदकू : इसके बारे में क्या बताऊं ?

नीरा मौसी : पर्वत पर जो पेड़ दिखाई देते हैं उनका नाम क्या है ?

उदकू-फुदकू : ये कूलाबा के पेड़ हैं।

नीरा मौसी : और वह तालाब के किनारे वाले ?

उदकू-फुदकू : यह तालाब नहीं है। इसे बिल्लाबोंग कहते हैं।

नीरा मौसी : क्या ?

उदकू-फुदकू : बिल्लाबोंग ।

नीरा मौसी : कितना अजीब है यह सब। क्या आस्ट्रेलिया के मूल पेड़ सिर्फ कूलाबा हैं?

उदक्कू-फुदक्कू : लगता है तुम्हारा दिमाग कुछ फिर गया है। आस्ट्रेलिया में सैंकड़ों तरह के पेड़ हैं। एक पेड़ का नाम है बोरी . . . और मेरा ख्याल है तुमने क्वांडोंग पेड़ का नाम तो कभी सुना ही नहीं होगा।

नीरा मौसी : उई मां . . . सचमुच मैंने कभी नहीं सुना। मैं यह जरूर कहूंगी कि तुम्हारे यहां बहुत खूबसूरत नाम हैं—कूलाबा, कवांडोंग, बोरी. . . बिल्लाबोंग . . .

(तभी वहां आस्ट्रेलियाई जानवरों की मिली-जुली वेशभूषा में हरफनमौला *रहस्यमय ढंग से प्रकट होता है।)*

हरफनमौला : यह सब क्या हो रहा है ?

(तीनों डरकर कुछ अचंभे से सिकुड़ जाते हैं।)

हरफनमौला : डरो मत। मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूंगा। तुमने मुझे याद किया इसलिए मैं आ गया।

नीरा मौसी : हमने तुम्हें कब बुलाया ?

हरफनमौला : क्यों तुमने ये शब्द नहीं कहे . . . कूलाबा, क्वांडोंग, बोरी, बिल्लाबोंग ?

नीरा मौसी : हां कहे तो थे।

हरफनमौला : तो फिर सुनो। इस देश में आने वाले किसी व्यक्ति को जब मेरी जरूरत होती है तो उसे सिर्फ कूलाबा, क्वांडोंग, बोरी, बिल्लाबोंग कहना होता है और मैं मदद के लिए हाजिर हो जाता हूं।

नीरा मौसी : ओह. . . यह तो बहुत अच्छी बात है। हम आपको किस नाम से पुकारें ?

हरफनमौला : हरफनमौला. . .

नीरा मौसी : क्या ?

छैल-छबीला : कौन ?

उदकू-फुदकू : ऐं. . .

हरफनमौला : हरफन-मौला . . . हरफनमौला . . . अब बताओ, तुम्हारी क्या समस्या है ?

छैल-छबीला : हमारी कोई समस्या नहीं है।

नीरा मौसी : है . . . देखिए मैं नीरा मौसी हूं। ये मेरे बहुत प्यारे दोस्त छैल छबीला हैं और ये हमारे नये दोस्त हैं . . .

हरफनमौला : नमस्कार !

उदकू-फुदकू : आप कैसे हैं?

छैल-छबीले : आप कैसे हैं?

नीरा मौसी : मैं और छैल-छबीला शादी करना चाहते हैं। लेकिन हमारे पास अंगूठी नहीं है।

हरफनमौला : निकी दीदी से मिलो। उसके पास जमूरे से लेकर आइसक्रीम तक सब कुछ मिल जायेगा। शादी की अंगूठी भी उसके पास जरूर होगी। तुम्हें अगले बिल्लाबोंग के किनारे क्वांडांग में बने घोंसले में अंगूठी जरूर मिलेगी।

छैल-छबीला : बहुत खुशमिजाज और समझदार हैं आप. आपका शुक्रिया। चलो नीरा, हम निकी दीदी को ढूंढ़ कर शादी कर लेते हैं।

नीरा मौसी : एक मिनट रुको प्यारे. . . हां हरफनमौला साहब, हमारे दोस्त उदकू-फुदकू की दोस्त मिमी गर्नी खो गयी है और वह बहुत दुखी है. . .

हरफनमौला : हां, मैंने सुना था। उन्हें भी अपनी मिमी गर्नी उसी बिल्लाबोंग पर मिल जायेगी। भेड़ें **कभी** न कभी तो पानी पीने आयेंगी। मेरा ख्याल है कि तुम तीनों को एक साथ वहां जाना चाहिए और वहां तुम्हें तुम्हारी मनचाही चीज मिल जायेगी। कोई दिक्कत नहीं आयेगी।

छैल-छबीला : बहुत बहुत धन्यवाद।

नीरा मौसी : हम आपके बहुत आभारी हैं।

उदकू-फुदकू : बहुत सुंदर . . . खुश रहो दोस्त।

हरफनमौला : एक बात सुनते जाओ। यह इलाका सुरक्षित बिल्कुल नहीं है। पता चला है कि दुष्ट भेड़िये इधर-उधर घूम रहे हैं। मेरा ख्याल है कि हमारे अंग्रेज दोस्तों को पता नहीं होगा कि यहां के दुष्ट भेड़िये कैसे होते हैं।

(उदकू-फुदकू नींद लेने लगता है।)

हरफनमौला : बिल्लाबोंग के आसपास घूमने वाले ये बड़े घिनौने जानवर हैं। ये किसी के दोस्त नहीं होते। अगर तुम चौकन्ने न रहे तो वो तुम्हें अपना भोजन बना लेंगे।

छैल-छबीला : भोजन !

नीरा मौसी : आपका मतलब, वो हमें खा जायेंगे ?

हरफनमौला : कोशिश तो करेंगे। लेकिन अगर वो तुम्हें मिल जायें तो तुम कूलाबा, क्वांडोंग, बोरी, बिल्लाबोंग कहकर मुझे बुला लेना। मैं उनसे तुम्हारा पीछा छुड़ा दूंगा। ठीक . . . ?

नीरा मौसी : हां, ठीक है . . . शुक्रिया . . .

हरफनमौला : फिर मिलेंगे।

(हरफनमौला गायब हो जाता है।)

नीरा मौसी : अरे . . . उदकू-फुदकू को तो नींद आ गयी।

छैल-छबीला : ख्याल बुरा नहीं है। *(वह भी उदकू-फुदकू के पास पसर जाता है।)*

नीरा मौसी : हमें सोना नहीं चाहिए। दुष्ट भेड़िये आ गये तो ? हरफनमौला ने जो कहा था उसे तुमने सुना नहीं। अगर हम सो गये तो वे हमें अपना भोजन बना लेंगे। मैं तो अभी इस मूड में नहीं हूं कि किसी का भोजन बनूं।

(लेकिन छैल छबीला सो जाता है।)

नीरा मौसी : ओह . . . अब मैं क्या करूं . . . ये बिचारे तो बहुत थक गये हैं। मैं इन्हें कुछ देर सोने दूंगी। मैं यहां बैठकर चौकसी करूंगी। *(जम्हाई लेती है।)* उफ . . . धूप कितनी तेज है। हमें तुरंत यह जगह छोड़ देनी चाहिए।

(वह भी नींद में डूब जाती है।)

दृश्य तीन

(उदकू-फुदकू, नीरा मौसी और छैल-छबीला पीठ से पीठ लगाकर मंच पर सोये हैं । उनके पीछे एक सिर प्रकट होता है और फिर एक-एक करके दो और सिर प्रकट होते हैं। धीरे-धीरे, दबे पैर दुष्ट भेड़िये आगे बढ़ते हैं। वे आवाज नहीं करते लेकिन मुद्रा भयानक बना लेते हैं।)

अनखू : वाह . . . ही . . . ही . . . देखो। मजेदार भोजन हा हा हा . . .

कनखू : बहुत मजेदार दिखाई देता है . . . क्यों ?

मनखू : बकवास बंद। मैंने सबसे पहले गंध ली थी, इसलिए पहला हिस्सा मेरा।

(वह तीनों को सूंघने लगता है।)

कनखू : चलो शुरू करो। तुम्हारा हक बनता है।

अनखू : जल्दी करो। मैं भूख से मरा जा रहा हूं।

(तीनों दुष्ट भेड़िये उदकू-फुदकू , छैल-छबीला और नीरा मौसी को घेर लेते हैं।)

मनखू : जरा रुको। देख लो वह आसपास तो नहीं है।

कनखू : तुम्हारा मतलब . . .

मनखू : हां,मेरा मतलब वही कमबख्त हरफनमौला।

अनखू : तो फिर शुरू करें।

(वह ठूंठ के पीछे जाकर नमक मिर्च की शीशियां उठा लाता है। शीशियां हिलते समय आवाज करती हैं, जिससे छैल-छबीले की नींद टूट जाती है और वह उठ बैठता है।)

छैल-छबीला : किस चीज का शोर है ? (दुष्ट भेड़ियों *को देखकर)* आ . . . आ . . . नीरा . . . उदकू-फुदकू . . .

(तीनों हड़बड़ाकर दुष्ट भेड़ियों से बचने की कोशिश करते हैं।)

नीरा मौसी : *(जिसे एक दुष्ट भेड़िये ने पकड़ रखा है)*. . . बचाओ. . . कूलाबा, क्वांडोंग, बोरी, बिल्लाबोंग . . .

(हरफनमौला *तत्काल प्रकट होता है)*

हरफनमौला : तुम फिर यहां खुराफात करने आ गये । मैंने तुम्हें कितनी बार कहा है कि अपने बिल्लाबोंग के आसपास रहो, नहीं तो मैं तुम्हें तड़ी पार कर दूंगा। भागो यहां से। ये शरीफ लोग अभी-अभी इंग्लैंड से यहां आये हैं। तुम्हें इन्हें भोजन पर बुलाना चाहिए या इन्हें अपना भोजन बनाना चाहिए ? अब यहां से नौ दो ग्यारह हो जाओ वरना मैं तुम्हें श्रोताओं के बीच फेंक दूंगा।

मनखू : *(जाते हुए)* तुम क्या हमेशा आस-पास रहोगे? कहीं न कहीं, कभी न कभी तो हम इन्हें दबोच ही लेंगे।

हरफनमौला : भागो यहां से (दुष्ट भेड़िये *भाग जाते हैं* ।) अब तीनों मेरी बात ध्यान से सुनो। मैंने तुम्हें बताया था कि दुष्ट भेड़िये शरारत करेंगे। उनका ध्यान रखना। जल्दी से जल्दी उस बिल्लाबोंग तक पहुंच जाओ। फौरन . . .।

(वह जाता है।)

छैल-छबीला : प्रिये, आज तो बाल-बाल बचे।

नीरा मौसी : हमने बहुत बेवकूफी से काम लिया। अब जल्दी चलकर अंगूठी हासिल करो और उस बिल्लाबोंग से जितनी जल्दी हो दूर भाग चलो।

छैल-छबीला : (उदकू-फुदकू *से)* . . . क्यों श्रीमान ! हम उस बिल्लाबोंग तक कैसे पहुंच सकते हैं?

उदकू-फुदकू : . . . मैं . . . मैं . . . नहीं जानता।

छैल-छबीला : तुम नहीं जानते ? मैं तो सोचता था तुम इस इलाके को अपने पांव के पिछले हिस्से की तरह भली-भांति जानते हो।

उदकू-फुदकू : जानता तो हूं . . . कम से कम तब जब मैं ठीक-ठाक होता हूं। लेकिन दुष्ट भेड़ियों ने मुझे इतनी बुरी तरह डरा दिया है कि मैं कुछ सोच नहीं पा रहा हूं। हमेशा ऐसा ही होता है। जब मैं डर जाता हूं तो मेरा दिमाग काम करना बंद कर देता है और मेरे घुटने अकड़ जाते हैं।

नीरा मौसी : बेचारा उदकू-फुदकू . . . तुम यहां कुछ देर आराम करो। हम दोनों चलकर रास्ता खोजते हैं।

छैल-छबीला : बहुत अच्छा विचार है। तुम इधर को जाओ और मैं उधर जाता हूं।

नीरा मौसी : उदकू-फुदकू. . . हम अभी कुछ मिन्ट में लौट आयेंगे।

उदकू-फुदकू : अच्छा . . .*(उदास होकर अकेला मंच पर बैठा रह जाता है।)*. . . अगर मैं बहादुर होता तो उन दुष्ट भेड़ियों को दिखा देता . . . ।

दृश्य चार

(मंच पर उदकू-फुदकू प्रतीक्षा करता है। उसे संगीत और गाने की आवाज सुनाई पड़ती है।)

उदकू-फुदकू : मैं उन दुष्ट भेड़ियों को यूं दबोचूंगा *(दबोचने का अभिनय)* और उनके सिर एक दूसरे से टकरा कर उन्हें आसमान में उछाल दूंगा। लात मार कर उनका कचूमर निकाल दूंगा। उनके बाजुओं को पीठ के पीछे ले जाकर मरोड़ दूंगा। उनके मुंह कीचड़ में रगड़ दूंगा, उनकी पीठ पर चढ़ कर उनकी गर्दनें मरोड़ दूंगा और उनके बाल नोच डालूंगा।

(इस अभिनय के बीच दुष्ट भेड़िये फिर प्रकट होते हैं।)

मनखू : नमस्कार मिस्टर उदकू-फुदकू ! तुमने सोचा होगा कि हमें तुमने चकमा दे दिया। लगता है कुछ डर गये हो। *(उसकी चुटकी काट कर)* अच्छे मोटे ताजे हो। बढ़िया भोजन बनोगे।

उदकू-फुदकू : मैं . . . मैं . . . मुझे डराओ मत।

मनखू : नहीं, डराऊंगा नहीं। इससे पहले कि मैं अपना काम शुरू करूं मैं तुमसे एक सवाल पूछना चाहता हूं। तुम्हारे वे दो साथी कहां हैं ? वह छैल-छबीला और वह नखरेवाली।

उदकू-फुदकू : मु . . . मु . . . मुझे नहीं मालूम . . . ।

मनखू : नहीं मालूम . . . ? ठीक-ठीक बता दो, तुम और तुम्हारे साथी कहां जा रहे थे ?

उदकू-फुदकू : वो . . . वो . . . बिल्लाबोंग के पास क्वांडोंग के पेड़ों पर।

मनखू : किसलिए ?

उदकू-फुदकू : मेरी प्यारी मिमी रानी को ढूंढ़ने और निक्की दीदी से अंगूठी लाने के लिए ताकि छैल-छबीला और नीरा मौसी की शादी हो सके।

मनखू : ओह ! निक्की दीदी। यह जानकर खुशी हुई। अब सुनो। मैं और मेरे साथी उन चारों को वहां खा जायेंगे। उसके बाद हम उस बिल्लाबोंग के पास जाकर तुम्हारे दोस्तों को भी खा जायेंगे। इसलिए तुम यहां कुछ देर रुको और सचमुच में डरो जब तक हम उन सबको खत्म नहीं कर आते। मैं अभी लौट कर आऊंगा। (दूसरे भेड़ियों *के पास जाकर)* नमक किसके पास है ?

अनखू : यहां है . . .

मनखू : इस पर छिड़को और जल्दी करो। काली मिर्च कहां है ?

कनखू : यह रही।

मनखू : इसको छिड़को।

(दुष्ट भेड़िये *नमक-मिर्च छिड़क कर भोजन की तैयारी करते हैं और* उदकू-फुदकू *बच्चों से निवेदन करता है कि वे उसे उन जादुई शब्दों को याद करने में मदद करें। बच्चे उसकी मदद करते हैं और कई कोशिशों के बाद* उदकू-फुदकू *उन शब्दों को बोल पाता है।* हरफनमौला *तुरंत प्रकट होता है।)*

हरफनमौला : तुम तीनों फिर यहां ? इधर आओ। एक लाइन में खड़े हो जाओ। मैंने तुम्हें अपने बिल्लाबोंग के पास रहने दिया था इस शर्त पर कि तुम कोई शरारत नहीं करोगे। मैंने तुम्हें पहले भी कहा था कि तुम खुराफात करते रहोगे तो मैं तुम्हें इस देश से निकाल बाहर करूंगा। अब यहां से भाग जाओ। डबलमार्च . . .(दुष्ट भेड़िये *तेजी से भाग जाते हैं।* उदकू-फुदकू *से)* इस बार तुम बच गये। ऐसा दोबारा मत होने देना। अब अपने दोस्तों को ढूंढो और चलते बनो।

(हरफनमौला *बाहर जाता है।)*

(अंतराल)

नीरा मौसी : मिल गया। मुझे मिल गया बिल्लाबोंग का रास्ता।

छैल-छबीला : बहुत अच्छे . . . मुझे तो कुछ हासिल नहीं हुआ।

नीरा मौसी : हम उस तरफ से जायेंगे। बिल्कुल दूर नहीं है।

उदकू-फुदकू : एक मिनट रुकिए। मैं तुम्हें कुछ बताना चाहता हूं। यहां एक बहुत भयानक बात हुई। दुष्ट भेड़िये यहां आये थे और मैंने उन्हें बता दिया कि हम लोग कहां जा रहे हैं

नीरा मौसी : ओह . . . यह तो बुरा हुआ।

छैल-छबीला : छोड़ो मियां . . . तुम बहुत लापरवाह हो।

उदकू-फुदकू : मुझे अफसोस है। लेकिन मैं बहुत डर गया था।

नीरा मौसी : खैर, अब कुछ नहीं किया जा सकता। हमें जल्दी से जल्दी चल देना चाहिए और यह उम्मीद करनी चाहिए कि हरफनमौला ने उन्हें डराकर भगा दिया होगा।

छैल-छबीला : तुम ठीक कहती हो प्रिये। चलो अब निक्की दीदी को ढूंढ़ें।

उदकू-फुदकू : और मेरी मिंमी रानी को भी . . .

(तीनों *बाहर निकल जाते हैं।)*

दृश्य पांच

(संक्षिप्त अंतराल में भयानक दुर्घटना का वातावरण पैदा करने वाला संगीत बजता है। अटपटे आकार के तीन पेड़ जैसे खुद चलकर मंच पर आते हैं। वे मंच पर आकर रुक जाते हैं और उनके पीछे से एक-एक करके तीन दुष्ट भेड़िये *प्रकट होते हैं।)*

मनखू : अब मेरी तरकीब सुनो। हम इन पेड़ों के पीछे छिपकर निक्की दीदी का इंतजार करेंगे। शी . . . वह आ रही है निक्की दीदी। जाओ। जल्दी।

(वे छिप जाते हैं। निक्की दीदी *साधारण गहनों से ढकी उड़ती हुई आती है। जब वह क्वांडोंग पेड़ के पास पहुंचती है तो* दुष्ट भेड़िये*उस पर टूट पड़ते हैं और उसे घेर लेते हैं।)*

निक्की दीदी : उई . . . ई . . . मां . . .!

मनखू : बोलो मत।

अनखू : हम तुम्हें कुछ नहीं कहेंगे।

कनखू : अगर तुम वैसा करोगी जैसा हम कहेंगे।

मनखू : तुम इन सारे गहनों के साथ बहुत सुंदर लगती हो। *(एक साथी की तरफ देखकर)* क्यों ठीक है न ?

अनखू : बिल्लाबोंग के तने की तरह सुंदर।

निक्की दीदी : तुम मुझसे क्या चाहते हो ? मैंने कुछ नहीं किया है। मुझे अकेला छोड़ दो। तुम मेरे इन सब गहनों को ले लो *(गहने उतारने लगती है)* . . . ले लो इन्हें। ये सब तुम्हारे लिए हैं।

मनखू : इन्हें छोड़ो। हमें ये सब नहीं चाहिए।

कनखू : तुम इन सबमें सचमुच सुंदर लगती हो।

निक्की दीदी : तुम क्या चाहते हो?

मनखू : हमें बताओ ! क्या तुम्हारे पास शादी की अंगूठी है ?

निक्की दीदी : हां, मेरे पास सभी तरह की अंगूठियां हैं। तुम्हें शादी की अंगूठी चाहिए ?

मनखू : नहीं। हमें नहीं चाहिए। लेकिन यहां जल्दी ही दो लोग आयेंगे। छैल-छबीला, उदक्कू और नीरा मौसी बिल्ली। उन्हें शादी की अंगूठी चाहिए। तुम्हें उन्हें एक अंगूठी देनी होगी।

निक्की दीदी : तुम जो कहोगे, दूंगी।

मनखू : मैं और मेरे साथी इन पेड़ों के पीछे छिपे रहेंगे। हम चाहते हैं कि छैल-छबीले और नीरा मौसी को हमारा पता न चले। अगर तुमने बताया कि हम यहां हैं तो मैं तुम्हारा भुरथा बना दूंगा। समझी . . . ?

निक्की दीदी : समझ गयी।

मनखू : शाबाश। तुम बस पेड़ों के पास खड़ी रहो। बाकी सब हम देख लेंगे।

अनखू : वो लोग आ रहे हैं।

मनखू : आओ, हम पेड़ों के पीछे छिप जायें।

(वे छिपते हैं। निक्की दीदी डर के मारे कांपती खड़ी रहती है। छैल-छबीला और नीरा मौसी आते हैं। दोनों थके लगते हैं।)

छैल-छबीला : तुमने तो कहा था ज्यादा दूर नहीं है। यह तो जैसे हजारों मील का सफर था।

नीरा मौसी : मुझे बताया गया था कि यह जगह ज्यादा दूर नहीं है। लेकिन यह इतना बड़ा देश है कि छोटी सी दूरी भी बहुत बड़ी हो जाती है।

छैल-छबीला : ऊ . . . ऊ . . .

नीरा मौसी : उदकू-फुदकू कहां है ?

छैल-छबीला : गोली मारो। . . . वह गड्ढों, तालाबों के आस-पास या पेड़ों के पीछे उछलता फिर रहा होगा अपनी मिमी रानी की तलाश में। वह जल्दी ही यहां पहुंच जायेगा। ओह, देखो। वह रही निक्की दीदी।

(निक्की दीदी इशारे से उन्हें छिपे हुए भेड़ियों के प्रति सावधान करने की कोशिश करती है।)

छैल-छबीला : क्या बात है देवी जी ? मुझसे डरने की कोई जरूरत नहीं। शांत रहो। मैं तुम्हें कोई चोट नहीं पहुंचाऊंगा।

(छैल-छबीला और नीरा मौसी, निक्की दीदी के करीब जाते हैं। तभी उदकू-फुदकू प्रवेश करता है और उन पर दुष्ट भेड़ियों को झपटते देखता है। निक्की दीदी चिल्लाती हुई उड़कर श्रोताओं में पहुंच जाती है। उदकू-फुदकू ठूंठ के पीछे छिप जाता है। दुष्ट भेड़िये, छैल-छबीले, और नीरा मौसी को पकड़ कर बांध देते हैं।)

कनखू : पकड़ लिया।

अनखू : अबकी बार तुम नहीं बच सकते।

मनखू : इनका मुंह बंद कर दो ताकि ये उसको, क्या नाम . . . हरफनमौला को न बुला सकें।

कनखू : उसके आने से पहले हम यहां से निकलकर भाग चलें।

अनखू : और वह उदकू-फुदकू ? रुको, हम उसे भी पकड़ेंगे।

मनखू : नहीं, चलो। उसे बाद में देख लेंगे। चलो मेरे साथ. . .।

(दुष्ट भेड़िये छैल-छबीले *और* नीरा मौसी *को लेकर बाहर निकल जाते हैं।* उदकू-फुदकू *मंच पर रह जाता है।* निक्की दीदी *उसके पास आ जाती है।)*

उदकू-फुदकू : क्या हुआ ?

निक्की दीदी : दुष्ट भेड़ियों ने छैल-छबीले और नीरा मौसी को पकड़ लिया। उन्होंने कहा है कि मैंने उनका कहना नहीं माना तो वे मुझे भी पकड़ लेंगे।

उदकू-फुदकू : इसमें तुम्हारा कसूर नहीं है। लेकिन हम क्या कर सकते हैं! हमें उनको बचाना होगा।

(दोनो निराशा में बैठ जाते है)

दृश्य छह

उदकू-फुदकू : सुनो, यह चबड़-तबड़ भेड़ों का गीत है। इनमें मेरी मिमी रानी भी होगी।

निक्की दीदी : कौन ?

उदकू-फुदकू : नाम छोड़ो। लेकिन वह कितने अच्छे वक्त पर आयी है।

(चबड़-तबड़ *भेड़ों का प्रवेश)*

चबड़-तबड़ 3 : देखो, वहां कौन है ?

चबड़-तबड़ 4 : वही पुराना उदकू-फुदकू।

चबड़-तबड़ 1 : हमने तो बहुत मजे किये।

चबड़-तबड़ 2 : हमें तो इतना सोना मिला कि तुम अंदाजा नहीं लगा सकते।

चबड़-तबड़ 1 : इतना कि हमें उसे . . . छिपाना पड़ा।

चबड़-तबड़ 4 : इसे यह मत बताना कि कहां . . . छिपाया है ?

चबड़-तबड़ 3 : अब मैं मोटर साइकिल खरीद सकती हूं। . . . भर्रर . .

उदकू-फुदकू : *(जो बहुत व्याकुल हो चुका है).* . . . चुप रहो।

चबड़-तबड़ : क्या ?

उदकू-फुदकू : चुप रहो। और ध्यान से सुनो। दुष्ट भेड़ियों ने छैल-छबीले और नीरा मौसी को पकड़ लिया है।

घबड़-तबड़ : भेड़िये ? . . . छैल-छबीला और नीरा मौसी ?

उदकू-फुदकू : और वो इस वक्त उनका भोजन बनाकर खा रहे होंगे।

घबड़-तबड़ : ऊ . . . ऊ . . .

उदकू-फुदकू : मैं नहीं जानता तुम क्या करोगी? लेकिन मैं उन्हें बचाऊंगा।

घबड़-तबड़ 3 : हम तुम्हारे साथ हैं।

घबड़-तबड़ 1 : मैं उन दुष्ट भेड़ियों की शक्ल नहीं देख सकती।

घबड़-तबड़ 2 : भयानक बदबूदार जानवर !

घबड़-तबड़ 4 : आओ, हम चलकर उन्हें मारें।

उदकू-फुदकू : निक्की दीदी ! तुम हमारे साथ आ रही हो न ?

निक्की दीदी : जरूर ! मुझे भी गिन लो। मुझसे जो बन पड़ेगा करूंगी।

उदकू-फुदकू : मिमी रानी, मैं चाहता हूं तुम हमारे साथ न आओ। वहां जाने में खतरा है और तुम्हें चोट लग सकती है।

मिमी रानी : नहीं। जब तुम सब जा रहे हो तो मैं भी चलूंगी। मैं सबसे तगड़े भेड़िये से लड़ सकती हूं।

घबड़-तबड़ 3 : शाबाश मिमी।

घबड़-तबड़ 4 : आओ चलें। अब किसका इंतजार है ?

उदकू-फुदकू : चलो। मेरे पास एक तरकीब है। मैं रास्ते में बताऊंगा। जब वो मिल जायेंगे . . .

(वे सब मुठभेड़ के उत्साह में निकल जाते हैं। संगीत के अंतराल के बाद दुष्ट भेड़िये छैल-छबीले और नीरा मौसी के साथ प्रवेश करते हैं। एक भेड़िया बंदियों को मंच के एक किनारे खड़ा करता है। शेष दो भेड़िये दस्तरखान बिछाते हैं। बंदियों को इन दो भेड़ियों के पास धकेल दिया जाता है और वे उन्हें दस्तरखान पर लिटाते हैं। भेड़िये उन्हें खाने की तैयारी करते हैं। तभी उदकू-फुदकू अकेला प्रवेश करता है।

उदकू-फुदकू : अरे ठहरो ! तुम कुछ भूल गये हो। मैं भी तुम्हारे लिए मजेदार भोजन बन सकता हूं।

अनखू : अरे, वह रहा उछलकूद मचाने वाला हमारा भोजन।

मनखू : पकड़ो इसे । यह आइसक्रीम का स्वाद देगा।

(दुष्ट भेड़िये उदकू-फुदकू *पर झपटते हैं। वह श्रोताओं में गायब हो जाता है। जब* दुष्ट भेड़िये *उसका पीछा कर रहे होते हैं तो* चबड़-तबड़ भेड़ें *चुपके से आती हैं और* छैल-छबीले *तथा* नीरा मौसी *के बंधन खोल देती हैं।* निक्की दीदी *अपने पंखों से इस कार्रवाई को छिपाने की कोशिश करती है। जब* छैल-छबीला *और* नीरा मौसी *के बंधन खुल जाते हैं तो* निक्की दीदी *और* चबड़-तबड़ भेड़ें दुष्ट भेड़ियों *का मजाक उड़ाती हुई कहती हैं !"देखो देखो, तुम्हारे भोजन का क्या हुआ?"; "लो एक टुकड़ा खा लो"; "तली हुई स्वादिष्ठ* निक्की दीदी" *। वे अपने को अधिक से अधिक स्वादिष्ट दिखाने का अभिनय करती है।* दुष्ट भेड़िये *उन पर टूट पड़ते हैं।* उदकू-फुदकू*उनका पीछा करता है और कुछ हाथापाई के बाद* दुष्ट भेड़ियों *को काबू में कर लिया जाता है।)*

निक्की दीदी : छैल-छबीले और नीरा मौसी। मुझे माफ करो। मेरी वजह से तुम पकड़े गये थे।

नीरा मौसी : नहीं, इसमें तुम्हारा कोई कसूर नहीं था।

छैल-छबीला : तुम आसानी से इसका बदला चुका सकती हो। तुम जानती हो न कि हमें शादी की अंगूठी चाहिए।

निक्की दीदी : और यह रही सब से अच्छी अंगूठी।

छैल-छबीला : बहुत बहुत धन्यवाद। अब, मेरी प्यारी नीरा ! हम शादी कर सकते हैं।

उदकू-फुदकू : और मैं मिर्मी रानी से शादी करूंगा, अगर वह तैयार हो।

मिमी रानी : जरूर, मैं तुमसे यह बात कहने ही वाली थी।

(चबड़-तबड़ *भेड़ें ताली बजाकर खुशी प्रकट करती हैं।)*

निक्की दीदी : लेकिन तुम्हारे साथ कौन शादी करेगा ?

(अंतराल)

मिमी रानी : हरफनमौला . . . आओ उसे बुलायें।

सभी मिलकर : कूलाबा, क्वांडोंग, बोरी, बिल्लाबोंग . . .

हरफनमौला : *(प्रकट होकर)* अहा ! अब लगता है, तुम एक दूसरे से बंधना चाहते हो।

छैल-छबीला : आप कहते हैं।

नीरा मौसी : आप कहते हैं।

मिमी रानी : आप कहते हैं।

उदकू-फुदकू : आप कहते हैं।

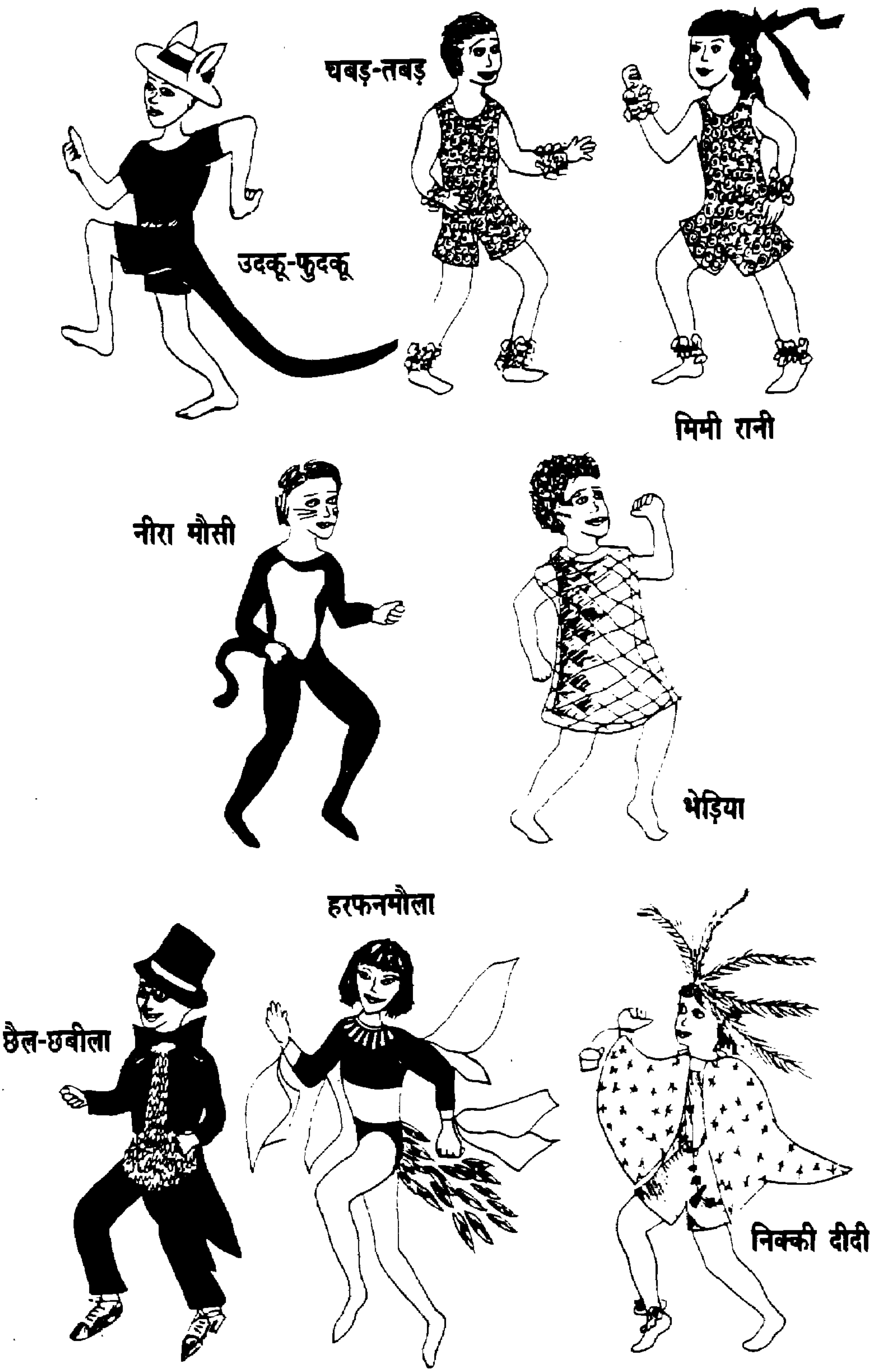
हरफनमौला : मुझे बहुत खुशी है। लोगों को मित्र बनते देखना अच्छा लगता है।

(सभी नाचते हुए विवाह-गीत गाते हैं।)

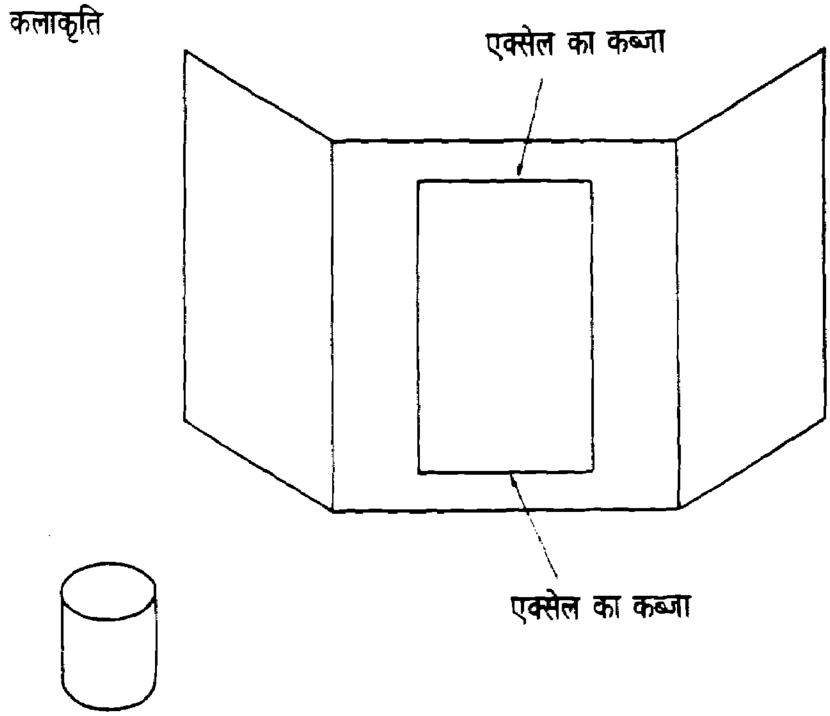
पर्दा

चित्र : लिन राबर्ट्स-गुडविन

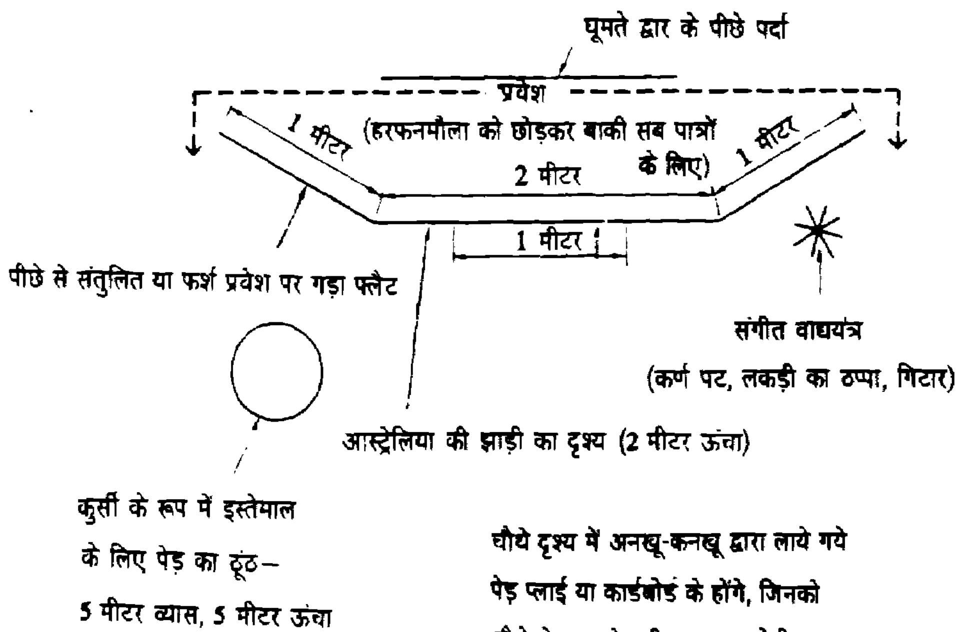
वेशभूषा



मंच-सज्जा



मंच की रूपरेखा



चौथे दृश्य में अनखू-कनखू द्वारा लाये गये पेड़ प्लाई या कार्डबोर्ड के होंगे, जिनको पीछे से पकड़ने की व्यवस्था होगी।

चावल की रोटियां

बर्मा



चावल की रोटियां

--पी. औंग खिन

● *पात्र-परिचय*

को को आठ साल का एक बर्मी लड़का। कुछ मोटा।

नी नी नौ साल का बर्मी लड़का। **को को** का दोस्त।

तिन सू आठ साल का बर्मी लड़का। **को को** का दोस्त।

मि मि सात साल की बर्मी लड़की। **को को** की दोस्त।

उ बा तुन जनता की दुकान का प्रबंधक। (इसका अभिनय कोई लंबे कद का लड़का नकली मूंछें और चश्मा लगाकर कर सकता है।)

(एक सादा कमरा, दीवारों पर बांस की चटाइयां। एक दीवार के सहारे मांस रखने की अलमारी। अलमारी के ऊपर एक रेडियो, चाय की केतली, कुछ कप और खाली गुलाबी फूलदान रखा है। कमरे के बीच फर्श पर एक चटाई बिछी है जिसके ऊपर कम ऊंचाई वाली गोल मेज रखी है। दो दरवाजे। एक दरवाजा पीछे की ओर खुलता है और दूसरा एक किनारे की ओर। पंछियों के चहचहाने के साथ-साथ पर्दा उठता है। दूर कहीं मुर्गा बांग देता है। कुत्ता भौंकता है। कहीं प्रार्थना की घंटियां बजती हैं। को को *आता है, जम्हाई लेकर अपने को सीधा करता है।)*

को को : माता-पिता धान लगाने खेतों में चले गये हैं। जब तक मां खाना बनाने के लिए लौट कर नहीं आती मुझे घर की देखभाल करनी है। हूं . . . ऊं . . . ऊं . . . देखता हूं मां ने नाश्ते में मेरे लिए क्या बना कर रखा है।

(वह अलमारी की तरफ जाता है और उसे खोलकर देखता है। एक तश्तरी निकाल कर देखता है कि चावल की चार रोटियां हैं। वह होंठों पर जीभ फेरता है और मुस्कुराता है।)

को को : आहा . . . मजा आ गया। चावल की रोटियां। मेरी मनपसंद चीज।

(वह पेट मलता हुआ रोटियों को मेज पर रखता है और बैठ जाता है।)

को को : आज तो डट कर नाश्ता होगा।

(वह एक रोटी उठाकर मुंह में डालने लगता है, तभी कोई दरवाजे पर दस्तक देता है।)

नी नी : को को . . . ए को को, दरवाजा खोलो। मैं हूं नी नी।

को को : गजब हो गया। यह तो भुक्खड़ नी नी है। उसकी नजर में रोटियां पड़ीं तो जरूर मांगेगा। मैं इन्हें छिपा देता हूं।

नी नी : दरवाजा खोलो को को, तुम क्या कर रहे हो। इतनी देर लगा दी।

को को : मैं इन्हें कहां छिपाऊं ? कहां छिपाऊं ? *(रेडियो की तरफ देखकर)* मैं तश्तरी को रेडियो के पीछे छिपा दूंगा। *(जोर से)* अभी आता हूं नी नी . . . जरा रुको।
(वह रेडियो के पीछे रोटियां छिपाने के बाद दरवाजा खोलता है।)

को को : आओ, नी नी। अंदर आ जाओ।

(नी नी अंदर आता है।)

नी नी : दरवाजा खोलने में इतनी देर क्यों लगायी ?

को को : कुछ खास नहीं . . . मैंने अभी-अभी नाश्ता किया और मुंह धोने लगा था। बोलो, सुबह-सुबह कैसे आना हुआ ?

नी नी : क्या ? यह मत कहना कि तुम भूल गये थे। परीक्षा के बारे में रेडियो पर खास सूचना आने वाली है।

को को : लेकिन तुम्हारे घर भी तो रेडियो है। नहीं क्या ?

नी नी : वह खराब है। इसीलिए सोचा तुम्हारे रेडियो पर सुनूंगा।

(नी नी *गोल मेज के पास बैठ जाता है।)*

नी नी : रेडियो को उठा कर यहीं ले आओ ताकि हम आराम से लेटे-लेटे सुन सकें।

को को : नी नी, मुझे खेद है, हमारे रेडियो में भी कुछ खराबी है।

नी नी : आओ, कोशिश करके देखें। मैं उठाकर ले आता हूं।

(नी नी *अलमारी की तरफ जाने लगता है।)*

को को : नहीं, नहीं। नी नी, इसे मत छूना। छुओगे तो शाक लगेगा।

(नी नी *रुक जाता है।)*

नी नी : मैंने तो इसे छू ही लिया था। भई, मैं वह खबर जरूर सुनना चाहता हूं। तिन सू के घर जाता हूं। तुम आओगे ?

को को : नहीं। अच्छा, फिर मिलेंगे।

(नी नी *तेजी से बाहर निकल जाता है।)*

को को : *(गहरी सांस लेकर)* बाल-बाल बचे। अब चलकर नाश्ता किया जाये। मेरे पेट में चूहे दौड़ने लगे हैं।

(को को *तश्तरी उठाकर मेज के पास आता है। एक रोटी उठाकर खाने लगता है , तभी दरवाजे पर दस्तक सुनाई देती है।)*

को को : *(तश्तरी नीचे रखकर)* जाने अब कौन आ टपका।

मि मि : को को, दरवाजा खोलो। मैं हूं मि मि।

को को : बाप रे। यह तो मि मि है। उसे चावल की रोटियां मेरी ही तरह बहुत अच्छी लगती हैं। और वह हमेशा भूखी होती है। मुझे रोटियां छिपा देनी चाहिए। लेकिन कहां? वह तो कुछ खाने की चीज ढूंढ़ने के लिए सारे कमरे की तलाशी लेगी।

मि मि : *(फिर दरवाजा खटखटाकर)* को को, दरवाजा खोलो न . . . इतनी देर क्यों लगा रहे हो ?

को को : कहां छिपाऊं? कहां छिपाऊं? *(कमरे के चारों तरफ देखकर)* ठीक, इस फूलदान के अंदर छिपा दूं।

(को को *फूलदान में तश्तरी रखकर दरवाजा खोलता है।* मि मि *कागज में लिपटा बंडल उठाये कमरे में आती है।)*

मि मि : दरवाजा खोलने में इतनी देर क्यों कर दी ?

को को : मैंने अभी-अभी नाश्ता किया था और मुंह धोने लगा था। आओ बैठो।

(को को *और* मि मि *मेज के गिर्द बैठते हैं।)*

मि मि : मुझे अभी-अभी तुम्हारे माता-पिता मिले—खेतों में जाते हुए। तुम्हारी माताजी ने कहा कि तुम्हारे लिए चावल की कुछ रोटियां रखी हैं। मैंने सोचा . . .

को को : चावल की रोटियां ? हां थीं तो। लेकिन मैंने सब खा लीं।

मि मि : एक भी नहीं बची ?

को को : सॉरी मि मि, मैंने सब खा लीं। *(हाथ से पेट को मलते हुए)* पेट एकदम भर गया है। लगता है आज तो दोपहर का खाना भी नहीं खाया जायेगा।

मि मि : बहुत बुरी बात। मेरी मां ने केले के पापड़ बनाये थे। मैंने सोचा तुम्हारे साथ बांट कर खाऊंगी। मैं चार पापड़ लायी हूं। दो तुम्हारे लिए, दो अपने लिए। सोचा था तुम्हारी चावल की रोटियां और मोटे पापड़,दोनों का बढ़िया नाश्ता रहेगा।

(मि मि *कागज का बंडल खोलती है और पापड़ निकालती है। वह उन्हें एक तश्तरी में डालकर मेज पर रखती है।)*

मि मि : गरमागरम हैं और स्वादिष्ट भी। तुम्हारी भी क्या बदकिस्मती है कि तुम्हारा पेट बिल्कुल भरा हुआ है और तुम कुछ भी नहीं खा सकते।

को को : *(पापड़ देखकर होठों पर जीभ फेरकर, स्वगत)* मैंने बड़ी गलती की जो उसे बताया कि मेरा पेट भरा हुआ है। लेकिन मैं समझता हूं कि वह चारों पापड़ तो खा नहीं सकती। शायद दो मेरे लिए छोड़ जाये।

मि मि : *(एक पापड़ उठाकर)* क्या इन्हें निगलने के लिए चाय है ?

को को : हां, हां, अलमारी पर है। मैं ले आता हूं।

(को को *चाय की केतली और दो कप उठा लाता है।* मि मि *एक कप में चाय डालती है।)*

मि मि : तुम तो चाय पीओगे नहीं। पेट भरा होगा।

को को : *(स्वगत)* मेरा पेट भूख से गुड़गुड़ कर रहा है। भगवान करे मि मि को यह गुड़गुड़ न सुनाई दे।

मि मि : *(पापड़ खाते हुए)* यह कैसी आवाज है ?

को को : आवाज ? कैसी आवाज ?

मि मि : हल्की सी गड़गड़ाने की आवाज। यह फिर हुई। सुना तुमने ?

को को : यह . . . ? हमारे घर में चूहा घुस आया है। वही यह आवाज करता है।

(दरवाजे पर दस्तक)

को को : कौन ?

तिन सू : मैं हूं तिन सू।

(को को *उठने लगता है।)*

मि मि : तुम बैठे रहो। आराम करो। तुम्हारा पेट बहुत भरा हुआ है। मैं खोलती हूं।

(मि मि *दरवाजा खोलती है।* तिन सू *गेंदे के फूलों का गुच्छा लिये आता है।)*

तिन सू : आहा। मि मि भी यहां है।

मि मि : आओ तिन सू।

तिन सू : *(मेज के पास जाकर)* हैलो को को। क्या बात है ? तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है क्या ?

को को : हैलो तिन सू।

(मि मि और तिन सू मेज के पास बैठते हैं।)

मि मि : *(तिन सू से)* वह ठीक है। बस, नाश्ते में चावल की रोटियां ज्यादा खा ली हैं।

तिन सू : *(केले के पापड़ों की तरफ देखकर)* आहा। केले के पापड़।

मि मि : मैं को को के लिए भी ले आयी थी। लेकिन चूंकि उसका पेट एकदम भरा हुआ है, तुम इन्हें खत्म करने में मेरी मदद करो।

तिन सू : नेकी और पूछ-पूछ? तुम्हारी मां गांव में सबसे बढ़िया पापड़ बनाती है।

(तिन सू एक पापड़ उठाकर खाने लगता है। मि मि उसके लिए कप में चाय डालती है।)

मि मि : *(कप देकर)* यह लो चाय के साथ खाओ।

तिन सू : *(चाय की चुस्की लेकर होंठों पर जीभ फिराकर)* बहुत बढ़िया चाय है। मेरी खुशकिस्मती जो इस वक्त यहां आ गया।

को को : *(स्वगत)* तुम्हारी खुशकिस्मती और मेरी बदकिस्मती।

(मि मि और तिन सू एक-एक पापड़ खा लेते हैं और मि मि दूसरा उठाती है।)

मि मि : यह लो तिन सू। एक और खाओ।

तिन सू : नहीं, मेरे लिए तो एक ही काफी है।

मि मि : आधा तो ले लो। दूसरा आधा मैं खा लूंगी। एक को को के लिए रहा। शाम को खा लेगा।

तिन सू : तुम जोर डालती हो तो ले लेता हूं।

को को : *(स्वगत)* चलो, एक तो मेरे लिए छोड़ रहे हैं। मैं भूख से मरा जा रहा हूं।

तिन सू : यह आवाज कैसी है ?

मि मि : यहां एक बड़ा चूहा घुस आया है। को को कहता है, वही यह आवाज करता है।

तिन सू : ऐसा लगा कि किसी का पेट भूख से गुर्रा रहा है।

(तिन सू *और* मि मि *पापड़ खत्म करते हैं।)*

मि मि : अच्छा, ये फूल कैसे हैं ?

तिन सू : ओह। मैं तो भूल ही गया था। मेरी मां ने कहा है कि को को की मां ने कल दुकान से एक फूलदान खरीदा था। उसने ये फूल उस फूलदान में रखने के लिए भेजे हैं। *(इधर-उधर देखता है। उसे अलमारी के ऊपर फूलदान दिखाई देता है)* वह रहा फूलदान, अलमारी पर।

मि मि : मुझे दो। मैं इन्हें फूलदान में रख आती हूं।

(तिन सू *उसके हाथ में फूल देता है। वह उठने लगती है।)*

को को : नहीं, नहीं, मि मि।

मि मि : तुमने तो मुझे डरा ही दिया। क्या बात है?

को को : ये फूल . . . ये फूल। मेरी मां को इस फूल से एलर्जी है। जब भी वह यह फूल देखती है उसके जिस्म में फुंसियां निकल आती हैं।

तिन सू : ओह, मुझे इस बात का पता नहीं था। ख़ैर मैं इन फूलों को वापस ले जाऊंगा।

को को : *(चैन की सांस लेकर, स्वगत)* मुझे अपनी रोटियों को बचाने के लिए कितने झूठ बोलने पड़ेंगे।

(दरवाजे पर दस्तक)

को को : कौन ?

उ बा तुन : मैं हूं। दुकान का मैनेजर उ बा तुन।

मि मि : (को को से*)* तुम मत उठो को को। मैं खोलती हूं दरवाजा। *(जोर से)* अभी आयी उ बा तुन चाचा।

(उ बा तुन *नीला फूलदान लिये आता है।)*

उ बा तुन : हैलो बच्चो (मेज की तरफ देखकर) लगता है छोटी-मोटी पार्टी चल रही है।

मि मि : आओ चाचा, आओ।

(उ बा तुन मेज के पास बैठ जाता है।)

मि मि : चाय लेंगे आप?

उ बा तुन : कोई एतराज नहीं। बहुत-बहुत शुक्रिया।

(मि मि अलमारी की तरफ जाकर कप ले आती है और चाय डालकर उ बा तुन को देती है।)

उ बा तुन : *(कप से चुस्की लेकर)* क्या मजेदार चाय है। खुशबूदार ताजगी लाने वाली।

तिन सू : चाचा, आपने नाश्ता कर लिया है ?

उ बा तुन : अभी किया नहीं। मैं सोच रहा था, किसी चाय की दुकान पर रुक कर कर लूंगा।

मि मि : चाय की दुकान पर जाने की क्या जरूरत ? आप यह पापड़ ले सकते हैं।

उ बा तुन : लेकिन . . . मैं तुममें से किसी का हिस्सा नहीं मारना चाहता।

तिन सू : कोई बात नहीं चाचा। हम सबके पेट तो भर गये हैं।

(उंगली से गले को छूता है।)

उ बा तुन : बहुत-बहुत शुक्रिया। अरे, यह आवाज कैसी है ?

तिन सू : यह चूहे की आवाज है। अक्सर यह आवाज करता है।

उ बा तुन : मुझे लगा किसी का पेट भूख से कुलबुला रहा है।

(उ बा तुन पापड़ उठाकर खाने लगता है।)

उ बा तुन : को को, तुम आज बहुत चुप हो। तबियत तो ठीक है?

को को : कुछ नहीं चाचा। मैं बिल्कुल ठीक हूं।

मि मि : उसका पेट बहुत भरा हुआ है। नाश्ता बहुत डट कर किया है।

(उ बा तुन पापड़ खत्म करके हाथ से मुंह पोंछता है।)

उ बा तुन : मैंने आज तक जितने पापड़ खाये हैं उनमें यह सबसे ज्यादा जायकेदार था। शुक्रिया बच्चो।

मि मि-तिन सू : आपका स्वागत है, चाचा।

उ बा तुन : को को, तुम्हारी मां हमारी दुकान से एक फूलदान लायी थी *(इधर-उधर देखकर)* हां, वह रहा।

को को : क्यों ? फूलदान का क्या करना है।

उ बा तुन : तुम्हारी मां ने नीला फूलदान मांगा था। उस वक्त मेरे पास वह रंग नहीं था, इसलिए वह गुलाबी ही ले आयी। उनके जाने के बाद मुझे एक नीला फूलदान मिल गया। मैं उसे बदलने आया हूं।

(उ बा तुन *अलमारी के पास जाकर गुलाबी फूलदान उठा लेता है और उसकी जगह नीला फूलदान रख देता है।)*

उ बा तुन : (को को से) मुझे यकीन है, तुम्हारी मां नीला फूलदान देखेगी तो बहुत खुश होगी। अब मैं चलूंगा। शुक्रिया और गुडबाई।

मि मि-तिन सू : गुडबाई चाचा।

को को : गुडबाई चाचा। *(स्वगत)* और गुडबाई मेरी चावल की रोटियो।

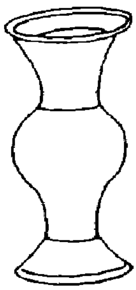
पर्दा

अंग्रेजी अनुवाद : पी. औंग खिन

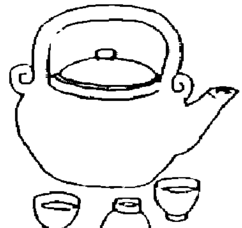
चित्र : मौंग सीन



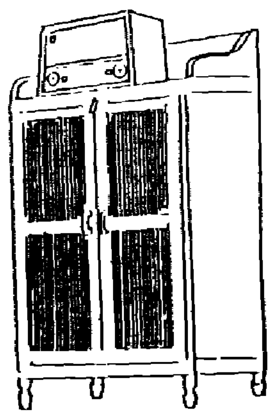
मंच-सज्जा



फूलदान



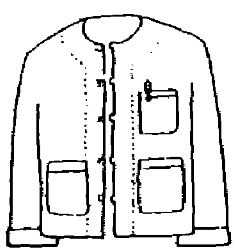
चाय की केतली और कप



अलमारी और रेडियो

कम ऊंचाई का गोल मेज





बिना कालर का बर्मी कोट

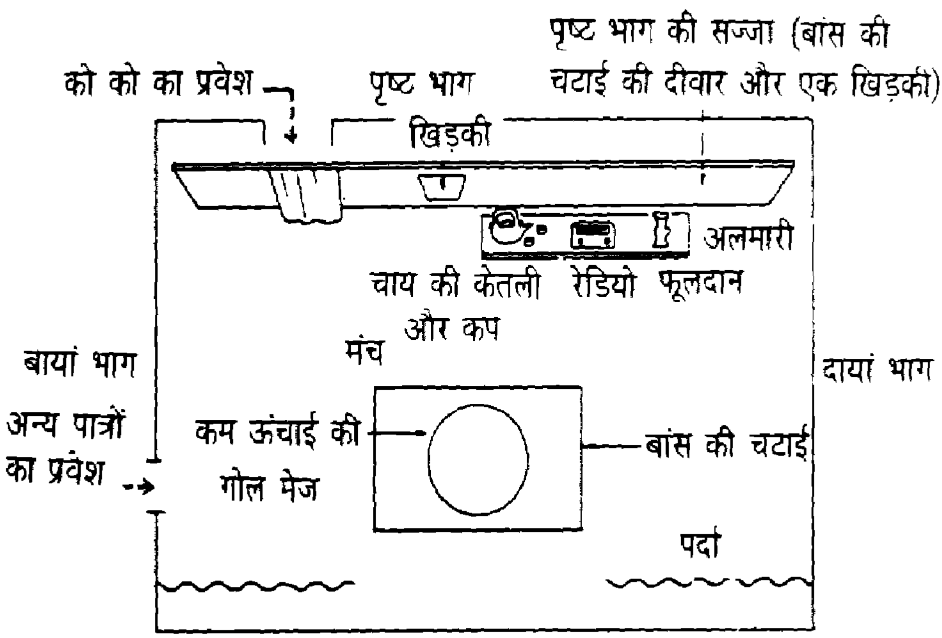
मुखौटा



वेशभूषा



मंच की रूपरेखा



नन्हा रीछ और उसके मेहमान

चीन



नन्हा रीछ और उसके मेहमान

--बाओ ली

● *पात्र-परिचय*

लोमड़ी	जिसे कोई पसंद नहीं करता
बिल्ली का बच्चा	**नन्हे रीछ** का दोस्त
पैच	**नन्हे रीछ** का दोस्त - कुत्ता
चूज़ा	**नन्हे रीछ** का दोस्त

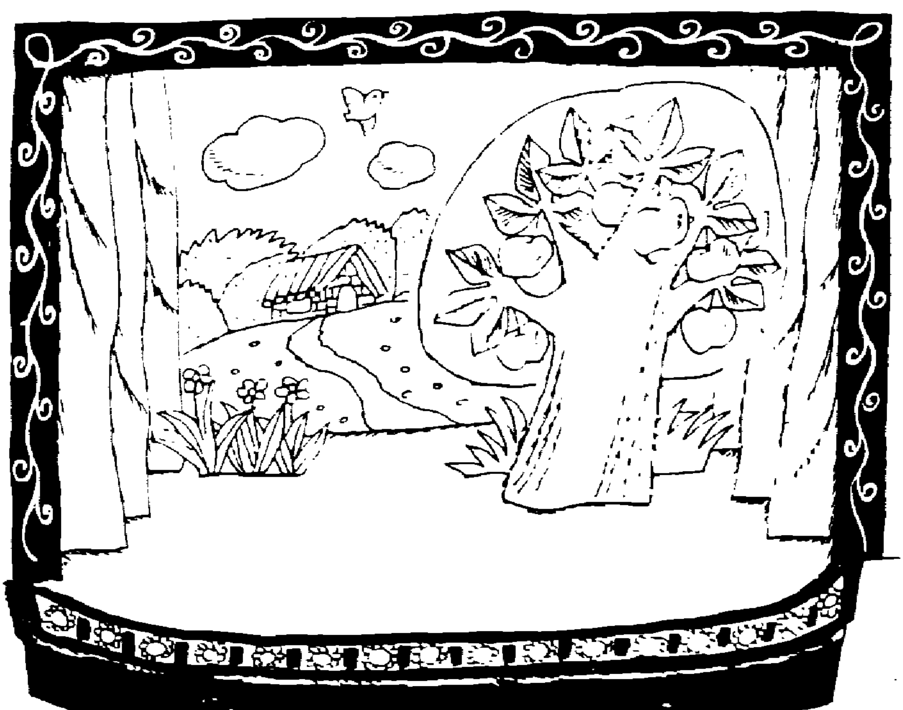
दृश्य एक

(जंगल की हरी घास पर धूप चमक रही है। छोटे-छोटे जंगली फूल खिले हुए हैं। पेड़ों पर पक्षी खुशी से गा रहे हैं। लोमड़ी लंगड़ाकर रास्ते पर चल रही है।)

लोमड़ी : *(तालियों की ओर संबोधित होकर)* मैं लोमड़ी हूं। मेरा कोई दोस्त नहीं, कोई रिश्तेदार नहीं। सभी मुझसे घृणा करते हैं। ये लोग कहते हैं मैं लालची और सुस्त हूं और मेरा कोई महत्व नहीं है। *(सूरज की तरफ देखकर)* सूरज काफी ऊपर आ गया है और मेरा पेट खाली है। *(अपने आप से)* छिः अभी मुझे कुछ खाने के लिए नहीं मिला है। मेरी टांगें भूख के कारण लड़खड़ा रही हैं। अच्छा हो अगर मैं पेड़ के नीचे कुछ देर आराम कर लूं।

(लोमड़ी आंखें बंद करके पेड़ से टिककर सो जाती है। बिल्ली का बच्चा मिठाई की टोकरी लिये दबे पांव आता है। वह गीत गा रहा है "नन्हें रीछ के घर जाना है।" जब लोमड़ी बिल्ली के बच्चे का गाना सुनती है तो वह पेड़ के पीछे से कूदकर सामने आ जाती है।)

लोमड़ी : ए म्याऊं रानी। सुना है। तुम रीछ के घर जा रही हो। मुझे भी साथ ले चलो।



(बिल्ली का बच्चा गाने लगता है "मैं तुमको साथ नहीं ले जाऊं" और आगे चल देता है। लोमड़ी को बड़ा गुस्सा आता है।)

लोमड़ी : मुझे बिल्ली के बच्चे पर कितना गुस्सा आ रहा है। यह बुरी बात है। *(वह अंगड़ाई लेकर जम्हाई लेती है)* मैं कुछ देर के लिए यहीं पड़ी रहूंगी।

(लोमड़ी फिर पेड़ से टिककर लेट जाती है। दूर गाने की आवाज सुनाई देती है। पेच नाम का कुत्ता नन्हे रीछ के लिए भेंट ले जाता हुआ गाता है "नन्हे रीछ के घर जाना है।" कुत्ते के पास आने पर लोमड़ी उछलकर पेड़ के पीछे से निकल आती है।)

लोमड़ी : ऐ पैच, तुम तो आज बहुत खूबसूरत लग रहे हो। तुम कहीं जा रहे हो ?

पैच : मैं छुट्टी मनाने नन्हे रीछ के घर जा रहा हूं।

लोमड़ी : मुझे भी ले चलोगे ?

पैच : तुम्हें . . . ?

(वह गाने लगता है "मैं तुमको साथ नहीं ले जाऊं।" पैच लोमड़ी पर घृणा की नजर डालता है और आगे बढ़ जाता है।)

लोमड़ी : पैच भी बहुत खराब है। मैं कुछ देर के लिए यहीं पड़ी रहूंगी।

(लोमड़ी फिर पेड़ के साथ लेट जाती है। दूर से चूज़ा गाता हुआ आता है "नन्हे रीछ के घर जाना है"। चेहरे पर नकली मुस्कुराहट लाकर लोमड़ी उसके सामने आती है।)

लोमड़ी : अरे, तुम्हें तो मैं पहचान ही नहीं सकी। तुम आज कितने सुंदर लग रहे हो। कहां जा रहे हो ?

चूज़ा : नन्हे रीछ ने मुझे अपने घर बुलाया है।

लोमड़ी : बहुत अच्छा। हम दोनों साथ-साथ चलें तो कितना मजा आयेगा। मैं वहां तुम्हारे लिए नाचूंगी। *(लोमड़ी मुस्कुराकर अपनी आंखें छोटी करती है और प्यार से कहती है)* क्या तुम मुझे अपने साथ ले चलोगे ?

चूज़ा : *(उसकी ओर देखकर)* तुम्हें साथ ले चलूं ?

(वह गाता है "मैं तुमको साथ नहीं ले जाऊं" और फिर बिना लोमड़ी की ओर देखे आगे बढ़ जाता है।)

लोमड़ी : *(झुंझलाकर)* चूज़ा भी खराब है। *(कुछ देर सोचकर)* मैं नन्हे रीछ के घर

खुद ही जाऊंगी। देखना, मैं रीछ के घर बनी सभी अच्छी-अच्छी चीजों को खा जाऊंगी।

(लोमड़ी *आंखें मीचती है, होंठों पर जीभ फिराती है और फिर लंगड़ाकर* नन्हे *रीछ के घर की ओर चल देती है।)*

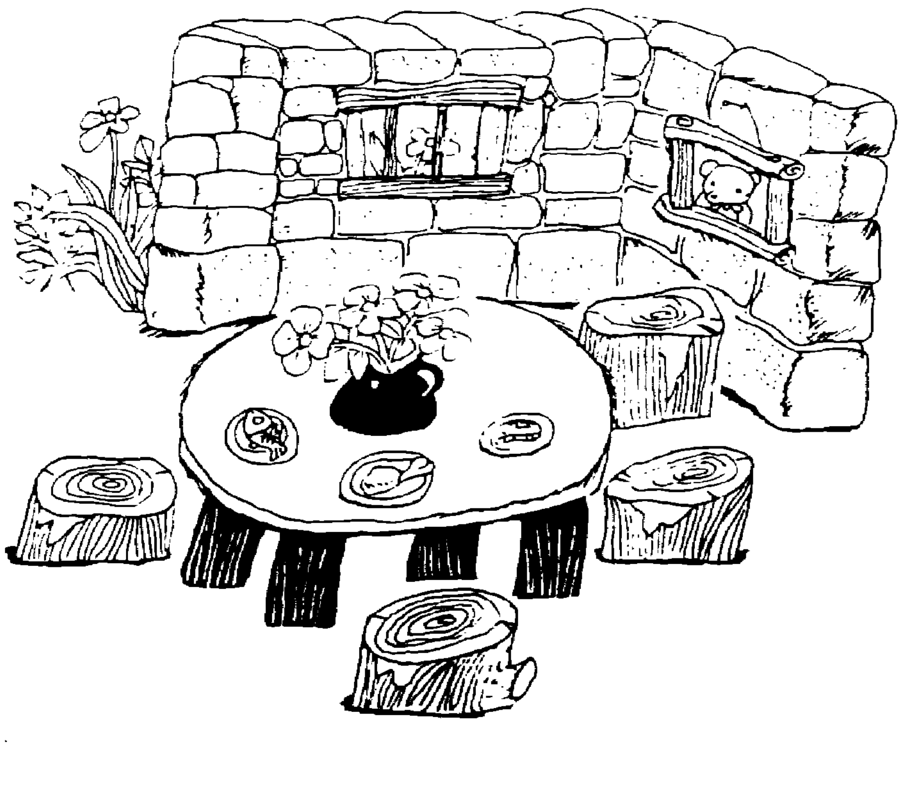
दृश्य दो

(नन्हे रीछ के पत्थरों से बने घर के बीचों-बीच एक लकड़ी की मेज है और उसके गिर्द चार स्टूल। मेज पर मछली, मांस और कीड़ों-मकोड़ों के पकवान रखे हैं जो मेहमानों के लिए तैयार किये गये हैं। मेज के बीच लाल फूलों का फूलदान रखा है। नन्हा रीछ कमरे में टहलता हुआ गा रहा है "खुशी की बात है कि दोस्त घर आये हैं।" दरवाजे पर दस्तक।)

नन्हा रीछ : कौन है ?

बिल्ली का बच्चा : मैं हूं म्याऊं।

(नन्हा रीछ *खुशी से दरवाजा खोलता है।* बिल्ली के बच्चे *के अंदर आने पर वह दरवाजा बंद कर देता है। गाता है "स्वागत है तुम्हारा।"* बिल्ली का बच्चा नन्हे *रीछ को मिठाई देता है।* नन्हा रीछ *खाने को होता है कि दरवाजे पर फिर कोई दस्तक देता है।)*



नन्हा रीछ : कौन ?

पैच : मैं हूं, पैच।

(रीछ *और* बिल्ली का बच्चा *गाते हैं " स्वागत है तुम्हारा।"* पैच नन्हे रीछ *को मिठाई देता है। जब* बिल्ली का बच्चा *और* पैच *खाना शुरू करते हैं तो दरवाजे पर फिर कोई दस्तक देता है।)*

नन्हा रीछ : कौन है भाई ?

चूज़ा : मैं हूं तुम्हारा दोस्त।

(पैच *दौड़कर दरवाज़ा खोलता है और* चूज़े *को अंदर ले लेता है।* रीछ, बिल्ली का बच्चा *और* पैच *गाते हैं "स्वागत है तुम्हारा" जब सब खुशियां मना रहे होते हैं तो कोई दरवाजे को भड़भड़ाता है।)*

नन्हा रीछ : कौन है ?

लोमड़ी : दरवाजा खोलो। मैं हूं लोमड़ी।

नन्हा रीछ : *(हैरानी से)* यह लोमड़ी है, दुष्ट लोमड़ी।

लोमड़ी : *(और जोर से दरवाजा भड़भड़ाकर)* दरवाजा खोलो और अपनी मजेदार चीजें मुझे खाने के लिए दो।

(सब बिन बुलाये मेहमान से पेश आने की तरकीब सोचते हैं। बिल्ली का बच्चा *और* चूज़ा *पूछते हैं "हमें क्या करना चाहिए"।)*

नन्हा रीछ : चिंता मत करो। मेरे पास एक तरकीब है।

चूजा : जल्दी बताओ।

पैच और बिल्ली का बच्चा : हां, हां, हमें भी बताओ।

नन्हा रीछ : मैं तुम सबको कुछ पत्थर देता हूं। जब मैं दरवाजा खोलूं तो मत उस पर पत्थर फेंकना।

सब : ठीक है। हम ऐसा ही करेंगे।

(नन्हा रीछ *जल्दी-जल्दी सबको पत्थर बांटता है।)*

नन्हा रीछ : *(धीरे से)* तैयार हो न . . . ? मैं दरवाजा खोलता हूं।

(वह दरवाजा खोलता है और लोमड़ी अंदर आती है।)

लोमड़ी : मुझे अपने सारे पकवान दे दो। मुझे गुस्सा मत दिलाओ।

सब : ठीक है। यह लो पकवान।

(सब उस पर पत्थर फेंकते हैं। लोमड़ी हाथों से ढककर सिर का बचाव करती है और दर्द से चीखती है।)

लोमड़ी : हाय, मैं मर गयी।

(टांगों के बीच पूंछ को दबाकर लोमड़ी घर से बाहर की ओर भागने लगती है, किंतु पत्थर की दीवार से जा टकराती है। फिर दरवाजा पाकर बेतहाशा बाहर भागती है। सब जोर का ठहाका लगाते हैं।)

नन्हा रीछ : अब हम मजे से खाना खा सकते हैं।

(वे गाते हैं और नाचते हैं "हमने लोमड़ी को भगा दिया।" पर्दा गिरने तक मजेदार संगीत बजता रहता है।)

पर्दा

अंग्रेजी अनुवाद : वू मिंग

चित्र : झोऊ शियान-ची

वेशभूषा



बॉबी

—भारत—



बॉबी

--विजय तेंदुलकर

● *पात्र-परिचय*

बॉबी	एक छोटी लड़की जिसे लड़का होना चाहिए था
बीरबल	कश्मीर का एक विद्वान पंडित
अकबर	भारत का एक भूतपूर्व बादशाह
शिवाजी	भारत का एक भूतपूर्व योद्धा
मिकी	डिज़नीलैंड का राजा
चांद	आसमान से उतरा मेहमान
नट लड़की	चलती-फिरती सर्कस की कलाकार
मसखरा	उसी सर्कस का कलाकार
चांद की किरणें	चांद की साथी जो उसके साथ आती हैं
घोड़ा	सर्कस से आया हुआ
परियां एक से चार	परी देश से
पापा	**बॉबी** के पिता की आवाज
मामा	**बॉबी** की मां की आवाज

(बॉबी का घर। सादा सेट। शाम का वक्त। बॉबी लड़कों जैसे कपड़े पहने हुए। वह घर में अकेली है।)

बॉबी : मैं बॉबी हूं। वैसे मैं बेबी हूं, लेकिन पापा और मामा बेटा चाहते थे, और पैदा हुई मैं। इसलिए उन्होंने मुझे बॉबी कहना शुरू कर दिया। मैं लड़कों के कपड़े पहनती हूं। मेरे लिए जो खिलौने लाये जाते हैं वे भी लड़कों के होते हैं। पापा कहते हैं मुझे अपने बाल लड़कों की तरह कटवाने चाहिए। लेकिन मामा कहती हैं, "नहीं, बेटी के बाल सुंदर हैं।" मेरा कोई भाई या बहन नहीं है। इसलिए मुझे पापा से कहना भर पड़ता है और मेरे लिए वे सब कुछ ला देते हैं। लेकिन इसका फायदा क्या ? पापा और मामा अक्सर इतनी भाग-दौड़ में रहते हैं कि ज्यादातर मैं अकेली ही रहती हूं। मैं लड़कों के कपड़े पहनती हूं, इसलिए लड़कियां मुझसे कहती हैं, "जाओ लड़कों के साथ खेलो।" और लड़के मुझे कभी अपने साथ नहीं खेलने देते। मैं स्कूल से वापस आती हूं तो घर में कोई नहीं होता। न पापा, न मामा। मैं पड़ोस से चाबी ले आती हूं। ताला खोलती हूं और अकेली खेलने लगती हूं। लेकिन मैं अकेली बोर हो जाती हूं। तब मैं बरामदे में थोड़ी देर के लिए खड़ी हो जाती हूं। फिर मैं खिड़की पर चढ़कर जोर-जोर से गाने लगती हूं। लेकिन मामा का कहीं निशान नहीं दिखता। फिर कई तरह की बातें मेरे दिमाग में आने लगती हैं। आप को उन पर यकीन नहीं होगा, लेकिन वे सच होती हैं। आप चाहें तो मैं बता सकती हूं। एक था मेमना और एक था भेड़िया। आपने ईसप नाम के एक आदमी के बारे में सुना होगा। कहते हैं उसने यह कहानी लिखी थी। भेड़िया भूखा है, और (बॉबी *जेब से कोई चीज निकाल कर खाने लगती है।)* भेड़िये ने मेमने को पकड़ा *(चीज को चबाते हुए)* और बोला, "प्यारे मेमने, मैं तुम्हें खाऊंगा।" अब मेमना जो बहुत छोटा सा था, बोला, "भाई भेड़िये, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? तुम मुझे क्यों खाना चाहते हो ?" भेड़िया बोला, "आओ, आओ। तुमने नहीं लेकिन तुम्हारे बाप ने बिगाड़ा था। मैं तुम्हें उसकी सजा दूंगा।" भेड़िया आगे बढ़ता है *(अपने दांत दिखाकर)* इस तरह। मेमना बेचारा कमजोर था, वह सचमुच डर गया। अब मैं तुम्हें बताती हूं। मैं उस समय पेड़ के पीछे से दोनों को देख रही थी। मैंने आगे बढ़कर कहा, "ए भेड़िये ! खबरदार। सावधान। बायें घूम, दायें घूम, सीधा भाग।" आप जानते हैं भेड़िये ने क्या सोचा ? उसने सोचा हमारा पी.टी. मास्टर आ गया है। वह इतना डरा, इतना डरा कि वह इस तरह घूमा, फिर इस तरह पलटा और तब दुम दबाकर भागा। वह जंगल

में भाग गया। बेचारा मेमना बहुत डर गया था। मैं जानती हूं, तुम कहोगे यह सब झूठ है। लेकिन मेरे दिमाग में इस तरह की बातें आती हैं *(वह अपनी जेब से काल्पनिक पिस्तौल निकालकर तीन चार बार फायर करती है ठा . . . ठा . . . ठा . . . ठा . . .)* । एक था बीरबल। आपने कहानियों की किताबों में पढ़ा होगा। पढ़ा है न ? वही बीरबल। *(वह मेज के पास जाकर सिर झुकाती है। ऐसा लगता है वह हाजिरी के रजिस्टर पर निशान लगा रही है।)* अब मैं अपनी क्लास की टीचर हूं। *(टीचर की शैली में)* बीरबल, कश्मीर का विद्वान पंडित।

(बीरबल *का प्रवेश। दरबारी वेशभूषा। मूंछें। वह उसके सामने तिपाई पर बैठ जाता है। वह अपने कंधे पर स्कूल का बस्ता लटकाये आता है।)*

बीरबल : हाजिर।

बॉबी : *(श्रोताओं से)* देखा आपने ? यह सब मेरे दिमाग की उपज है, लेकिन क्या आप को नहीं लगता कि यह बिल्कुल सच है ? (बीरबल *से)* सीधे बैठो। *(वह सीधा तन कर बैठ जाता है।)* क्या तुमने आज दांत साफ किये थे? दिखाओ। *(वह पास आकर अपने दांत दिखाता है।)* अब अपनी जगह जाकर बैठो।

(वह अपनी जगह जा बैठता है।)

बीरबल : *(हाथ उठाकर)* टीचर, क्या मैं एक बुद्धिमानी की कहानी क्लास को सुना सकता हूं ?

बॉबी : नहीं। क्या बादशाह अकबर आज स्कूल नहीं आया ?

बीरबल : नहीं टीचर, वह आज पापड़ सुखाने में अपनी मां की मदद कर रहा है।

बॉबी : हर रोज वही बहाना। और तुम्हारी उसके साथ मिली-भगत है। क्यों ?

बीरबल : *(चेहरे को मासूम बनाकर)* नहीं, टीचर।

(तभी अकबर हांफता हुआ आता है। वह भी अपनी बादशाह की वेशभूषा में है। उसके गले में भी स्कूल का बस्ता लटका हुआ है।)

अकबर : टीचर . . . क्या मैं अंदर आ सकता हूं ?

बॉबी : *(ऊपर देखते हुए जैसे कि वह चश्मे के भीतर से देख रही हो।)* मुर्गा बनो। *(अकबर मुर्गा बनता है)* देर . . . हर रोज देर।

(बीरबल *कागज की गोली अकबर पर फेंकता है।)*

अकबर : *(सीधा होकर)* बीरबिया ने मेरे ऊपर कागज की गोली फेंकी।

बीरबल : वह तो मुर्गा बना हुआ था। उसने कैसे देखा कि मैंने फेंकी। वह इतनी हिम्मत कैसे . . .

अकबर : बहाने मत बनाओ।

बीरबल : अरे जाओ, जाओ।

बॉबी : *(मेज थपथपाकर)* खामोश। *(दोनों चुप हो जाते हैं। बॉबी श्रोताओं से कहती है।)* मुझे यह सब बहुत अच्छा लगता है। *(अकबर से)* अबकी तूने कहना नहीं माना तो मार पड़ेगी। और बीरबल, तुम्हें तो मैं फेल करूंगी। देखना। *(श्रोताओं से)* देखा, बीरबल डर गया। अकबर की सिट्टी-पिट्टी गुम। ये समझते हैं मैं क्लास टीचर हूं। वह भी हमारे ऊपर इसी तरह चिल्लाती रहती है। (अकबर *और* बीरबल *तेजी से मंच से भाग जाते हैं।)* लेकिन जल्दी ही मैं इनसे भी बोर हो जाती हूं। कुछ देर मैं बैठी रहती हूं और फिर . . . (शिवाजी *का प्रवेश। वह जिंजी के घेरे के सारे ब्यौरे याद करता हुआ सा लगता है।)* कौन है ? *(आंखें झपककर)* यह शिवाजी है। असली शिवाजी नहीं। मेरे दिमाग का शिवाजी। मैं पूछती हूं शिवाजी, अफजल खां किस वर्ष मारा गया था ?

शिवाजी : *(नाखून को दांत से काटता है, कान खुजलाता है और दोनों टांगों को आपस में रगड़ता है।)* अफलज खां . . . . मारा गया था . . . . .

बॉबी : *(श्रोताओं से)* कितना भी करो, उसे तारीखें याद नहीं होंगी। वह समझता है, मैं इतिहास की टीचर हूं।

शिवाजी : अफजल . . . मारा गया . . . (मुश्किल से थूक निगलता है।)

बॉबी : घनचक्कर . . .*(श्रोताओं से)* अब देखो। इतिहास की टीचर की तरह। (शिवाजी*से)* घनचक्कर, तुम्हें इतनी सीधी सी बात भी याद नही? मैंने तुमसे कहा नहीं था कि तारीखें याद करो? क्यों नहीं याद कीं? अगर मैंने तुम्हें किसी को मारने के लिए कहा होता तो एक झटके में उसका काम तमाम कर आते। *(* शिवाजी *इस समय एक पांव के अंगूठे से फर्श कुरेद रहा होता है। अचानक जीभ निकालकर चिढ़ाता है।)* बेंच पर खड़े हो जाओ *(वह स्टूल पर खड़ा हो जाता है।* बॉबी *श्रोताओं से)* मुझे यह सब बहुत अच्छा लगता है। क्लास में मुझे भी इसी तरह बेंच पर खड़ा किया जाता है क्योंकि मुझे शिवाजी की तारीखें याद नहीं होतीं। . . . तारीखें . . . शिवाजी को यही सजा मिलनी चाहिए। (शिवाजी

स्टूल से छलांग लगाकर भागता है।) तब मुझे भूख लगती है। मैं डिब्बा खोलती हूं। देखती हूं मामा ने मेरे लिए क्या रखा है।

(वह स्टूल खिसकाकर ऊपर चढ़ती है और शेल्फ से डिब्बे उठाकर देखने का अभिनय करती है। मिकी माऊस *का प्रवेश)*

मिकी : बॉबी।

बॉबी : *(चौंक कर)* ओह ! तुम हो ? मेरे हाथ से तो डिब्बा छूट जाता।

मिकी : *(निकट आकर)* मैं मदद करता हूं। मैं उन्हें उतारता हूं . . . नहीं एक मिनट में सब देख देता हूं।

बॉबी : नहीं। तुम तो सब कुछ चट कर जाओगे। मैं तुम्हें अच्छी तरह जानती हूं। बदमाश कहीं के। मुझे भूख लगी है। कुछ खाने के लिए ढूंढ़ने दो।

मिकी : भूख तो मुझे भी लगी है।

बॉबी : तुम तो हमेशा भूखे रहते हो। लालची . . .

मिकी : कितनी भाग-दौड़ करता हूं . . . बता नहीं सकता। वह बिल्ली . . . मैं हमेशा भागा-भागा फिरता हूं। इसीलिए मुझे भूख लगती है। मुझे कुछ खाने को दो। बॉबी, अच्छी लड़की बनो।

बॉबी : इसमें सिर्फ एक चकली है। तुम्हें आधी दे सकती हूं, बाकी मैं खाऊंगी। ठीक ? *(वह काल्पनिक चकली के दो हिस्से करती है।)*

मिकी : *(एक ही बार में निगलकर)* बहुत मजेदार है। *(डकार लेता है . . .)*

बॉबी : इतनी जल्दी पेट भर गया ? आधी चकली और हो गया काम ?

मिकी : इसलिए कि मैं बहुत छोटा हूं। इन दिनों मेरा वजन बहुत कम हो गया है।

बॉबी : मिकी, क्या तुम्हें फ्लू हुआ था ?

मिकी : नहीं, नहीं। राशन में जो अनाज मिलता है न, वह एकदम सड़ा हुआ होता है। मैं किचन से खूब अनाज चुराता हूं, लेकिन उससे मैं मोटा ही नहीं होता।

(मिकी *उसके साथ मेज के पास आता है और उस पर बैठ जाता है।)*

बॉबी : *(श्रोताओं से)* देखा, यह सब मेरे दिमाग की उपज है। लेकिन यह सच नहीं लगता ? ठीक वैसे ही जैसे कहानियों की किताब में होता है ?

मिकी : एक दिन मैंने दो बिल्लियों को बातें करते सुना। वे भी यही कह रही थीं।

बॉबी : क्या ?

मिकी : *(बिल्लियों की नकल करके)* उई मां . . . मुंह में डालो तो बस कड़क होता है। दांत के नीचे जैसे पत्थर आ जाता है। यह कमबख्त राशन का अनाज . . . इससे चूहे इतने कमजोर हो गये हैं। याद करो पहले हमें कितने अच्छे चूहे मिलते थे। मोटे-ताजे . . . । फिर दूसरी बिल्ली चर्चा में शामिल हो जाती है। *(बिल्ली की तरह सांस लेकर)* इतने बड़े-बड़े होते थे। सारे चूहे।

बॉबी : *(हंसते हुए)* बेचारी बिल्लियां।

मिकी : मैं भी यही कहता हूं। दूर से तो मुझे भी उनके साथ हमदर्दी होती है। तुम जानती हो मैं दिन-रात मेहनत करता हूं। मैं नहीं चाहता कि अनाज के पत्थर मेरे पेट में आयें और बेचारी बिल्लियों के दांतों को तकलीफ हो। मैं मजाक नहीं कर रहा हूं। सच कह रहा हूं। तुम जानती हो, मैं नहीं चाहता कि . . .

बॉबी : ओ हो . . . हो . . . तुम बहुत दयालु हो। *(श्रोताओं से)* मैं इसी तरह इनसे बातें करती रहती हूं। लेकिन थोड़ी देर बाद मैं फिर बोर हो जाती हूं। मामा का कोई पता नहीं। और मिकी जब देखता है कि मैं बोर हो गयी हूं तो वह चला जाता है। *(मिकी मेज पर दौड़कर बाहर निकल जाता है।)* अब मैं क्या करूं ? *(वह स्टूल को खींचकर दीवार-घड़ी के नीचे ले आती है और स्टूल पर चढ़ती है।)* मैं घड़ी की सूइयां आगे कर दूंगी। इस तरह मामा जल्दी घर आ जायेगी। *(वह घड़ी का शीशा खोलती है और सूइयों को आगे सरकाने लगती है। अचानक अंधेरा हो जाता है। दोनों सूइयां बारह पर होती हैं। बारह बार टनटन की आवाज होती है। बॉबी जोर से आंखें भींच लेती है। वह घबराकर हल्के से चीखती है।)* यह क्या हुआ? इतनी जल्दी अंधेरा कैसे हो गया?

एक आवाज : इसलिए कि घड़ी के मुताबिक रात हो गयी है।

बॉबी : *(आंखें खोलकर चारों ओर देखती है)* यह कैसे हुआ ?

एक आवाज : तुमने घड़ी की सूइयों को आगे बढ़ाया न . . . इसलिए।

बॉबी : *(रुआंसी होकर)* लेकिन मैं इतनी जल्दी रात नहीं चाहती। मामा अभी नहीं आयी है। पापा भी नहीं . . .

एक आवाज : लेकिन मैं आ गया हूं।

बॉबी : तुम कौन ?

(खिड़की से चांदनी *का प्रवेश और उसके बाद मुस्कुराता हुआ* चांद *आता है।)*

बॉबी : ओह। चंदा मामा तुम . . . ?

चांद : हां, मैं।

बॉबी : तुम यहां कैसे आ गये ?

चांद : आसमान के रास्ते, बादलों पर सवार होकर। तुम्हें वह गीत याद नहीं जो कल तुमने गाया था?

("चंदा मामा आ जा" के बोल पहले धीरे-धीरे फिर ऊंचे स्वर से सुनाई देते हैं। बॉबी *उसकी धुन पर खुशी से नाचती है।* चांद *भी नाचने लगता है। संगीत बंद हो जाता है।)*

बॉबी : क्या हुआ ? तुमने संगीत क्यों बंद कर दिया ?

चांद : मैंने कहां बंद किया ? रिकार्ड ही चलते-चलते रुक गया। तुमने कल गाना गाया था। मैं आना चाहता था लेकिन आ नहीं सका . . . उस समय दिन की रोशनी थी। तुम जानती हो, जब यहां दिन होता है तो मैं दुनिया के दूसरे आधे हिस्से में ड्यूटी पर तैनात होता हूं। मैंने जल्दी आने की कोशिश की लेकिन जब यहां पहुंचा तो तुम गहरी नींद में थीं . . . अपनी मां की बगल में। अब तुमने घड़ी की सूइयां सरकाकर रात कर दी है तो मैं आ गया।

बॉबी : लेकिन मामा अभी तक नहीं आयी। हर रोज यही होता है। मैं इंतजार करते-करते थक जाती हूं।

चांद : वे यहां किसी भी वक्त पहुंच सकती हैं। मैंने उन्हें आते देखा था।

बॉबी : तुम सच कहते हो ?

चांद : *(छाती के बाल दिखाकर)* इनकी कसम खाकर कहता हूं। वह तुम्हारे लिए खाने की चीजें खरीद रही थी। मैंने तुम्हारे पापा को भी देखा।

बॉबी : पापा क्या कर रहे थे ?

चांद : वह . . . तिरपन, चौवन, पचपन, छप्पन . . .

बॉबी : छप्पन क्या ?

चांद : उनका बस की लाइन में छप्पनवां नंबर था। मैंने लाइन के सिरे से गिना। दोनों जल्दी ही घर पहुंच जायेंगे।

बॉबी : लेकिन तब तक मैं क्या करूंगी ?

चांद : मैं जो यहां हूं।

बॉबी : लेकिन तुम तो जानते हो मैं रात को डरती हूं। किसी को बताना मत। लेकिन अंधेरा होते ही भूत-प्रेत चलने लगते हैं।

चांद : *(हंसते हुए)* तुम बुद्धू हो। तुमने लड़कों जैसे कपड़े पहन रखे हैं। मुझसे मत कहो कि तुम्हें भी दूसरी लड़कियों की तरह डर लगता है। तुम्हें जो दिखाई देता है वह भूत नहीं होता। मैं अच्छी तरह जानता हूं। यह तो मेरे द्वारा फेंके गये शरारती सायों का खेल है। सच तो यह है कि ये साये बहादुर बच्चों से डरते हैं। इधर देखो। *(अपने हाथ से* चांद *मंच के पीछे के पर्दे पर साया डालता है।)*

बॉबी : *(डरकर)* मामा।

चांद : *(जोर से हंसकर)* जाओ, जाओ . . . यह सिर्फ साया है। *(वह अपना हाथ नीचे कर लेता है और साया गायब हो जाता है।)*

बॉबी : मामा कब लौटेगी ?

(बाहर से धीमी आवाज आती है "हम आ गये, हम आ गये।")

बॉबी : यह कौन है।

(चारों तरफ से चांद *की किरणें मुस्कुराती, खुशी से चहचहाती आती है। वे हाथों में हाथ डाले* बॉबी *के आसपास नाचने लगती हैं। बीच में वे रुक जाती हैं।)*

बॉबी : मैं नहीं खेलूंगी। मामा-पापा अभी घर नहीं आये हैं। मैं नहीं खेलूंगी। नहीं, नहीं, नहीं . . .

(गुस्से में वह स्टूल पर चढ़कर घड़ी की सूइयां पीछे कर देती है। चारों तरफ प्रकाश फैल जाता है। दूर कहीं संगीत बजता है "चंदा मामा आजा"। बॉबी *स्टूल से छलांग लगा कर नीचे उतरती है।)*

बॉबी : ममीकिन, डमीकिन, बडीकिन !

(वह अपने खिलौनों को गुस्से में इधर-उधर फेंकने लगती है। मसखरा, घोड़ा, गुड़िया, छाता, सब कुछ। फिर झुंझलाकर वह अपने गाल नोचती है। एक मसखरा आता है; तिपहिये साइकिल पर सवार होकर। वह साइकिल को आगे, पीछे, किनारे घुमाकर अपने करतब दिखाता है--अचानक वह उसे अपने सिर से ऊपर उठा लेता है।)

बॉबी : ए . . . क्या मैं तुम्हारे साथ आकर खेल सकती हूं ?

(वह उसके पीछे छड़ पर खड़ी हो जाती है। सर्कस के बैंड की धुन पर वे सर्कस का खेल खेलते हैं। वे इस खेल में डूबे हैं कि दो बच्चे घोड़े की वेशभूषा में प्रकट होते हैं। घोड़ा संगीत की लय में अपने पैर, पूंछ और गर्दन घुमाता है। बॉबी दौड़कर घोड़े के पास जाती है। मसखरा बाहर निकल जाता है। घोड़ा और बॉबी संगीत की लय पर एक दूसरे को पकड़ कर खेलते हैं। लड़की आती है, अपने पांव इस तरह रखते हुए गोया वह तनी हुई रस्सी के ऊपर हवा में चल रही हो। वह अपने रंगीन छाते को बड़ी कुशलता से संतुलित रखती है। बॉबी भी कोने में रखे अपने छाते को उठा लेती है। वह इसे खोलकर नट लड़की की तरह संतुलन बना कर चलने लगती है। पृष्ठभूमि में हल्के बादल नीले आसमान पर उठते दिखाई देते हैं। नट लड़की बाहर जाती है। संगीत बदलता है और नीला आसमान काला हो जाता है। बॉबी को बहुत सदमा लगता है। गुस्से में वह अपना छाता फेंक देती है और अपने हाथों से मुंह ढंक लेती है।)

बॉबी : मम्मीजी अभी नहीं आयीं . . . अभी नहीं . . . अभी नहीं। न मामा, न पापा। मत आओ। मुझे तुम्हारी कोई जरूरत नहीं। मुझे किसी की जरूरत नहीं।

(वह अपने में बड़बड़ाती बैठी रहती है। फिर लेट जाती है। दूर कहीं बच्चों के खेलने की आवाज सुनाई देती है। एक-एक करके बीरबल, अकबर, शिवाजी, मिकी, चांद की किरणें, मसखरा, और नट लड़की दबे पांव अंदर घुसते हैं और बॉबी को घेर कर खड़े हो जाते हैं। कुछ खड़े रहते हैं, कुछ बैठ जाते हैं। घोड़ा भागकर आता है। दरबार लगता है।)

अकबर : ऐसे मां-बाप को क्या सजा दी जाये। तुम बताओ बीरबल।

बीरबल : आप मेरी सुलझी हुई राय चाहते हैं। जब से मायें दफ्तरों में काम करने जाने लगी हैं, बॉबी जैसी लड़कियों के साथ ऐसा ही होने लगा है।

शिवाजी : हर-हर महादेव। आओ, हम फाइटम-फाइट करें और इन सारे दफ्तरों को चकनाचूर कर दें। मैं इसके लिए पहाड़ों से अपने आदमी भेजता हूं।

बीरबल : लेकिन अगर आप सारे दफ्तरों को तोड़-फोड़ देंगे तो पैसा कहां से आयेगा ? अगर पैसा नहीं आयेगा तो बॉबी को ये सारी चीजें कैसे मिलेंगी। ये कपड़े, ये मिठाइयां, खिलौने ? मामा - पापा बिना पैसे के बॉबी के लिए ये चीजें कैसे खरीदेंगे ? आप जानते हैं कि पैसे के बिना राशन या दूध भी नहीं खरीद सकते। बॉबी क्या खायेगी ? क्या पियेगी ?

अकबर : मैं जानना चाहता हूं कि ये लोग दफ्तरों में ही पैसा क्यों रखते हैं? नहीं, यह नहीं चलेगा। हुक्म जारी करो। कहो कि राशन के अनाज में पैसा मिला करेगा। मैं इसकी व्यवस्था करूंगा। (घोड़ा *हिनहिना कर हंसता है)* ए घोड़े। तुम क्यों हंस रहे हो ?

घोड़ा : अगर लोगों को राशन में पैसा मिलेगा, तो आप जानते हैं लोग क्या करेंगे ? वे उसकी खिचड़ी बनाकर चपड़-चपड़ करके खा जायेंगे और चाय में भी घोल कर पिया करेंगे।

मिकी : नहीं जहांपनाह। राशन में सिक्के मत मिलाइये। मुझ गरीब की तरफ देखिये। जैसे ही मैं चलने लगूंगा सिक्के मेरे पेट में खनखनाने लगेंगे और बिल्ली को पता चल जायेगा कि मैं कहां हूं। नहीं जहांपनाह। ऐसा मत कीजिये। गरीब चूहे पर तरस खाइये जहांपनाह।

नट लड़की : क्यों नहीं पैसे को आसमान में लटकाया जाता, प्याज की तरह। तब लोग रस्सी के ऊपर चलेंगे और कुछ ही क्षणों में जितनी जरूरत होगी, उतने पैसे ले लेंगे।

चांद : कुछ क्षणों में ! तुम समझते हो कि सभी मां-बाप नट हैं जो तुम्हारी तरह रस्सी के ऊपर चल सकते हैं। अगर किसी के पैर डगमगाये और वह गिर गया तो . . . ? नहीं सबको पैसा इकट्ठा करके मेरे पास जमा कर देना चाहिए। रात को जब सब सोये होंगे तो मैं हर एक पर सिक्के बरसाऊंगा। सभी को बराबर और बिना आवाज किये। मैं वायदा करता हूं।

(मसखरा जोर-जोर से सुबकने लगता है।)

अकबर : क्या बात है ?

मसखरा : *(अपने पायजामे को कमर के पास से खींचकर)* मेरा पाजामा बहुत छोटा है, देखिये न, देखिये . . .

चांद की किरणें : शी . . . रो मत। तुम्हारे लिए हम सिक्के बटोरेंगी। एक-एक करके। क्यों सखियो? हम वायदा करती हैं।

मसखरा : हां . . . हां . . . और सुबह होते ही तुम छूमंतर हो जाओगी। मैं तुम्हें खूब जानता हूं।

अकबर : खामोश। *(खामोशी छा जाती है)* बॉबी हमारी है।

सब : बिल्कुल ठीक। बॉबी हमारी है।

चांद की किरणें : हमारी प्यारी सहेली।

मसखरा : मेरी दोस्त।

चांद : जिगरी दोस्त।

शिवाजी : हर . . . हर महादेव। बॉबी मेरा छोटा सरदार है। मेरा नन्हा घुड़सवार।

चांद : (चांद की किरणों*से)* आओ लड़कियो! हम इसे उठाकर अपने देश ले चलें।

अकबर : मेरा ख्याल है कि मैं इसे दिल्ली ले जाऊं।

शिवाजी : मैं इसे अपना एक किला दे दूंगा।

घोड़ा : मैं इसे पीठ पर बिठाकर सारी दुनिया में घुमाऊंगा।

मसखरा : मैं इसे अपने ढीले पाजामे में रखूंगा। और मैं कर भी क्या सकता हूं ? मेरा और घर कहां है ? लेकिन मैं इसे हंसाता रहूंगा । यह मेरा वायदा रहा।

नट लड़की : हो . . . हो . . . मैं इसे अपने साथ ऊपर ले जाऊंगी और संगीत की लय में कदम-कदम झुलाऊंगी। *(सभी एक साथ चिल्लाने लगते हैं,"इसे हम ले जायेंगे, इसे हम ले जायेंगे।")*

बॉबी : *(जाग पड़ती है और आंखें झपकती है। सब चुप हो जाते हैं।)* मैं सोई हुई हूं। क्या तुम लोगों को दिखाई नहीं देता। ये शरारती तो मुझे एक मिनट भी आंखें झपकने नहीं देते।

(वह फिर लेट जाती है और सो जाती है।)

मसखरा : शी . . . वह सो गयी है। देखते नहीं ? एक मिनट भी सोने नहीं देते . . . *(वह छींकता है और सभी उसकी तरफ गुस्से से देखते हैं। वह इशारे से उन्हें बताता है कि यह उसका कसूर नहीं है। वह छींक को रोक नहीं पाया।)*

नट लड़की : यह सच है। बॉबी सो गयी है।

अकबर : तो फिर इसे कौन ले जायेगा। बीरबिया, तुम बताओ। तुम सब से बुद्धिमान हो।

बीरबल : *(सिर खुजलाकर)* देखिए, मुझे लड़ाई-झगड़ा पसंद नहीं है। हममें एकता रहनी चाहिए। बराबर-बराबर बंटवारा हो जाये।

मिकी और घोड़ा : तुम ठीक कहते हो।

बीरबल : ताकि हम सबके पास बॉबी का एक हिस्सा हो।

सब : क्या ?

बीरबल : *(पीछे हटकर)* अब कोई बुद्धिमानों की बात नहीं सुनता।

शिवाजी : तुम समझते हो कि बॉबी एक रियासत है जिसका बराबर बंटवारा हो जायेगा।

चांद की किरणें : या वह नायलोन की गुड़िया है ?

बीरबल : ठीक है। तो फिर तुम आपस में क्यों लड़ रहे हो ? बॉबी को ही फैसला करने दो कि वह किसके साथ जायेगी। हम उसका फैसला स्वीकार करेंगे। *(घोड़ेसे)* कौन कहता है मैं बुद्धिमान नहीं हूं।

चांद : लेकिन वह तो सो रही है।

घोड़ा : लेकिन मैं कहता हूं कि हम यहां इसीलिए हैं कि वह सोई हुई है। नहीं तो क्या तुम समझते हो कि मैं इस तरह आदमी जैसे बातें कर सकता हूं ? हमें सोती हुई बॉबी से पूछना चाहिए और बात यहीं खत्म होनी चाहिए।

मिकी : यह बिल्कुल ठीक है। *(वह बॉबी के पास जाकर नीचे झुकता है।)* बॉबी, तुम कहां रहना चाहती हो। *(वह बॉबी की आवाज की नकल करता है।)* मिकी के साथ। *(अपनी आवाज में)* यह देखो। यह कहती है मिकी के साथ रहूंगी। यानी मेरे साथ। मेरा इसमें कोई हाथ नहीं, उसी ने यह बात कही है। तुमने सुना न ? मैं बिल्ली की कसम खाकर कहता हूं।

शिवाजी : हर हर महादेव । मिकी बहुत चालाक है।

अकबर : वह दुष्ट है। चले जाओ यहां से। मैं उससे पूछता हूं कि वह कहां रहना चाहती है।

बॉबी : *(उठकर बैठ जाती है। उसकी आंखें बंद होती हैं।)*

बॉबी : सागर के नीचे
सागर के नीचे
काई की शाल
बेलों का जाल
जगमगाते मोती
परियों का देश
मैं वहीं रहूंगी, वहीं रहूंगी।

(सभी तालियां बजाकर ताल देते हैं और अंतिम पंक्ति दुहराते हैं।)

परियों का देश
मणियों की जगमग
मैं वहीं रहूंगी, वहीं रहूंगी।

(वे सब घेरा बांधकर नाचते और ताली बजाते हैं।)

जहां मैं जाऊंगी
नाच वहां होगा
गाना वहां होगा
तालियां वहां होंगी
एक मिनट में हंसूंगी
एक मिनट में रोऊंगी।
कुछ खट्टा, कुछ मीठा
जैसे आम और इमली।

(धुन बदलती है।)

मौसम तो पांच थे
छठा कहां से आ गया ?
इसे दूर करो, दूर करो
झिड़कियों का मौसम
पिटाई का मौसम
छह में से एक हटाओ
पांच बनाओ, पांच बनाओ। नहीं क्या ?

(अचानक अंधेरा हो जाता है। पानी बहने की आवाज। मंच पर हरी रोशनी भर जाती है। बॉबी उसी स्थिति में आंखें बंद करके बैठी रहती है।)

बॉबी : *(उसी तरह तेज स्वर में)* छह में से एक हटाओ। पांच बनाओ। नहीं क्या ? छह में से एक हटाओ। पांच बनाओ। नहीं क्या ?

(दो पंखों वाली परियां आती हैं और बॉबी के पास खड़ी हो जाती हैं।)

पहली परी : अरे . . . यह कौन है ?

दूसरी परी : पता नहीं। निश्चय ही उनमें से तो कोई नहीं, जिन्हें हम जानती हैं।

दूसरी परी : *(प्रवेश करके)* मुझे नयी लगती है।

(तीन परियां *शंका के साथ आगे बढ़ती हैं। दूसरी परियां पीछे-पीछे चलती हैं।)*

पहली परी : ए . . . तुम कौन हो ?

दूसरी परी : और तुमने अपनी आंखें क्यों बंद कर रखी हैं ?

तीसरी परी : तुम यहां कैसे आयी ?

चौथी परी : तुम्हारा नाम क्या है ?

पांचवीं परी : (दूसरी परियोंको *पीछे धकेलकर)* इस तरह तुम इसे डरा दोगी। (वह निकट आती है) प्यारी मुन्निया . . . . क्या नाम है तुम्हारा ?

बॉबी : *(खुली आंखों से सारे दृश्य को देखकर)* बॉबी।

पांचवीं परी : बॉबी।

(सब जोर से हंसती हैं।)

बॉबी : इसमें हंसने की क्या बात ?

पहली परी : बॉबी कैसा नाम है ? बॉबी।

दूसरी परी : मेरा नाम राधी है।

तीसरी परी : मेरा नाम बिंदी है।

चौथी परी : मेरा नाम शीरीन है और सब लोग मुझे यासमीन कहते हैं।

पांचवीं परी : मुझे कमल कहते हैं। क्यों विमन, ठीक है न ?

(पहली परी *सिर हिलाकर समर्थन करती है।)*

दूसरी परी : बॉबी . . . यह कैसा नाम है ?

पांचवीं परी : बॉबी।

चौथी परी : बॉबी।

तीसरी परी : शी . . . यह कैसा नाम है ?

बॉबी : *(उठकर)* तुम अपने को क्या समझती हो ?

(वह अभिमान के साथ उठ खड़ी होती है।)

पहली परी : *(दूसरी परियोंसे)* ऐसा मत करो। वह रो देगी।

दूसरी परी : वह बहुत अच्छी है।

तीसरी परी : जरा नकचढ़ी है। नहीं क्या ?

चौथी परी : और तुम्हारे अपने दांत कैसे हैं जो बाहर निकले रहते हैं ?

पहली परी : बंद करो यह सब। हम सब सखियों की तरह रहें। क्यों ?

सब परियां : हां . . . हां। सब दोस्तों की तरह रहें।

(वे बॉबी की तरफ बढ़ती हैं लेकिन बिना आवाज किये। उनके अभिनय से पता चलता है कि वे अब दोस्त बन गयी है। बॉबी का चेहरा मुस्कान से खिल उठता है।)

बॉबी : क्या यह सच्ची-मुच्ची के पंख है ?

पहली परी : बिल्कुल। नायलोन के पंख है ?

बॉबी : कितने अच्छे लगते हैं। तुम इनसे क्या करती हो ?

दूसरी परी : क्या करती हैं ? कुछ भी नहीं। हमारे परी देश में इन पंखों का फैशन है।

तीसरी परी : इनमें कपड़ों से मैच करते रंग मिल जाते हैं।

चौथी परी : नृत्य में इनसे बड़ी सुविधा होती है। हमें इन्हें सीना नहीं पड़ता।

बॉबी : ओह, मैं चाहती हूं मेरे पास भी पंख होते।

चौथी परी : *(मुस्कुराकर)* लेकिन तुम्हारे पंख तो तुम्हारे साथ हैं।

(वह बॉबी के पीछे जाकर उसके पंख खोलती है।)

बॉबी : *(अपने पंखों को हैरान होकर देखती है)* अरे हां . . . सच . . . ।

चौथी परी : जो भी हमारे परी देश में आता है, उसे पंख मुफ्त मिलते हैं।

बॉबी : ओह। मेरे पंख। मेरे पंख। *(इधर-उधर दौड़ लगाकर)* मामा। *(वह रुक जाती है। उसकी खुशी गायब हो जाती है और वह निराश होकर बैठ जाती है।)*

सब परियां : *(फुसफुसाकर)* क्या बात है ? उसने क्या कहा ? उसे अपनी मां की याद आ रही है क्या ?

पहली परी : (बॉबी*के पास जाकर)* बॉबी, आओ, हमारे साथ खेलो।

दूसरी परी : कम से कम हमारे देश में घूमो-फिरो।

तीसरी परी : हीरे-मोती के जंगल।

चौथी परी : *(उसी स्वर में)* मूंगे के खेत।

पांचवीं परी : मणियों की कतारें।

पहली परी : पानी में भीगी हवा।

दूसरी परी : मछलियों की नावें।

तीसरी परी : शंखों में स्कूल। छुट्टियां और पढ़ाई एक जैसी।

बॉबी : नहीं, नहीं, नहीं। मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे मामा-पापा चाहिए। मैं यहां तुम्हारे परी देश में नहीं रहना चाहती।

सब परियां : लेकिन तुम यहां से नहीं जा सकती। कोई भी हमारे देश को छोड़कर नहीं जा सकता। बॉबी, मेहरबानी करके यहीं रहो।

बॉबी : नहीं, नहीं, नहीं। मुझे यहां से जाने दो।

(परियां उसे रोकने की कोशिश करती हैं। तभी घना अंधेरा हो जाता है। पानी के बहने की आवाज आती है। फिर उजाला हो जाता है। **बॉबी** *नींद में है। दरवाजे की घंटी बजती है, बार-बार बजती है। पृष्ठभूमि की आवाज साफ सुनाई देने लगती है।)*

पापा : *(पृष्ठभूमि से)* तुम्हारा ख्याल है कि बॉबी सो गयी है।

मामा : *(पृष्ठभूमि से)* हां, बेचारी भूखी होगी। हमें फिल्म देखने नहीं जाना चाहिए था।

पापा : *(पृष्ठभूमि से)* तुम्हारे पास दूसरी चाबी है न . . . ?

मामा : *(पृष्ठभूमि से)* छाता पकड़ो। मैं देखती हूं पर्स में है या नहीं।

बॉबी : *(उठ बैठती है और नाक पर उंगली रखती है)* शी . . . मैं सोयी नहीं हूं। मैं जाग रही हूं। लेकिन आवाज मत करो। तुम जानते हो वे अपने-अपने काम में लग जायेंगे और मुझे प्यार नहीं करेंगे। मामा के पास सोना मुझे बहुत अच्छा लगता है और पापा के कंधे की सवारी करना भी। बहुत मजा आता है। अब उन्हें चाबी मिल जायेगी। वे दरवाजा खोलकर अंदर आयेंगे। मैं नींद का बहाना किये पड़ी रहूंगी। मामा मुझे जगायेंगी बहुत धीरे-धीरे और मुझे प्यार करेंगी। पापा मुझे उठाकर कहेंगे, "ए . . . बॉबी . . . मेरे बेटे।" वे मुझे ऊंचा उठा लेंगे। मुझे वे सारी चीजें दिखायेंगे जो वे मेरे लिए लाये हैं। मामा मुझे खाना खिलायेंगी। मैं खूब डटकर खाऊंगी। मामा दायीं तरफ . . . पापा बायीं तरफ . . . मैं बीच में सोऊंगी। सचमुच सोऊंगी। अभी की तरह झठमूठ नहीं।

(वह लेट जाती है और नींद का बहाना करती है। वह एक आंख खोलकर श्रोताओं की ओर देखती है।)

टा टा . . . बाई . . . बाई . . .

पर्दा

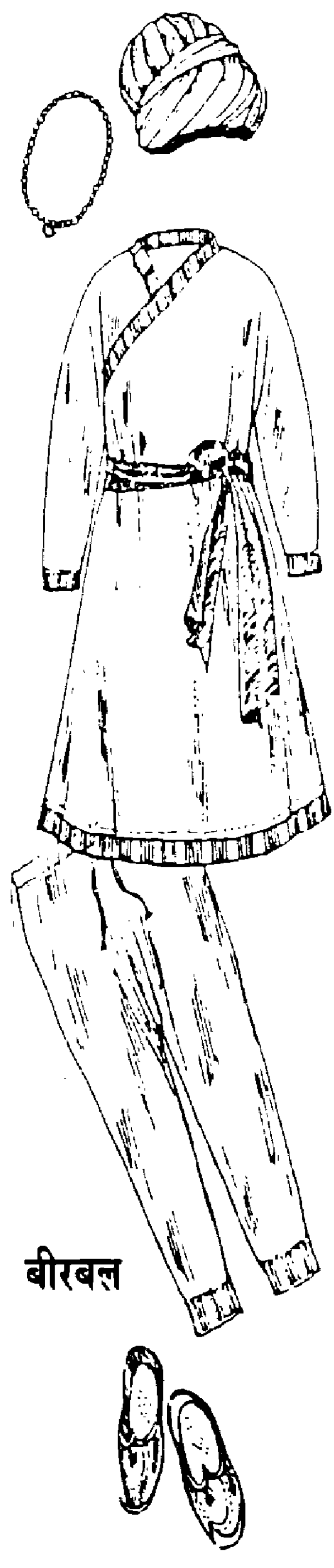
अंग्रेजी अनुवाद : कुमुद मेहता
चित्र : मृणाल मित्रा

वेशभूषा





अकबर



बीरबल

शिवाजी



पतंग

– इंडोनेशिया –



पतंग

--हर्द्जोनो वीरियोसोद्रिस्नो

● *पात्र-परिचय*

आगूस	एक शरारती लड़का
जय	एक शरारती लड़का
लाल गुलाब	एक पतंग } *(लड़कियां हों तो बेहतर है)*
सफेद लिली	एक पतंग } *(लड़कियां हों तो बेहतर है)*
दल - एक	क - बच्चों का एक दल
दल - दो	ख - बच्चों का दूसरा दल
दो लड़ाकू मुर्गे	(लड़के)
दो जुगनू	(लड़कियां)
बस	लड़कियां या लड़के भी साथ मिले-जुले

(मंच खाली है। सिर्फ कुछ खाली डिब्बे हैं जिनपर जरूरत के समय अभिनेता बैठ सकते हैं। पृष्ठभूमि से बच्चों के प्रसन्न चित स्वर सुनाई देते हैं।)

बच्चे : *(गाते हुए)* आंगिन चिलिक मुलिहो आंगिन गेडेम्रेनियो
ओम्बक ओम्बक बन्यू सेगोरो बेडिल मुनि टेंतारा टेको
आंगिन चिलिक मुलिहो आंगिन गेडेम्रेनियो
ओम्बक ओम्बक बन्यू सेगोरो बेडिल मुनि टेंतारा टेको।

(गाने के स्वर धीरे-धीरे पृष्ठभूमि में डूब जाते हैं। आगूस और जय पतंग उड़ाने का अभिनय करते हुए प्रवेश करते हैं।) .

जय : आओ आगूस। हम दौड़ लगाते हैं, जिससे हमारे पतंग हवा में उड़ जायें। आज हवा तेज नहीं है।

आगूस : चलो . . . ।

(पतंग की डोर खींचते हुए दौड़ते है। पृष्ठभूमि से वही आवाजें कभी धीमी कभी तेज अब भी सुनाई देती हैं। दोनों लड़कों के मंच से निकल जाने के बाद लाल गुलाब *और* सफेद लिली *नामक पतंग गाते हुए प्रवेश करते है।)*

लाल गुलाब - सफेद लिली : आसमान में ऊपर-ऊपर
खोज रहा हूं कोई दोस्त
मैं हूं पतंग बादलों के बीच
आसमान में ऊपर-ऊंपर
निकला हूं सपने की खोज में।

लाल गुलाब : ए हम इतने पास– पास क्यों आ रहे हैं ?

सफेद लिली : वो हमें लड़ाना चाहते हैं। जिसकी डोर पहले कटेगी वह हारेगा।

लाल गुलाब : दोनों की डोर एक साथ टूटे तब क्या होगा ?

सफेद लिली : ठीक है। लेकिन यह हमसे कैसे होगा ?

लाल गुलाब : हम हवा से मदद मांगेंगे और आपस में टकरायेंगे। इस तरह हम दोनों की डोर एक साथ टूटेगी। ठीक ?

सफेद लिली : ठीक है।

(दोनों पतंग प्रार्थना की मुद्रा में दिखाई देते हैं।)

लाल गुलाब - सफेद लिली : पश्चिमी हवा, पूर्वी हवा, उत्तरी हवा, दक्षिणी हवा
हमें उड़ाओ जोर-जोर से
डोरें टूटें एक साथ
उड़ जायें गगन में एक साथ।

(पृष्ठभूमि से 'आंगिन चिलिक मुलिहो' का गाना तेज सुनाई देता है। आगूस और जय आते हैं। वे पतंगों की तरफ बढ़ते हैं। पतंग दूर हट जाते हैं।)

लाल गुलाब - सफेद लिली : अरे रुको, रुको। और मत खींचो। मैं तुम्हारी पकड़ से छूटना चाहता हूं। मैं तुम्हारी पकड़ से छूटना चाहता हूं। किसी दिन हम जरूर मिलेंगे। विदा मेरे दोस्त। फिर मिलेंगे। मैं हूं पतंग, आसमान में ऊपर ऊपर, निकला हूं सपने की खोज में।

(पतंग मंच से बाहर हो जाते हैं। आगूस और जय को अचानक पता चलता है कि क्या हुआ है। वे हक्के-बक्के होकर देखते रहते हैं।)

आगूस - जय : मेरी डोर टूट गयी, मेरी डोर टूट गयी . . . मेरी डोर टूट गयी . . . मेरी डोर टूट गयी . . . मेरी डोर टूट गयी . . .

(दोनों लड़के पतंगों के पीछे भागते हैं और मंच से बाहर निकल जाते हैं। पतंग फिर मंच पर आते हैं और खुशी से गाते हैं।)

लाल गुलाब - सफेद लिली : गाय और बछड़े, कोयलें और गरुड़
मैं हुआ आजाद आखिर . . .
मैं हुआ आजाद आखिर . . आजाद आखिर . .

(गाते हुए गोल-चक्कर में घूमते हैं।)

लाल गुलाब : आजादी में कितना मजा है। हम वहां चलें तो ?

सफेद लिली : वहां हम क्या देखेंगे ?

लाल गुलाब : हम देखेंगे धान के खेत, पर्वत, नदियां, चिड़ियाघर, बड़े-बड़े बाजार हाथी, कतारों में खड़े बच्चे।

सफेद लिली : बाजार, स्कूल, रोते हुए बच्चे और बहुत कुछ। कब चलेंगे?

लाल गुलाब : अभी-अभी।

(गाते हुए आगे बढ़ जाते हैं।)

लाल गुलाब - सफेद लिली : मैं हूं पतंग, बादलों के बीच
आसमान में ऊपर-ऊपर
मैं हूं पतंग बादलों के बीच
आसमान में ऊपर-ऊपर

(दोनों पतंग बाहर निकल जाते हैं। मंच के आमने-सामने के छोर से बच्चों के दो दल प्रवेश करते हैं।)

दल - एक और **दो :** तुम दे दुम खेल-मैदान
तुम तुम तुम
तुम दे दुम खेल-मैदान
तुम तुम तुम . . .

दल-एक : अरे, तुम लोग कहां जा रहे हो ?

दल-दो : तिकोने खेल मैदान में।

दल-एक : क्या ? तिकोने मैदान मे ? किसलिए ?

दल-दो : हम वहां फुटबाल खेलेंगे।

दल-एक : नहीं, तुम वहां नहीं खेल सकते। वह हमारा मैदान है, क्योंकि हमने उसे पहले ढूंढ़ा था।

दल-दो : नहीं, वह तुम्हारा नहीं है। यह हम सबका है।

दल-एक : नहीं, तुम कोई और जगह ढूंढ़ो।

दल-दो : यहां दूसरा मैदान नहीं है। जानते नहीं ? चलो, हम सब मिलकर वहां खेलेंगे।

दल-एक : हम नहीं मानते। वह हमारा मैदान है।

दल-दो : हमारा भी है।

दल-एक : तुम झगड़ा करना चाहते हो ?

दल-दो : और कोई चारा नहीं है।

दल-एक : आओ, वहां खड़े मत रहो।

दल-दो : ठीक है। एक से एक या जो जहां दिखे।

दल-एक : जो जहां दिखे, बेहतर होगा।

(दोनों दल *लड़ने के लिए तैयार होते हैं। लेकिन लड़ाई शुरू करने की हिम्मत किसी की नहीं होती। वे तरह-तरह की युद्ध-मुद्राएं बनाते हैं। अचानक* पतंग *उनके निकट आते हैं और उन्हें चिढ़ाते हैं।)*

लाल गुलाब - सफेद लिली : मैं हूं पतंग, बादलों के बीच
आसमान में ऊपर - ऊपर
खोज रहा हूं कोई दोस्त
मैं हूं पतंग बादलों के बीच
आसमान में ऊपर-ऊपर
निकला हूं सपने की खोज में . . .

(दोनों दल पतंगों *को पकड़ने के लिए दौड़ पड़ते हैं और लड़ना भूल जाते हैं।)*

दल-एक और दो : मेरी डोर टूट गयी, मेरी डोर टूट गयी।

(पतंग *दूर चले जाते हैं और* दोनों दल *मिलकर उनका पीछा करते हैं। कुछ मंच के ऊपर, कुछ मंच के बाहर कई बार आते-जाते हैं।* बच्चों का एक और दल *मंच पर आता है। वे बस की नकल करते हैं।* दूसरे बच्चे *बस के आमने-सामने आते हैं।)*

बस : ए . . . सड़क पर भागने से पहले देखते नहीं कि कहां जा रहे हो ? जरा सी लापरवाही होती तो पता है क्या हो जाता ?

बच्चे : चिल्ला क्यों रही हो ? यहां हमारे पतंग खो गये और तुम हमें उपदेश दे रही हो ?

बस : कहां गये तुम्हारे पतंग ?

बच्चे : उत्तर की ओर। तुमने हमें न रोका होता तो हमने उन्हें पकड़ लिया होता।

बस : लेकिन तुम्हें पतंग उड़ाते सावधान रहना चाहिए। सिर्फ अपना ही स्वार्थ मत देखो। यह खतरनाक हो सकता है।

बच्चे : अच्छा, अच्छा। अब अपना रास्ता नापो। तुमने हमें टक्कर तो नहीं मारी न . . . ?

बस : तुम खुशकिस्मत थे। मैंने जल्दी से ब्रेक लगा दी, नहीं तो।

बच्चे : शुक्रिया, अलविदा . . . अब हम अपने पतंग लेने जा रहे हैं।

(बच्चे फिर पतंगों का पीछा करने लगते हैं और मंच से बाहर निकल जाते हैं। केवल बस मंच पर रह जाती है। वह श्रोताओं से बात करती है।)

बस : आजकल के बच्चे पतंग के पीछे भागते हैं। यह भी नहीं देखते कि सड़क पर मोटर-गाड़ियां आ रही हैं।

(बस घर्र-घर्र करके चलने लगती है और मंच से बाहर हो जाती है। पतंग आते हैं।)

लाल गुलाब - सफेद लिली : मैं हूं पतंग बादलों के बीच
आसमान में ऊपर ऊपर
खोज रहा हूं कोई दोस्त
मैं हूं पतंग बादलों के बीच
आसमान में ऊपर ऊपर
निकला हूं सपने की खोज में . . .

लाल गुलाब : हां तो लिली, क्या हमें अपना सफर जारी रखना चाहिए ?

सफेद लिली : हां, जारी रखना चाहिए। लेकिन बहुत देर हो चुकी है। आज आराम करेंगे। कल फिर शुरू करेंगे। *(अचानक कुछ देखकर)* वह कौन है ?

लाल गुलाब : *(आसपास देखकर)* ये तो जुगनू और मुर्गा हैं।

सफेद लिली : तुम ठीक कहते हो।

(जुगनू और मुर्गा मंच पर आते हैं। उचित हाव-भाव के साथ)

पतंग : नमस्कार मित्रो !

जुगनू-मुर्गा : नमस्कार।

पतंग : आप लोग कहां जा रहे हैं ?

जुगनू-मुर्गा : हम आगूस और जय को ढूंढ़ने निकले हैं। हमें पता चला है कि वे स्कूल में फेल हो गये हैं और उन्हें अगली क्लास में नहीं जाने दिया जायेगा।

जुगनू : हर रात ये लड़के मेरे रिश्तेदारों को पकड़कर बोतल में बंद कर देते हैं।

मुर्गा : हर रोज ये लड़के मुझे मेरे दोस्त से लड़ाते हैं।

पतंग : हमारे साथ भी यही सलूक किया जाता है। वे हमें आपस में लड़ाते हैं। जब जी में आता है तब।

जुगनू – मुर्गा : आओ, हम चलकर उन्हें ढूंढें। हमें उम्मीद है कि वे इस खबर को सुनकर पश्चाताप करेंगे और रोयेंगे।

पतंग : ठीक है। लेकिन हमें सुबह तक इंतजार करना होगा। ठीक है न ?

(सब मिलकर इधर-उधर चलते हैं।)

सब : यो यो . . . आओ मिलकर उनकी खोज करें।
यो यो . . . आओ मिलकर उनकी खोज करें।

(गाते-गाते मंच से निकल जाते हैं। आगूस और जय परेशान से आते हैं। उनके हाथ में स्कूल के रिपोर्ट कार्ड हैं। वे बैठ जाते हैं और बार-बार अपनी रिपोर्ट पर नजर डालते हैं। पतंग, मुर्गा और जुगनू आते हैं।)

पतंग : तुम दोनों इतने उदास क्यों हो, दोस्तो ?

आगूस और **जय :** हम इस साल फेल हो गये हैं।

पतंग : तुम उसी क्लास में रह गये ?

आगूस और **जय :** हां।

(पतंग इशारा करते हैं और सभी उन्हें ताना देने लगते हैं।)

सब : सिर फिरे
कुएं में गिरे
अच्छा हुआ, अच्छा हुआ
हुई सफाई
अच्छा हुआ, अच्छा हुआ
हुई धुलाई

(तीन बार दुहराते हैं)

पतंग : तुम फेल हुए इसमें अचरज की क्या बात ? तुम्हें पढ़ाई के लिए वक्त कहां मिलता था ? हर रोज तुम पतंग उड़ाते थे, मुर्गे लड़ाते थे और रात को जुगनू पकड़ते थे। . . . तुम हमारी लंबी पूंछ क्यों नहीं बनाते और हमारे खूबसूरत डिजाइन क्यों नहीं बनाते। हमें उड़ाओ, लेकिन लड़ाओ मत। क्या ऐसा करना बेहतर नहीं होगा ?

मुर्गा : तुम लोग हमेशा मुझे लड़ाते हो और अपनी पढ़ाई भूल जाते हो। क्यों?

जुगनू : तुम मुझे पकड़कर बोतल में बंद कर देते हो और स्कूल का काम नहीं करते।

(लड़कों *को सब फिर ताने मारते हैं।)*

सब : सिर फिरे, कुएं में गिरे, अच्छा हुआ, अच्छा हुआ, बहुत अच्छा
(तीन बार दुहराते हैं) तुम फेल हुए, होना ही था
सिर फिरे, कुएं में गिरे, अच्छा हुआ, अच्छा हुआ

(गाते - गाते वे थक जाते हैं। फिर मंच से निकल जाते हैं। आगूस *और* जय *उनकी तरफ देखकर सोच रहे हैं कि अचानक यह क्या हो गया।)*

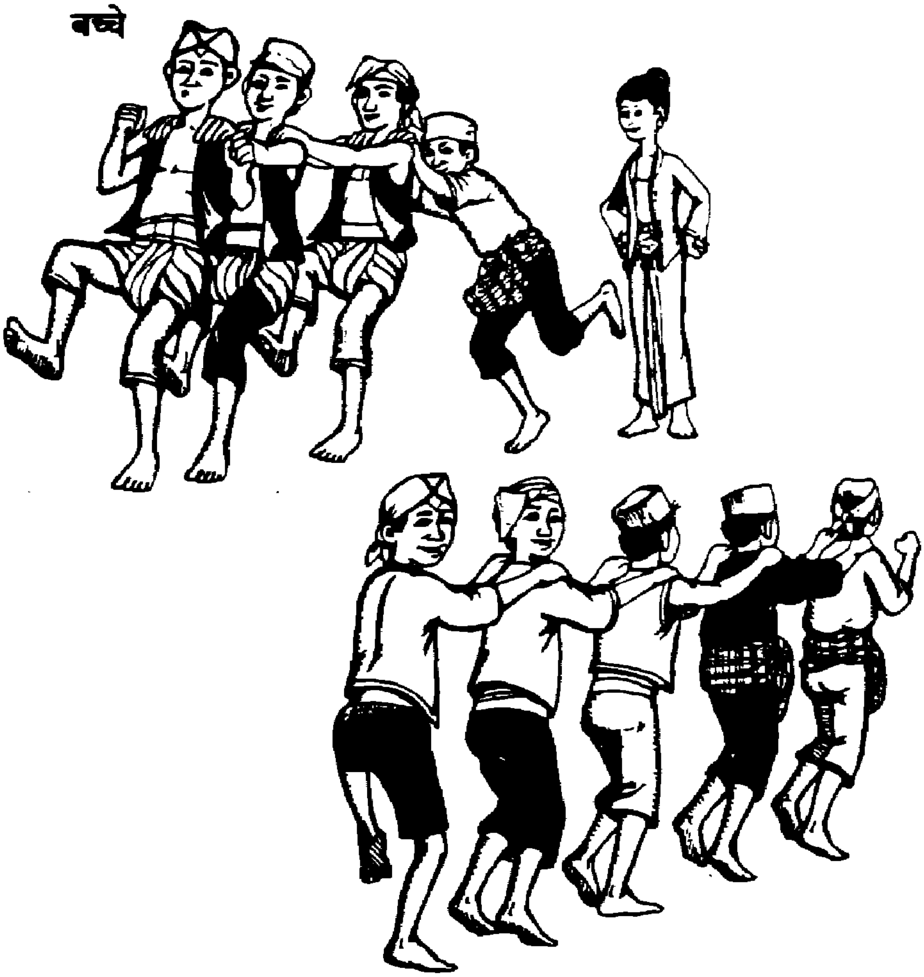
पर्दा

अंग्रेजी अनुवाद : वैंडी गाइलार्ड परसुडी
चित्र : जुलियानी हिदायाह



वेशभूषा





लाल गुलाब

सफेद लिली



पतंग



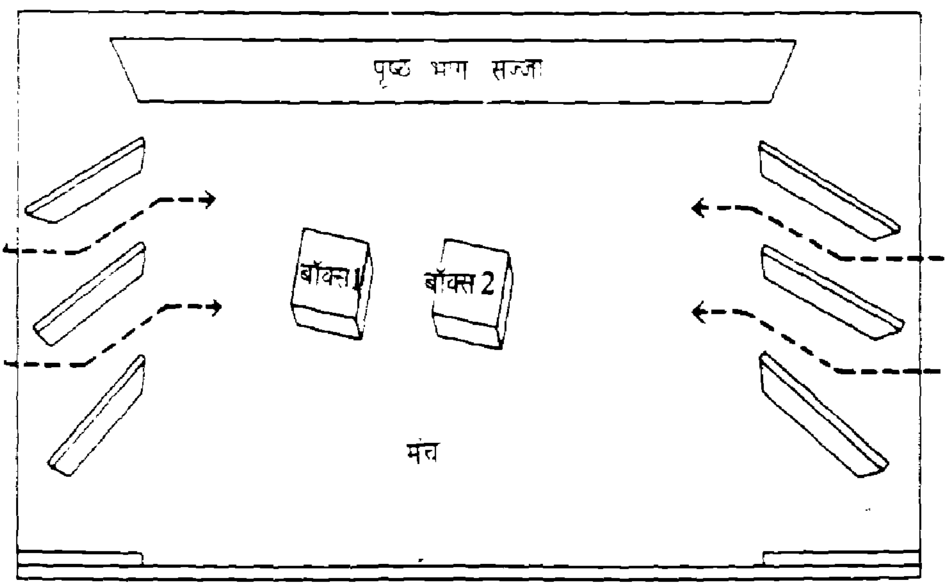
मुर्गे



जुगनू



मंच की रूपरेखा



बात का बतंगड़

ईरान



बात का बतंगड़

-- बहराज गरीबपूर

● *पात्र-परिचय*

(छह अभिनेता अदल-बदलकर सारी भूमिकाएं करते हैं)

सूत्रधार प्रत्येक दृश्य में यह भूमिका अलग-अलग अभिनेता कर सकता है।

डरालू आसानी से डर जाने वाले लोग

चिढ़ालू बात-बात पर नाक-भौं चढ़ाने वाले लोग

झगड़ालू हमेशा लड़ते-झगड़ते रहने वाले लोग

खुशालू हमेशा खुश रहने वाले खुशमिजाज लोग

(अभिनेता दल एक जैसी सादी वेशभूषा में मंच पर आता है और श्रोताओं के सामने गाता है।)

सब : एक देश में साथ-साथ थे
चार पड़ोसी गांव
डरालू गांव, चिढ़ालू गांव
झगड़ालू गांव, खुशालू गांव।
ऊंचे पर्वत के नीचे बसा हुआ था डरालू गांव।
उस पर्वत के बीच कहीं पर
थी इक गुफा अंधेरी
उस बड़ी गुफा में, बड़ी गुफा में
छिपा हुआ था एक रहस्य
बड़ा रहस्य, बड़ा रहस्य।

सूत्रधार : *(श्रोताओं के निकट जाकर)* डरालू गांव, चिढ़ालू गांव, झगड़ालू गांव और खुशालू गांव। *(हंसता है)* पता नहीं, किस भले आदमी ने इन पड़ोसी गांवों को ये नाम दिये थे। शायद उसने मजाक में ऐसा किया होगा। लेकिन इस मजाक में कुछ सचाई भी है। मिसाल के लिए पहले गांव को डरालू गांव इसलिए कहा गया कि वहां के कुछ लोगों का विश्वास था कि पर्वत की गुफा में एक भयानक राक्षस रहता है। कोई नहीं जानता कि इस विश्वास का आधार क्या था। लेकिन यह अफवाह इतनी फैली कि आसपास के इलाकों के लोग तो उस गांव के निवासियों को डरालू कहने ही लगे थे। साथ ही खुद उस गांव के लोग भी अपने को डरालू कहने लगे। उस गांव का मुखिया हरफनमौला था यानी उसे हर चीज की काम-चलाऊ जानकारी थी।

(सूत्रधार *फिर से अभिनेता दल के पास आता है। अभिनेता जल्दी-जल्दी वाद्य वस्त्र और डरालू गांव के मुखौटे पहनकर, मुखिया के आसपास जमा हो जाते हैं। मुखिया के सामने बड़ा हुक्का पड़ा है और ऐसा लगता है कि उनके और लोगों के बीच कुछ बातें पहले ही हो चुकी हैं।)*

डरालू 1 : दार्शनिक मुखिया की जय हो . . .

डरालू 2 : दार्शनिक से भी बड़ा . . . क्योंकि जो बातें हमारा मुखिया जानता है उनको तो सारे देश के दार्शनिक भी नहीं जानते।

मुखिया : तुम दूसरे दार्शनिकों से मेरा मुकाबला करते हो ? . . . अब तक मैं साठ बार, नहीं नहीं पचास बार, नहीं उससे ज्यादा बीस बार कोशिश कर चुका हूं कि खुशालू गांव के बुद्धिमान के पास, जिसे बहुत समझदार कहा जाता है, जाऊं और कुछ सवाल पूछ कर उसे चित कर दूं।

सब : *(हैरान होकर)* आप सच कह रहे हैं, मुखिया जी।

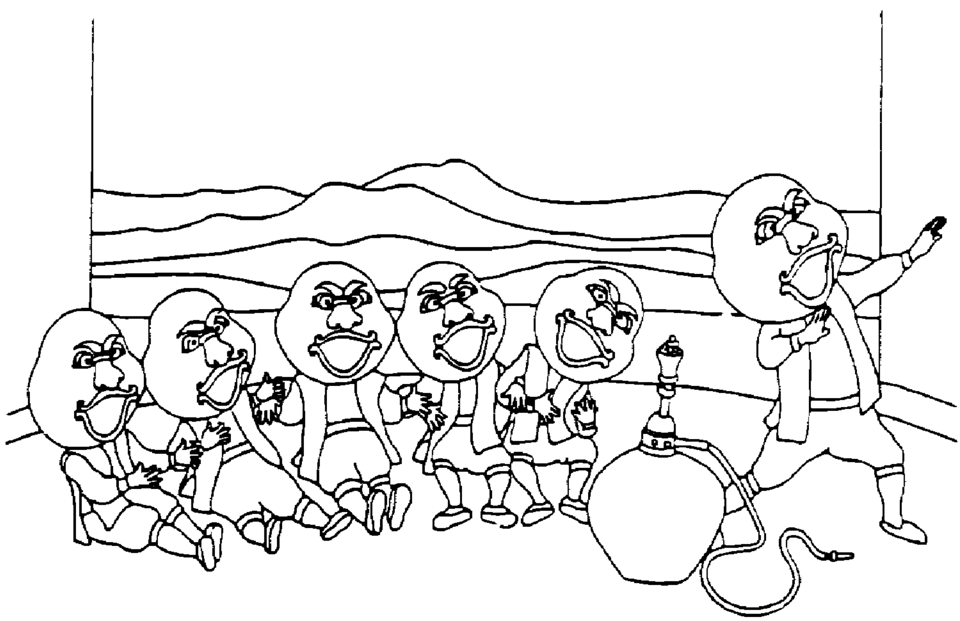
मुखिया : मैं ईमानदारी से यह बात कह रहा हूं . . . लेकिन अभी तक मैं उसके पास गया नहीं।

(सब मूर्खता पूर्वक हंसते हैं)

डरालू 3 : *(उत्सुकता से)* मुखिया जी, कोई नयी बात कहिये। नयी पहेली बुझाइये।

मुखिया : *(सोच में डूबकर और फिर विश्वास के साथ)* ऐसी कौन सी चीज है जिसमें सब चीजें समा जायें?

(सब सोचने लगते हैं।)



डरालू 4 : मुखिया जी, यह बर्तन है।

मुखिया : नहीं।

डरालू 3 : हाथ ?

डरालू 1 : यह कौवा है . . . । *(उसकी बात पर सब हंसने लगते हैं।)*

डरालू 3 : सूरज।

डरालू 4 : पानी है।

मुखिया : *(घृणा से सिर हिलाता है।)*

डरालू 5 : यह झरना है।

डरालू 4 : नदी।

डरालू 5 : समुद्र है।

मुखिया : नहीं, नहीं।

डरालू 1 : *(उत्साह से उछलकर)* तूफान . . . तूफान है।

(दूसरे लोग भी उत्साह से भरकर "तूफान, तूफान" चिल्लाते हुए उछल-कूद करने लगते हैं।)

मुखिया : *(गुस्से और घमंड से भरकर)* नहीं, नहीं, नहीं।

(सभी निराश होकर अपनी-अपनी जगह आ जाते हैं।)

सब : क्या सवाल है ? कमाल है ? हमारी तो सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। हमारे पास कोई जवाब नहीं। मुखिया जी हम हार गये। अब तो आप ही इसका जवाब बतायें।

मुखिया : *(हुक्का गुड़गुड़ाते हुए खुश होकर)* जवाब है आईना, समझे . . . ? जिसमें हर चीज का अक्स दिखाई देता है।

सब : *(हंसते हुए और आश्चर्य व्यक्त करते हुए)* वाह ! वाह ! मुखिया जी, आपका कोई मुकाबला नहीं, . . . वाह, वाह।

(सूत्रधार *अपने मुखौटे को हटाकर श्रोताओं की तरफ जाता है।)*

सूत्रधार : लेकिन मेरे दोस्तो, न तो वह दार्शनिक दार्शनिक है और न मुखिया की

पहेली का जवाब आईना है। इस पहेली का सही उत्तर है कलम यानी लेखनी। लेकिन चूंकि डरालू गांव के लोगों ने अभी कागज, कलम, दवात नहीं देखे थे, इसलिए न मुखिया और न दूसरे लोग यह जानते थे कि लेखनी डरालूगांव और उसके मुखिया सहित सबको अपने में समा सकती है।

(सूत्रधार *अभिनेताओं के पास जाकर अपना मुखौटा पहन लेता है।)*

डरालू 4 : अच्छा तो मुखिया जी, एक पहेली और हो जाये।

मुखिया : *(उन्हें पास आने का इशारा करके)* क्या तुम उस चीज का नाम बता सकते हो जो . . .

(एक दूसरा अभिनेता*अपना मुखौटा उतारकर श्रोताओं के निकट* सूत्रधार *बनकर आता है।)*

सूत्रधार : कभी-कभी जब कोई समस्या उठती है तो मुखिया जी कहावतों, चुटकलों और पहेलियों का सहारा लेने के बजाय समस्या का हल ढूंढ़ने की जी तोड़ कोशिश करते है। वजह यह कि जैसा कि हमने पहले बताया था , मुखिया जी को सब चीजों की कुछ-कुछ जानकारी होती है। एक दिन गांव की शांति एक भयानक आवाज से भंग हो गयी।

(सूत्रधार *जल्दी से अभिनेताओं में शामिल हो जाता है। तेज हवा और दूसरी अस्पष्ट आवाजें सुनाई देती हैं। सब डर जाते हैं।)*

डरालू 1 : मुखिया जी, मुखिया जी। यह क्या हो रहा है ?

मुखिया : मुझे लगता है धरती बहुत गुस्से में है।

(वे जमीन पर कान लगाकर सुनते हैं।)

डरालू 5 : *(भयभीत होकर)* धरती गुस्से में क्यों है ?

मुखिया : मैं नहीं जानता, मैं नहीं जानता।

(आवाज तेज होती है। मुखिया *को छोड़ बाकी* सब *लोग एक जगह इकट्ठे होकर बोलने लगते हैं, "* मुखिया जी*नहीं जानते,* मुखिया जी *नहीं जानते।" अचानक उनका ध्यान दूर किसी बिंदु की ओर आकर्षित हो जाता है।)*

सब : आवाज पर्वत से आ रही है ।

मुखिया : किस तरफ से ?

सब : पर्वत की तरफ से।

मुखिया : यह आवाज पर्वत से आ रही है ?

सब : जी हां, आवाज पर्वत से आ रही है।

(वे डरते-डरते आवाज की दिशा में बढ़ते हैं।)

डरालू 3-4 : आवाज गुफा से आ रही है। आवाज गुफा से आ रही है।

सब : हां, हां। आवाज गुफा से आ रही है, आवाज गुफा से आ रही है।

मुखिया : मैंने देख लिया, मैंने देख लिया *(सभी ध्यान से सुनते हैं)* आवाज गुफा से आ रही है। यह शोर भयानक राक्षस का है, भयानक एक शृंगी राक्षस का।

सब : मुखिया जी, अब हम क्या करें ? अब हम क्या करें ?

(सभी *परेशान और दुखी दिखाई देते हैं।)*

मुखिया : खामोश। ध्यान से सुनो। चूंकि गुफा में दरवाजा नहीं है, इसलिए राक्षस का शोर उसके बाहर आ रहा है . . . आप लोगों को चाहिए कि या तो गुफा के लिए एक दरवाजा बनायें या अपने-अपने घरों के दरवाजे उखाड़कर गुफा के पास ले जायें और उसका मुंह बंद कर दें।

(सब *तत्काल इधर-उधर बिखर जाते हैं और कुछ देर में वे अपने-अपने घरों के दरवाजे उठाकर लाने का अभिनय करते हैं।)*

सब : मुखिया जी, अब हम क्या करें ?

मुखिया : इन्हें गुफा के मुंह पर रख आओ। *(कुछ देर बाद)* अब वापस जाओ, वापस। अब, तुम्हें डरने की जरूरत नहीं। आवाज धीरे-धीरे बंद हो जायेगी।

(आवाज धीमी हो जाती है। मुखिया *खुशी से कहकहा लगाता है।* सभी मुखिया *की तरफ जाने लगते हैं। अचानक आवाज एकदम ऊंची हो जाती है और एक बार फिर सबमें घबराहट फैल जाती है।)*

सब : यह आवाज तो और भी भयानक है, और भी भयानक। मुखिया जी, अब हम क्या करें ? अब हम क्या करें ?

मुखिया : *(क्रोध से)* . . . "क्या करें, क्या करें" कहकर मुझे परेशान मत करो, मुझे सोचने दो, मुझे सोचने दो।

(सब मुखियाके पास जमा हो जाते हैं और फिर से कहते है,"हम क्या करें, हम क्या करें। मुखिया झुंझलाकर जोर-जोर से चिल्लाने लगता है। सब चुप हो जाते हैं। मुखिया चलने लगता है।)

मुखिया : समझ गया, समझ गया। हम राक्षस को जगायेंगे।

एक डरालू : कैसे मुखिया जी ?

मुखिया : बर्तन, थाली, बाल्टी जो हाथ लगे ले आओ।

(मुखिया को छोड़कर बाकी सभी बर्तन लेकर आते हैं।)

मुखिया : इन बर्तनों को जोर-जोर से बजाओ। राक्षस को यह दिखाने के लिए कि वह जिद्दी है तो हम और भी जिद्दी हैं। तुम्हें यह बात सिद्ध करनी है कि तुम्हारा मुखिया सारी दुनिया में बुद्धिमान है। जोर-जोर से बजाओ। कोई खेतों पर न जाये। गड़रिये, औरतें, बच्चे, सब बर्तनों को पीटें, बस पीटते रहें, पत्थरों से, डंडों से, हाथों से।

(सूत्रधार को छोड़कर सब बर्तन पीटते हुए निकल जाते हैं। सूत्रधार का मुखौटा और उसकी बाह्य-वेशभूषा भी वे लोग ले जाते हैं।)

सूत्रधार : हमने बताया था कि इस देश में चार पड़ोसी गांव थे। चिढ़ालू गांव, डरालू गांव के पड़ोस में था। इस गांव के लोग हमेशा हंसते और अपना तथा दूसरों का मजाक उड़ाते थे। कहा जाता है कि वे एक कान से दूसरे कान तक खीसें निपोरते थे। इसलिए दूसरे गांव वालों के साथ उनका झगड़ा होता था। डरालू गांव के लोगों द्वारा बर्तन पीटने की आवाज जल्दी ही चिढ़ालू गांव में पहुंच गयी, हवा के झोंके की तरह।

(सूत्रधार बाहर जाता है। चिढ़ालू गांव के लोग अपनी वेशभूषा और मुखौटों के साथ एक-एक करके या दलों में प्रवेश करते हैं तथा अलग-अलग जगह खड़े हो जाते हैं। वे किसी काम में व्यस्त होने का अभिनय करते हैं। दो चिढ़ालू काम में लगे एक व्यक्ति के सिर पर पानी उंढ़ेलने का अभिनय करते हैं। डरालू गांव से शोर सुनकर उनका हंसना और एक दूसरे को चिढ़ाना रुक जाता है।)

चिढ़ालू 1 : यह शोर कैसा है ?

चिढ़ालू 2 : लगता है, तेज हवा की आवाज है।

चिढ़ालू 3 : नहीं, नहीं। यह आवाज पानी की है।

चिढ़ालू 2 : यह आवाज न हवा की है, न पानी की।

चिढ़ालू 4 : आवाज उस तरफ से आ रही है।

चिढ़ालू 3 : नहीं, आवाज इस तरफ से आ रही है।

चिढ़ालू 5 : नहीं, आवाज उस तरफ से आ रही है।

चिढ़ालू 2 : यह आवाज न हवा की है, न पानी की। यह न इस तरफ से आ रही है, न उस तरफ से। यह उस तरफ से आ रही है . . . सुनो।

(वे सुनते हैं।)

सब : ठीक है, ठीक है। यह आवाज डरालू गांव से आ रही है।

चिढ़ालू 1 : यह सही है कि आवाज डरालू गांव से आ रही है। लेकिन ये लोग इतना शोर क्यों कर रहे हैं ?

चिढ़ालू 6 : नहीं, इससे हमें कुछ लेना-देना नहीं कि समस्या क्या है या डरालू गांव के लोग क्या कर रहे हैं। सवाल यह है कि यह शोर हमें तकलीफ पहुंचा रहा है, हमारे काम में दखल दे रहा है।

चिढ़ालू 3 : सुनो, इस शोर की वजह से हमारी औरतें और बच्चे रो रहे हैं।

(सभी *जोर-जोर से हंसने लगते हैं।)*

चिढ़ालू 1 : जरा रुको। शायद यह शोर थम जाये।

चिढ़ालू 2 : लगता है यह थमेगा नहीं, यह थमेगा नहीं। . . . सुनो। यह शोर बढ़ रहा है, और बढ़ रहा है।

चिढ़ालू 6 : हमें किसी तरह उन्हें बताना होगा कि उनका शोर हमें कष्ट पहुंचा रहा है।

सब : हां, हां, यह ठीक है।

चिढ़ालू 4 : उन्हें चिल्लाकर यह बताया जाये।

चिढ़ालू 1 : चिल्लाकर क्यों ? हम उन्हें बुलाने और सावधान करने के लिए ढोल क्यों न बजायें।

सब : हां, हां। यह ठीक है।

चिढ़ालू 1 : ठीक है। आओ हम अपने ढोल बजायें। डरालू गांव के लोग इससे परेशान होंगे। सोच क्या रहे हो ? आओ, अपने-अपने ढोल बजाओ।

(वे गले से ढोल लटकाकर उन्हें जोर-जोर से पीटने का अभिनय करते हुए मंच पर घूमते हैं।)

चिढ़ालू 1 : जोर से बजाओ, तेजी से बजाओ।

(वे ढोल पीटते हुए बाहर जाते हैं। सूत्रधार जल्दी से आता है।)

सूत्रधार : चिढ़ालू गांव के लोगों के बारे में जहां यह बात मशहूर थी कि वे एक दूसरे को चिढ़ाते और हंसते हैं वहां यह बात भी मशहूर थी कि वे अपनी समस्या का अजीब और बेतुका हल निकालते हैं। ढोल पीटना भी उनका बेतुका ऐतिहासिक फैसला था। हां, तो ढोलों के पीटे जाने की आवाजें, गुफा से आने वाली आवाजें और बर्तनों के पीटने की आवाजें तीसरे यानी झगड़ालू गांव में पहुंची। इस गांव के लोग बड़े झगड़ालू थे। उन्होंने जब ये आवाजें सुनीं तो वे पत्थर फेंकने लगे। यह नहीं होना चाहिए था, नहीं होना चाहिए था।

(सूत्रधार *बाहर जाता है। तुरंत बाद* झगड़ालू गांव के लोग *अनुशासित ढंग से उग्र काम करते प्रवेश करते हैं। वे एक पंक्ति में खड़े हो जाते हैं और ढालों-तलवारों को घुमाते हैं। जब उन्हें आदेश दिया जाता है और वे जवाब देते हैं "पुर्त . . . " तो वे सावधान की मुद्रा में खड़े हो जाते हैं।)*

कमांडर : जान गया, जान गया। ढोल पीटने का मतलब है उन्होंने युद्ध की घोषणा कर दी है। आप लोग समझे या नहीं ?

पुर्त . . .

कमांडर : आप लोगों की समझ में आया ?

सब : पुर्त . . .

कमांडर : हमें उनको ऐसा सबक सिखाना है जिसे वे कभी न भूलें। सीधे खड़े हो जाओ। तैयार। ढाल तैयार, गिनो हार्त-पुर्त . . .

सब : हार्त-पुर्त।

कमांडर : पीठ पर पत्थर। चिढ़ालू गांव की तरफ। हार्त-पुर्त।

(झगड़ालू गांव के लोग *एक बार मंच पर परेड करके पत्थर फेंकते और "हार्त-पुर्त" चिल्लाते मंच से बाहर निकल जाते हैं। एक संदेशवाहक दौड़कर आता है।)*

संदेशवाहक : अंधी लड़ाई का मतलब है बिना किसी खास मकसद की लड़ाई। तुम्हें आदेश दिया जाता है कि मारो और इस बात की तरफ ध्यान मत दो कि तुम क्या कर रहे हो। डरालू गांव, चिढ़ालू गांव और झगड़ालू गांव के बीच भी अंधी लड़ाई छिड़ गयी है।

(वह भाग कर बाहर निकल जाता है। सूत्रधार *का प्रवेश।)*

सूत्रधार : डरालू गांव के लोग यह बात बिल्कुल भूल गये थे कि यह घटना कैसे हुई। गुफा से आने वाले शोर को रोकने का तरीका खोजने की बजाय वे पत्थर इकट्ठे करके चिढ़ालू गांव वालों पर फेंकने लगे। चिढ़ालू गांव के लोग भी भूल चुके थे कि उन्होंने ढोल पीटने क्यों शुरू किये थे। उन्होंने भी पत्थर इकट्ठे किये और उन्हें डरालू गांव तथा झगड़ालू गांव वालों पर फेंकने लगे। झगड़ालू गांव के लोग भी जो हमेशा कोई बावेला खड़ा करने के लिए तैयार रहते थे, इधर-उधर चारों तरफ पत्थर फेंकने लगे। उस इलाके में पक्षी भी उड़ने से डरने लगे। हां, हम बता चुके हैं कि इस इलाके में एक चौथा गांव भी था, जिसका नाम था खुशालू गांव। वह अपनी समझदारी और ज्ञान के लिए प्रसिद्ध था। तीन गांवों के बीच जब लड़ाई चल रही थी तो एक पत्थर जो बहुत बड़ा नहीं था, खुशालू गांव के अध्यापक के सिर पर आ लगा, जब अध्यापक शाम के समय घर लौट रहे थे। पत्थर की चोट से अध्यापक सन्न रह गये।

(अध्यापक *के कराहने और दूसरे स्वर सुनाई देते हैं।* सूत्रधार *मंच के एक कोने की ओर दौड़ता है और* खुशालू 1 *बन जाता है।)*

खुशालू 1 : (अध्यापक *को उठाने वालों से)* यहां, छत के नीचे।

खुशालू 2 : साफ रूमाल ले आओ।

(खुशालू 5 *रूमाल लाने जाता है।*)

खुशालू 3 : हां . . . हां, हमें इनका सिर बांध देना चाहिए।

खुशालू 2 : ये होश में आ रहे हैं।

खुशालू 1 : क्या आप हमारी बात सुन सकते हैं ?

अध्यापक : हां . . . मैं कहां हूं ?

खुशालू : गुंबद की छत के नीचे, आप बेहोश थे। हम . . .

अध्यापक : मेरे सिर पर चोट लगी थी। शायद पत्थर की . . .

खुशालू 4 : आप ठीक कहते हैं। पत्थर ही था। मैंने पास पड़ा देखा था।

खुशालू 1 : पत्थर ?

खुशालू 5 : *(जल्दी में प्रवेश करके)* यह रहा रूमाल . . . *(वे अध्यापक के सिर पर रूमाल बांधते हैं।)* आप ठीक हैं न ? पत्थर झगड़ालू गांव की तरफ से फेंके जा रहे हैं . . .

सब : झगड़ालू गांव . . . ?

खुशालू 5 : हां, झगड़ालू गांव। हम भी पत्थर जमा कर रहे हैं। हमें उन्हें ईंट का जवाब पत्थर से देना होगा।

अध्यापक : नहीं, नहीं . . . *(हठधर्मी से)* ऐसा कभी मत करना।

खुशालू 5 : क्यों ? क्या झगड़ालू गांव के लोग हमारे ऊपर पत्थर नहीं फेंक रहे हैं ?

खुशालू 1 : आप यह कहना चाहते हैं कि इसे अपनी मर्जी के अनुसार काम नहीं करना चाहिए।

अध्यापक : नहीं, मेरा यह मतलब बिल्कुल नहीं है। *(पंजों के बल आधा उठकर)* धीरज रखो, धीरज रखो।

खुशालू 5 : धीरज ? आपका मतलब हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें और पत्थर खाते रहें ?

अध्यापक : मैं तुम्हारे जोश की प्रशंसा करता हूं। लेकिन इस तरह का जोश गलत रास्ते पर ले जा सकता है। हम भी उन पर पत्थरों, या तीर-कमानों से हमला कर सकते हैं। लेकिन यह अंधी लड़ाई होगी। मैंने पहले भी कहा था कि न्यायपूर्ण युद्ध में जरा सा भी हिचकिचाने की जरूरत नहीं। लेकिन तभी जब युद्ध न्यायपूर्ण हो। झगड़ालू गांव के लोगों ने जो पत्थर फेंके हैं, वह उनके कई और कामों की तरह ही अविवेकपूर्ण, निरुद्देश्य और मूर्खतापूर्ण है। और

मैं यह नहीं कहता कि तुम लोगों को सावधान नहीं रहना चाहिए। यह भी नहीं कहता कि तुम्हें लड़ना नहीं चाहिए हालांकि मैंने हमेशा कहा है कि अन्यायपूर्ण युद्ध में उलझने से इन्सानियत की मर्यादा कम होती है। हमें अक्ल से और मानवीयता से काम लेना चाहिए। पहले तो हमें यह जानना चाहिए कि हम किस मकसद से लड़ रहे हैं ? क्या यह न्यायपूर्ण है या अन्यायपूर्ण ? उचित है या अनुचित ? . . . तभी हमें उस मकसद के लिए उचित निर्णय लेना चाहिए। क्या आप इससे सहमत हैं ?

कई खुशालू : हम सहमत हैं।

खुशालू 5 : लेकिन . . .

अध्यापक : लेकिन क्या ?

खुशालू 5 : लेकिन बेवक्त धीरज से क्या फायदा ?

अध्यापक : *(गहराई में जाते हुए और जोर देकर)* हम व्यर्थ का काम करने से बचेंगे . . . । हम उनकी तरह न सोचें, उनकी तरह काम न करें . . . । हम अपने लोगों का एक दल झगड़ालू गांव भेजेंगे कि उनका मकसद क्या है। इस बीच हम अपने लोगों से कहेंगे कि वे उन लोगों को मुंह तोड़ जवाब देने के लिए तैयार रहें और जब तक हमारा दल असली बात का पता लगाकर वापस न आ जाये, तब तक वे तैयार और सतर्क रहें। क्या कुछ स्वयंसेवकों का दल वहां जाने और सचाई का पता लगाने के लिए तैयार है ?

सब : हम सभी तैयार हैं।

अध्यापक : नहीं, तुममें से कुछ लोग यहीं रहेंगे।

(दो खुशालू *सिर झुकाकर बाहर चले जाते हैं।* खुशालू 5 *सहित तीन और* खुशालू अध्यापक *के सामने घुटनों के बल बैठ जाते हैं।)*

तीन खुशालू : हमें बताइये कि हम कैसे सचाई का पता लगा सकते हैं ?

अध्यापक : क्या आप लोगों ने बिना जड़ों के पेड़ देखा है ?

तीन खुशालू : नहीं। दांत की भी जड़ें होती है, तो पेड़ बिना जड़ों के कैसे हो सकता है ?

अध्यापक : इसी तरह हर घटना का भी कोई न कोई कारण होता है। दांतों का सड़ना और पेड़ के पत्तों का पीला पड़ना जड़ों के कारण होता है। इसलिए हर घटना का कोई कारण होना चाहिए।

तीन खुशालू : हम समस्या की जड़ तक कैसे पहुंचे ? हम उन कारणों का पता कैसे लगायेंगे ?

अध्यापक : धीरज से और विचार से, घटनाओं के सारे पहलुओं का अध्ययन करके तुम्हें इन घटनाओं के बीच जो संबंध है उसे जानना पड़ेगा। तभी तुम इस उलझी हुई पहेली की तह तक पहुंच सकोगे। झगड़ालू गांव वालों ने पत्थर क्यों फेंके ? जाओ, मेरे अच्छे साथियो, पता लगाओ। कोशिश करना कि खाली हाथ वापस न आओ।

(वे खड़े होते हैं और सिर झुकाकर अध्यापक *से विदा लेते हैं।* अध्यापक *पीछे हट जाते हैं।* तीन खुशालू *मंच के कई चक्कर लगाते हैं। कुछ आवाजें सुनाई देती हैं। वे उत्सुकता से इधर-उधर देखते हैं।* झगड़ालू गांव के तीन लोग *पत्थर फेंकते हुए और 'हार्त-पुर्त' चिल्लाते हुए आते हैं।)*

तीन खुशालू : *(श्रोताओं की ओर)* झगड़ालू गांव के कई लोग जख्मी हैं, खून से लथपथ हैं और क्रोध से पागल हैं। हम उनसे पूछेंगे। (झगड़ालू गांव के लोगों *की तरफ देख)* पड़ोसी भाइयो, यह सब क्या है ? आप लोग इतने गुस्से में क्यों हैं ? हुआ क्या है ?

कमांडर : एक आवाज सुनाई दी थी। चिढ़ालू गांव वालों द्वारा ढोल पीटने की आवाज जिसका मतलब होता है युद्ध की घोषणा। हमने उनको मुंह तोड़ जवाब देने के लिए और उनका ढोल पीटना बंद करने के लिए उन पर पत्थर फेंकने शुरू किये। इस पर उन्होंने भी पत्थर फेंकने शुरू किये। *(पत्थर फेंकते हैं।)*

तीन खुशालू : क्या ढोल बजाकर वे सचमुच युद्ध की घोषणा करना चाहते थे?

कमांडर : हमें नहीं मालूम, हमें नहीं मालूम। *(अपने लोगों से)* आओ, हम अपने काम में लगें, ताकि समस्या सुलझ सके।

एक खुशालू : पड़ोसी भाइयो, क्या आपको पता है कि आपके द्वारा फेंका गया एक पत्थर खुशालू गांव के एक आदमी को लगा है ?

झगड़ालू : *(अपने मुखौटे हटाकर हैरानी प्रकट करते हैं)* क्या ? एक खुशालू को लगा ?

तीन खुशालू : जी हां, जी हां, एक खुशालू को।

(झगड़ालू *"खुशालू खुशालू" बोलते हुए बाहर निकल जाते हैं।)*

तीन खुशालू : यह प्रसंग हमें लिख लेना चाहिए। झगड़ालू गांव के लोग बिना कारण जाने हम लोगों से लड़ रहे हैं। बिना कारण समझे।

(वे फिर दौड़ने लगते हैं। आवाजें और तेज हो जाती हैं। वे रुक कर चारों ओर देखते हैं। वे चिढ़ालू गांव के लोगों *से जा टकराते हैं जो ढोल बजाते और पत्थर फेंकते हुए आते हैं।)*

तीन खुशालू : *(श्रोताओं से)* हम अब चिढ़ालू गांव में आ गये हैं। हम अपने कुछ दूर के पड़ोसियों से पूछेंगे। *(चिढ़ालू लोगों की ओर देखकर)* हमारे दूर के पड़ोसी भाइयो, आपने ढोल पीटना क्यों शुरू किया ? आपने युद्ध क्यों छेड़ा ? इसका कारण क्या था ?

एक चिढ़ालू : जब डरालू गांव से आवाजें आने लगी तो हमने भी चिल्लाना चाहा। लेकिन हमें याद आया कि हम लोगों में किसी घटना की सूचना देने के लिए ढोल बजाने की रस्म है। हम डरालू गांव के लोगों को इतना भर बताना चाहते थे कि वे शोर करना बंद कर दें।

तीन खुशालू : क्या सब लोगों को इस रस्म की जानकारी है? क्या आप जानते हैं कि झगड़ालू गांव के लोगों ने ढोल बजाने का यह अर्थ लगाया कि आप लोगों ने युद्ध की घोषणा कर दी है ?

चिढ़ालू : युद्ध की घोषणा ?

एक चिढ़ालू : युद्ध की घोषणा ? हमने डरालू गांव के लोगों को यह बताना चाहा था उनका शोर हमें परेशान कर रहा है। . . . युद्ध की घोषणा . . . ?

(चिढ़ालू गांव के लोग *अपने मुखौटे उतारकर बोलते हुए मंच से जाते हैं," युद्ध की घोषणा?")*

तीन खुशालू : अब हमारी समझ में आया। आओ, हम इसे भी लिख लें। हम लिखें कि साधारण दिमाग के लोग पहले काम करते हैं, फिर सोचते हैं। पहले कदम उठाते हैं फिर कदम उठाने का निर्णय लेते हैं। पहले वे दुश्मन बन जाते हैं और बाद में अपनी बात को उचित ठहराने की कोशिश करते हैं।

एक खुशालू : दोस्तो, मैं समझता हूं हमने युद्ध के रहस्य का पता लगा लिया है। वे बिना सोचे-समझे युद्ध कर रहे हैं। वे व्यर्थ लड़ रहे हैं।

दो अन्य खुशालू : इतना काफी नहीं है। हमें डरालू गांव के लोगों से भी पता करना चाहिए। हमें उन आवाजों का पता करना चाहिए जिनके बारे में चिढ़ालू गांव के लोगों को शिकायत है।

(पहला खुशालू सहमति प्रकट करता है। तीनों खुशालू श्रोताओं की ओर देखकर कहते हैं।)

तीन खुशालू : हम यात्रा पर निकले हैं। एक जगह से दूसरी जगह की यात्रा करते हुए विचार करके हम बहुत सी चीजें सीख सकते हैं। हमारे विद्वान अध्यापक ने कई बार कहा है : "भ्रमण करने से दिमाग का दायरा बढ़ता है।" वे कहते हैं : "अगर आप सुबह उठने से लेकर दिन के काम-काज तक, सोने के समय से उठने के समय तक और जन्म से लेकर मृत्यु तक के समय को एक यात्रा मानें और अपने को यात्री मानें तो आप बहुत अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। चाहे यात्रा छोटी हो या बड़ी बीच में पड़ाव हो या न हो, इस अनुभव से आप खुद और दूसरे भी लाभ उठा सकते हैं।"

एक खुशालू : कैसा अजीब शोर है। *(सभी उस शोर को समझने की कोशिश करते हैं। अचानक तभी* डरालू गांव के लोग*प्रवेश करते हैं।)* हमारे दूर के पड़ोसी भाइयो, तुम दुखी हो, परेशान हो, खून से लथपथ हो। तुम लोग यह क्या कर रहे हो ?

मुखिया : *(इशारों से पत्थर फेंकते रहने का आदेश देकर)* हम लड़ रहे हैं। हम एक भयानक संकट में घिरे हैं।

तीन खुशालू : यह आवाज कहां से आ रही है ?

एक डरालू : पर्वत से।

तीन खुशालू : पर्वत से ?

एक डरालू : गुफा से, राक्षस से, हमारे भयानक राक्षस से।

मुखिया : हमारा एक राक्षस है . . . जो सदियों से गुफा में सो रहा है। हमारे पुरखों ने भी उसे कभी जागा हुआ नहीं देखा। लेकिन उसने इतनी जोर से खर्राटे . . . पहले कभी नहीं मारे थे. . . ।

एक डरालू : हमारा राक्षस खर्राटे भर रहा था और आसमान में पत्थर उछाल रहा था। हमारे मुखिया इस बड़े देश के तमाम दार्शनिकों से ज्यादा बुद्धिमान हैं। उन्होंने हम से कहा कि गुफा के मुंह को दरवाजे से बंद कर दें।

तीन खुशालू : क्या तुम लोगों ने वैसा किया ?

एक डरालू : हां, हमने वैसा ही किया।

तीन खुशालू : फिर क्या हुआ ?

एक डरालू : शोर और बढ़ गया। और तेज हो गया। तब हमारे मुखिया ने कहा कि तांबे के बर्तनों को पीटकर राक्षस को जगाओ।

तीन खुशालू : *(एक दूसरे से)* अब हमें पता चला कि मुखिया ने बिना सोचे-समझे आदेश दिया और लोगों ने भी बिना सोचे-समझे काम किया, बिना यह सोचे कि उनके काम का परिणाम क्या होगा ? हमें गुफा में जाना चाहिए।

(वे गुफा की तरफ जाने लगते हैं। डरालू गांव के लोग *उन्हें ऐसा करने से मना करते हैं।)*

डरालू : वहां मत जाओ, वहां मत जाओ। तुम्हारी जान को खतरा है।

तीन खुशालू : हमने आपस में लड़ते तीन गांवों से गुजर कर भी जान का खतरा उठाया है। यह भी एक लड़ाई है। सचाई का पता लगाने और बीमारी का इलाज ढूंढ़ने की लड़ाई।

(तीन खुशालू *बाहर जाते हैं।* डरालू *पत्थर फेंकने में लगे रहते हैं।)*

मुखिया : मारो, मारो . . . ।

(कुछ देर बाद शोर बंद हो जाता है।)

एक डरालू : सुनो, आवाजें बंद हो गयीं। *(सब हैरान होते हैं।)*

(तीन खुशालू *आते हैं।)*

एक खुशालू : क्या आप लोगों में से कोई आदमी उस गुफा में गया था ?

एक डरालू : गुफा में ? नहीं।

एक खुशालू : क्या आप जानते हैं कि गुफा में तेज हवा चल रही थी ?

एक डरालू : हवा ? . . . नहीं।

एक खुशालू : क्या तुम जानते हो एक छोटा सा पत्थर, यह पत्थर *(पत्थर उठाकर पहले* डरालू गांव के लोगों *तथा फिर श्रोताओं को दिखा कर)* हवा के निकलने के

रास्ते को रोक रहा था और इस पत्थर से टकरा कर हवा निकलने से जो आवाज आ रही थी वही गुफा में गूंज रही थी।

डरालू : *(पत्थर को बारी-बारी से देखकर)* हवा ? . . . बस पत्थर ? इतना ही ? इतना आसान हल ? फिर राक्षस का क्या हुआ ?

तीन खुशालू : राक्षस . . . ?

(खुशालू हैरान होकर श्रोताओं की ओर देखते हैं। उसी समय डरालू गांव के लोग अपने मुखौटे उतार कर मंच के बीच में लाइन में रखते हैं। सभी अभिनेता श्रोताओं की तरफ मुंह करके खड़े हो जाते हैं जैसाकि नाटक के प्रारंभ में किया था।)

सब : राक्षस . . . ? (सभी *कहकहा लगाकर हंसते हैं।)*

सूत्रधार : *(अभिनेताओं से अलग होकर और श्रोताओं के निकट आकर)* खुशालू गांव के लोगों ने तीन गांवों के बीच झगड़े के कारण को खोज लिया। यह खबर जल्दी ही पूरे देश में फैल गयी। लेकिन खुशालू गांव के लोगों ने जो सबसे अच्छा काम किया, वह कुछ और था। उन्होंने देश के सब लोगों को यह समझाया कि बीमारी का इलाज समझदारी से, तर्कपूर्ण विचार से निकाला जा सकता है। जैसा कि खुशालू गांव के अध्यापक का कहना है : "वक्त पर बोलो, वक्त पर चुप रहो, हर काम सही वक्त पर करो।" जी हां, यह बात हमें खुशालू गांव के लोगों से सीखनी चाहिए।

(वह अपनी जगह लौट आता है।)

सब : *(गाते हैं)* हम सीखेंगे खुशालू सयानों से
हम सीखेंगे बुद्धिमानों से
हां, हां, हम सीखेंगे
हां, हां, हम सीखेंगे
हां, हां, हम सीखेंगे
वरना हम बनायेंगे
तिल का पहाड़
बात का बतंगड़
वरना हम आसान हल के बजाय
उठायेंगे जालिम तलवार

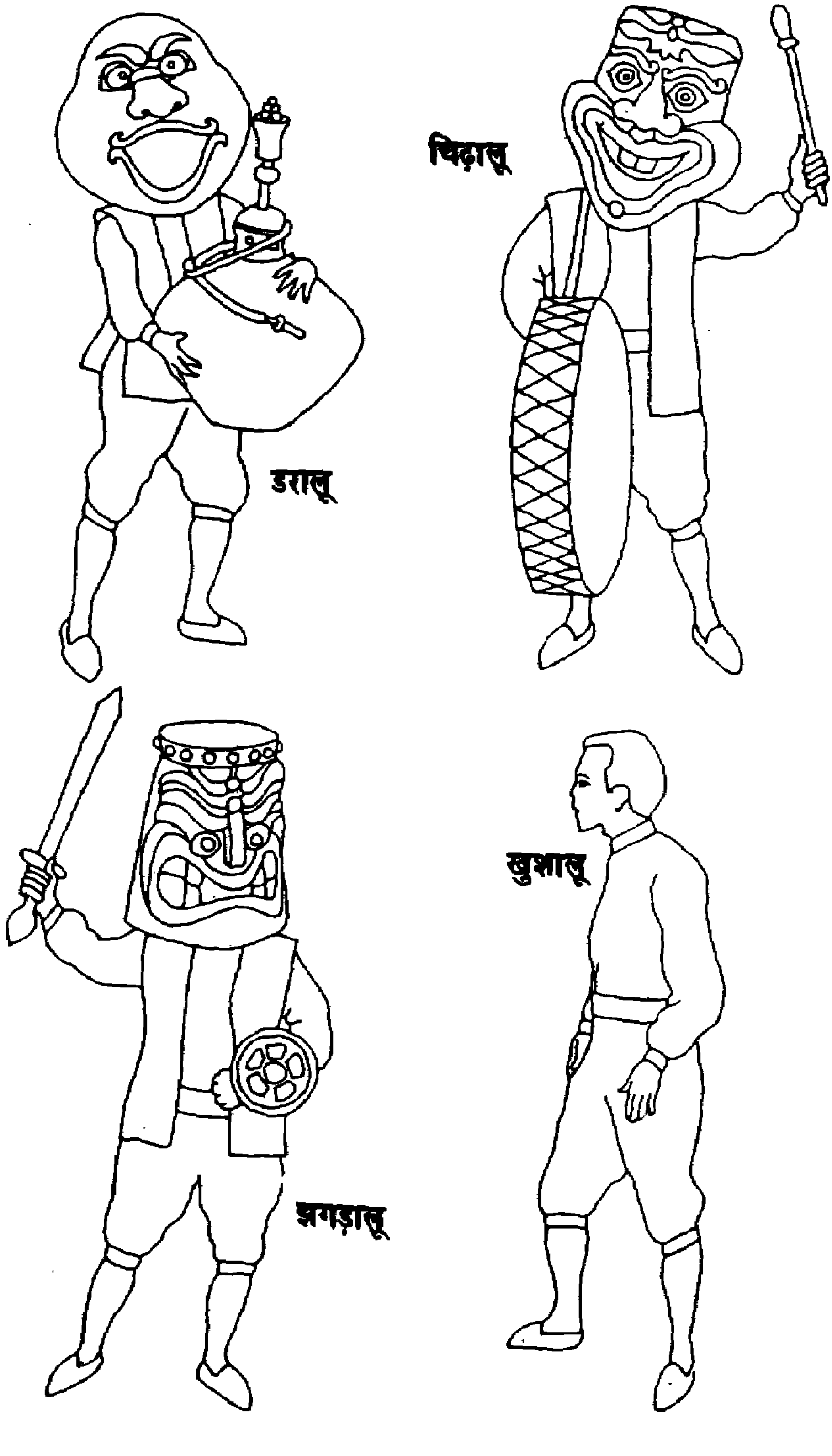
हां, हां हम सीखेंगे सयानों से
हर काम ठीक वक्त पर ही ठीक होता है। . . .

पर्दा

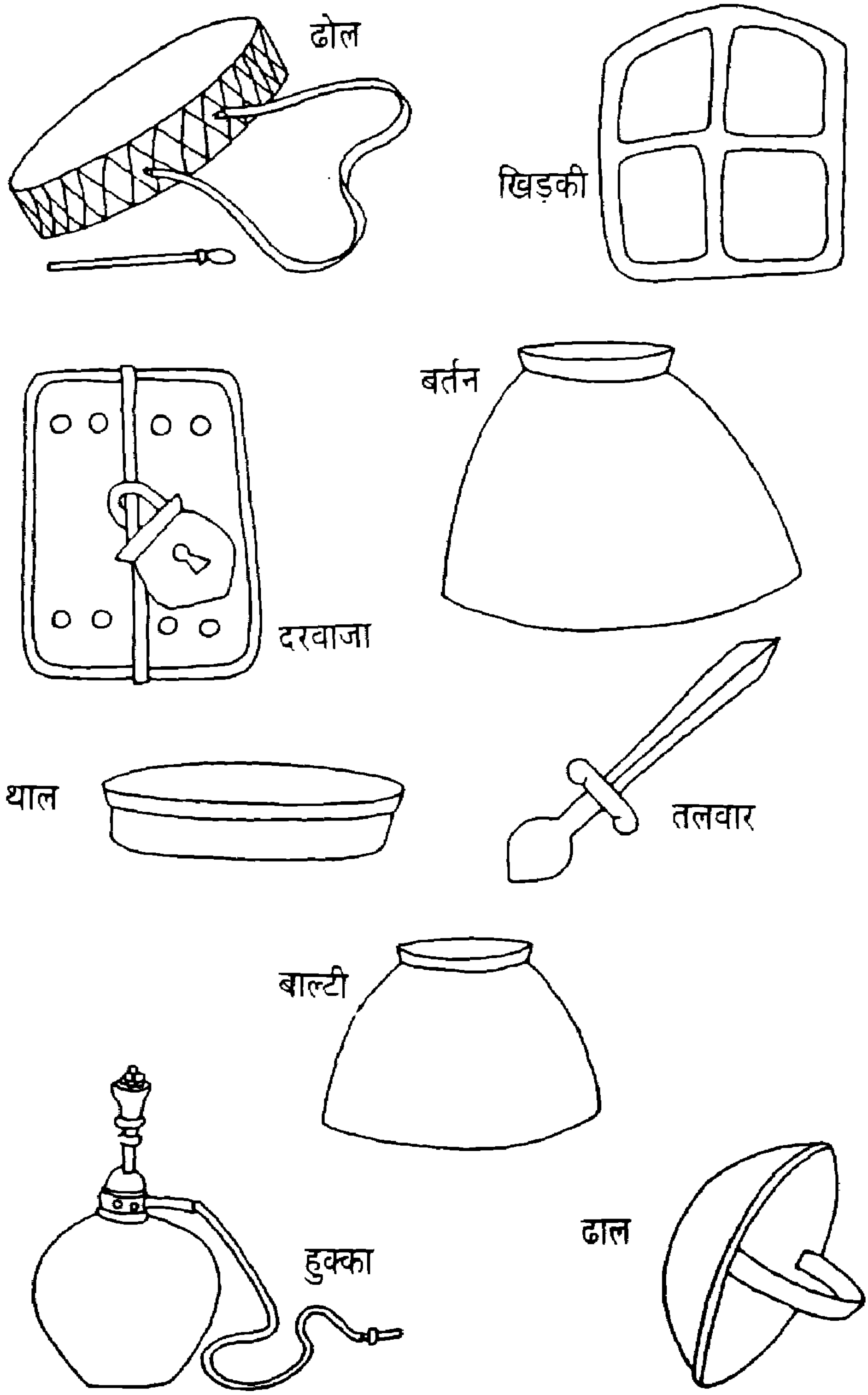
अंग्रेजी अनुवाद : मोहम्मद नघवी

चित्र : बहज़ाद गरीबपूर

वेशभूषा

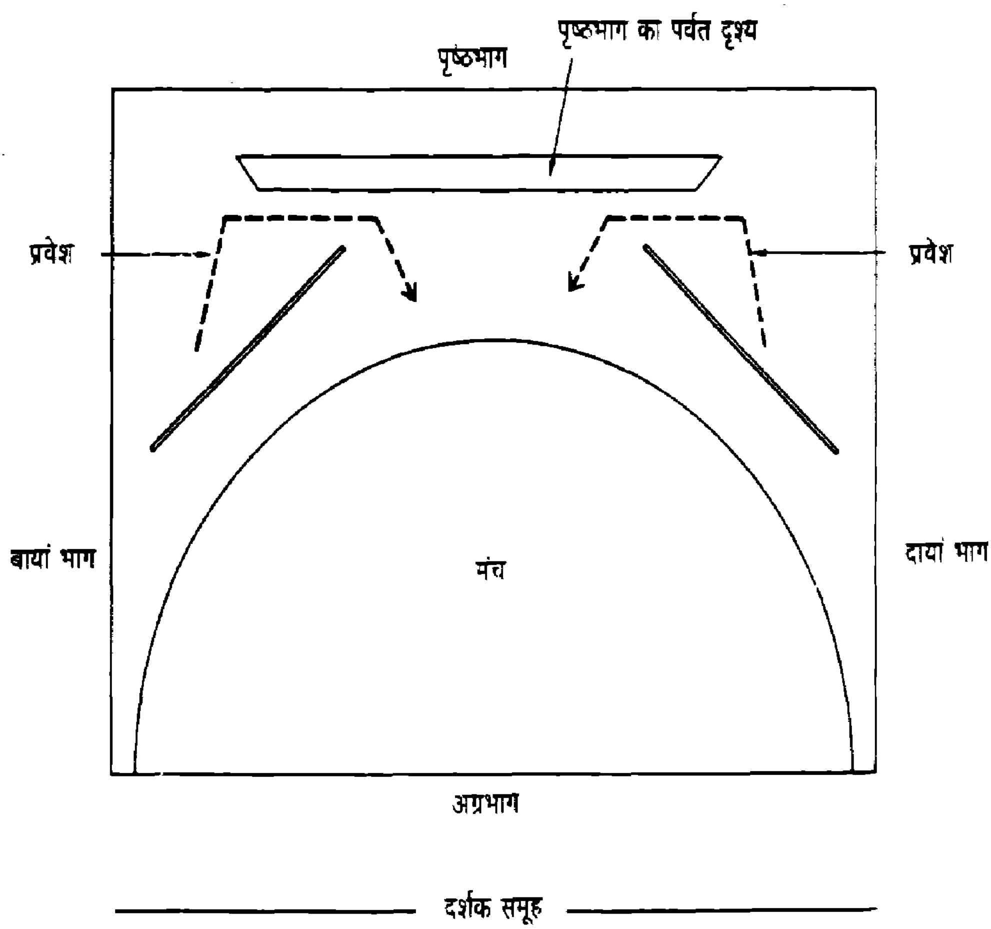


मंच-सज्जा



मंच की रूपरेखा

दृश्य 1



नन्हा नकलची

जापान



नन्हा नकलची

--मिशियो कातोह

● *पात्र-परिचय*

नन्हा नकलची	दूसरों को छकानेवाला जो खुद छकाया जाता है।
लड़का 1	जो पहले चोट करता है।
लड़का 2	तारू, अच्छा बेटा
लड़का 3	**लड़का 1** का दोस्त
लड़का 4	**लड़का 1** का दोस्त

(संगीत। लड़का 1 बायीं तरफ से मंच पर आता है। उसके पीछे-पीछे नन्हा नकलची आता है जो लड़का 1 की नकल करके चलता है।)

लड़का 1 : *(अचानक रुककर और पीछे देखकर)* ए, क्या कर रहे हो ?

नन्हा नकलची : (लड़का 1 *की तरह ही मुड़कर)* ए, क्या कर रहे हो ?

लड़का 1 : अजीब लड़का है।

नन्हा नकलची : अजीब लड़का है।

(अंतराल)

लड़का : *(फिर चलने लगता है।)* जो मन में आये करो।

नन्हा नकलची : *(उसके पीछे चलकर)* जो मन में आये करो।

लड़का 1 : तुम हमेशा दूसरों की नकल करते हो ?

नन्हा नकलची : तुम हमेशा दूसरों की नकल करते हो ?

लड़का 1 : तुम चाहते क्या हो ?

नन्हा नकलची : तुम चाहते क्या हो ?

लड़का 1 : तुम मुझे परेशान कर रहे हो।

नकलची : तुम मुझे परेशान कर रहे हो।

लड़का 1 : मैं तुम्हें एक घूंसा मारूंगा।

नन्हा नकलची : मैं तुम्हें एक घूंसा मारूंगा।

लड़का 1 : मार कर दिखाओ।

नन्हा नकलची : मार कर दिखाओ।

(लड़का 1 नन्हें नकलची *के सिर पर घूंसा मारता है।* नन्हा नकलची *उसे जोर से मारता है।* लड़का 1 *रोने लगता है।)*

लड़का 1 : हाय . . . हाय *(रोता हुआ, दुबककर बाहर जाता है।)*

नन्हा नकलची : हा . . . हा . . . हा . . . । मजा आ गया। आखिर रो दिया न . . . । आज यह मेरा पांचवां शिकार है। वाह, वाह। क्या बात है ? नकल करने में इतना मजा क्यों आता है ? *(श्रोताओं से)* मैं यहां नन्हा नकलची के

नाम से मशहूर हूं। मैंने मन को बहलाने के कई तरीके आजमाये लेकिन किसी में मजा नहीं आया। मैं जो भी करता था उसका परिणाम होता था असफलता। लोग मुझ पर हंसते थे। इसलिए यह दुनिया मुझे बोर लगने लगी। लेकिन जब से मैंने लोगों की नकल उतारना शुरू किया है, जिंदगी मजेदार हो गयी है। कोई लड़का अपने को कितना ही बहादुर समझे, अगर वह नकलची के हाथ आ जाता है तो वह जरूर अंत में छोटे बच्चों की तरह रोने लगता है। जब मैं उन्हें बच्चों की तरह रोते देखता हूं तो मुझे सचमुच बड़ा मजा आता है। लेकिन रोने की मैं नकल नहीं करता क्योंकि रोने से दिल दुखी हो जाता है। रोने से सारा मजा किरकिरा हो जाता है। . . . आप जानते हैं लोगों की नकल करना बहुत मुश्किल काम है। इस बात की सावधानी रखनी पड़ती है कि दूसरा जो भी कहे उस पर गुस्सा न आये। जब मैं नकल करने लगता हूं तो दूसरा आदमी जल्दी या देर से यह बात भूल जाता है कि मैं जो कुछ कर रहा हूं वह उसकी नकल मात्र है और वह मेरी बातों को गंभीरता से लेने लगता है। अगर वह गुस्से में भी आ जाये तो भी मुझे शांत रहना होता है ताकि मैं अंत तक उसकी नकल करता रहूं। सफल नकलची बनने के लिए यह बहुत जरूरी है। अगर दूसरों की बात में जरा भी फंस गये तो खेल खत्म समझो। नकल की सारी कोशिश बेकार हो जायेगी . . . अब मैं अपना 'नन्हा नकलची गाना' गाऊंगा और किसी नये शिकार की प्रतीक्षा करूंगा।

(संगीत : नन्हा नकलची अपनी जेब से छोटी डफली निकाल कर मजेदार गाना गाने और नाचने लगता है।)

नन्हा नकलची : मैं हूं बड़ा नन्हा नकलची . . .
नन्हा नकलची, नन्हा नकलची
दूसरों की नकल करना
यहां, वहां, हर जगह
घूमना दिनभर ,
नाचना और गाना
अपनी डफली को बजाना
हा हा हू . . . हा हा हू . . .

(दायीं ओर से **मूंगफली बेचनेवाला { लड़का 2 }** *"मूंगफली मूंगफली" चिल्लाता सुनाई देता है।)*

नन्हा नकलची : *(नाच रोककर और उस आवाज की तरफ कान लगाकर)* क्या मौका हाथ लगा है। मूंगफली बेचने वाला लड़का आ रहा है। बहुत मजा आयेगा। मैं यहां छिपकर उसका इंतजार करूंगा।

(नन्हा नकलची *मंच के कोने में दूर जाकर बैठ जाता है।* लड़का 2, *दायीं ओर से मंच पर आता है।)*

लड़का 2 : मूंगफली, मूंगफली ।

(नन्हा नकलची *उसके पीछे चलने लगता है।* लड़का 2 *बायीं ओर हो जाता है और* नन्हे नकलची *को नहीं देखता।)*

लड़का 2 : मूंगफली, मूंगफली ।

नन्हा नकलची : मूंगफली, मूंगफली ।

लड़का 2 : *(पीछे मुड़कर)* ए, यह क्या हो रहा है ?

नन्हा नकलची : ए, यह क्या हो रहा है ?

लड़का 2 : तुम मूंगफली खरीदना चाहते हो ?

नन्हा नकलची : तुम मूंगफली खरीदना चाहते हो ?

लड़का 2 : तुम मेरी बात को क्यों दुहरा रहे हो ?

नन्हा नकलची : तुम मेरी बात को क्यों दुहरा रहे हो ?

लड़का 2 : मुझे बेवकूफ मत बनाओ।

नन्हा नकलची : मुझे बेवकूफ मत बनाओ।

लड़का 2 : यह तो सचमुच वाहियात लड़का है।

नन्हा नकलची : यह तो सचमुच वाहियात लड़का है।

लड़का 2 : बकवास बंद करो।

नन्हा नकलची : बकवास बंद करो।

(लड़का 2 *बायीं ओर चलता है।* नन्हा नकलची *उसका पीछा करता है।)*

लड़का 2 : मूंगफली, मूंगफली ।

नन्हा नकलची : मूंगफली, मूंगफली ।

लड़का 2 : मूंगफली, मूंगफली ।

नन्हा नकलची : मूंगफली, मूंगफली ।

(दोनों लड़के *बायीं ओर पर्दे के पीछे चले जाते हैं लेकिन उनकी आवाजें आती रहती हैं। बायीं ओर से* लड़का **3**, *और* लड़का **4**, लड़का **1** *के साथ आते हैं।)*

लड़का 3 : वह लड़का बिल्कुल गधा है। दूसरों को तंग करने के सिवा उसे कुछ नहीं आता।

लड़का 4 : हमें मिलकर उसे सजा देनी चाहिए।

लड़का 3 : बहुत अच्छा। चलो ऐसा ही करते हैं।

लड़का 1 : हां, लेकिन कैसे ?

लड़का 4 : चलो, मिलकर कुछ सोचते हैं।

लड़का 3 : पहली बात यह कि वह नकल करने के अलावा और कुछ नहीं करना और यह बात तय है कि वह अपनी तरफ से कुछ नहीं कर सकता।

लड़का 4 : इसका मतलब हमें ऐसा काम करना चाहिए जिसकी वह नकल न कर सके।

लड़का 1 : हां, यह तरकीब बहुत अच्छी है।

लड़का 3 : हम सब मिल कर इस मसले पर सोचें।

लड़का 4 : चलो सोचो।

(तीनों *मंच के बीचों-बीच एक दूसरे की तरफ मुंह करके बैठ जाते हैं।)*

लड़का 3 : ऐसा क्या हो सकता है जिसकी वह नकल नहीं कर सकता।

लड़का 4 : (लड़का 1 *की तरफ देख)* तुम क्या कहते हो ? तुम कोई ऐसा काम कर सकते हो जिसकी वह नकल नहीं कर सकता ?

लड़का 1 : मैं हाथों के बल उल्टा खड़ा हो सकता हूं।

लड़का 4 : फिर भी करके दिखाओ।

(लड़का 1 हाथों के बल उल्टा खड़ा होकर चलने की कोशिश करता है लेकिन जल्दी ही पीठ के बल गिर जाता है। फिर कोशिश करता है और फिर गिर जाता है। वह निराश होकर बैठ जाता है।)

लड़का 3 : यह तो नहीं चलेगा।

लड़का 4 : नहीं चलेगा।

लड़का 3 : तुम ? तुम कुछ कर सकते हो?

लड़का 4 : मैं मसखरा बन सकता हूं और नाच सकता हूं।

लड़का 3 : करके दिखाओ।

(लड़का 4 मंच के बीच आकर मसखरेपन में नाचता और गाता है।)

लड़का 4 : जोकर हूं, मैं, जोकर हूं
नहीं किसी का नौकर हूं
उछलूं कूदूं नाच दिखाऊं
सबके मन को हर्षाऊं
जोकर हूं मैं जोकर हूं
नहीं किसी का नौकर हूं।

लड़का 1 : *(बीच में टोककर)* नहीं, इससे काम नहीं चलेगा।

लड़का 4 : *(गुस्से से)* क्यों नहीं ?

लड़का 1 : वह लड़का बहुत अच्छा नाचता है। जब आज वह मुझे मिला था तो वह डफली बजाकर नाच रहा था।

लड़का 3 : यह बात ? यह तो बुरी खबर है।

लड़का 4 : *(वापस आकर बैठ जाता है।)* ऐसी बात है तो जोकर का डांस भी काम का नहीं होगा।

लड़का 1 : (लड़का 3 *से)* तुम भी तो कुछ बताओ।

लड़का 3 : मैं शराबी के तीन रोल कर सकता हूं।

लड़का 4 : करके दिखाओ तो।

लड़का 1 : हां, हां करके दिखाओ।

(लड़का 3 *मंच के बीच आता है।)*

लड़का 3 : पहले मैं हंसते हुए शराबी की एक्टिंग करूंगा। *(वह गहरी सांस लेता है और उसकी गंभीर मुद्रा मुस्कान की मुद्रा में बदल जाती है।)* उह . . . मैं . . . मैं शराबी हूं . . . ऐसा शराबी। मुझे सारी चीजें अजीब-अजीब लगती हैं। अजीब, अजीब। मैं अपनी हंसी नहीं रोक सकता हा हा हा हा हो हो हो हो हो . . .

(देखने वाले दोनों लड़कों पर जैसे हंसी सवार हो जाती है और वे जोर-जोर से हंसने लगते हैं। उसी समय दायीं ओर से उन्हें रोने की आवाज सुनायी देती है।)

लड़का 2 : *(पर्दे के पीछे से)* ऊ . . . ऊ . . . ऊ . . . ।

लड़का 1 : (लड़का 3 *से)* क्या तुम रोनेवाले शराबी की एक्टिंग कर रहे हो ?

लड़का 4 : नहीं वह तारू है, मूंगफली बेचनेवाला। वह अपने माता-पिता का कहना मानता है

(लड़का 2 *दायीं ओर से रोता हुआ आता है। तीनों लड़के खड़े हो जाते हैं और उससे मिलने के लिए मुड़ते हैं।)*

लड़का 3 : क्या बात है तारू ?

लड़का 2 : ऊ . . . ऊ . . . ऊ . . . ।

लड़का 4 : क्या किसी ने तुम्हें रुलाया है ?

(लड़का 2 *अभी भी रोते हुए, कंधे हिलाता है।)*

लड़का 1 : क्या वह डफली वाला नन्हा नकलची था . . . ?

लड़का 2 : हां . . .

लड़का 3 : अब तो हम उसे ऐसे जाने नहीं देंगे।

लड़का 4 : उसने तारू को भी छेड़ा जो मां-बाप का इतना आज्ञाकारी बेटा है। यह तो हद है।

लड़का 1 : ठीक, बिल्कुल ठीक।

लड़का 3 : आओ, हम मिलकर सोचें।

लड़का 4 : आओ बैठो। तारू, तुम भी बैठो।

(लड़का 2 *सुबकता हुआ चुपचाप बैठ जाता है।)*

लड़का 1 : क्या तुम्हें पहली बार उसने रुलाया है ?

लड़का 2 : हां . . .

लड़का 3 : उसने तुम्हे कैसे रुलाया ?

लड़का 4 : मुझे लगता है उसने तुम्हें पीटा होगा। नहीं ?

लड़का 2 : हां . . . तुम जानते हो वह हमेशा दूसरों की नकल करता है। जब मैंने कहा, "मैं तुम्हें घूंसा मारूंगा।" तो उसने भी कहा, "मैं तुम्हें घूंसा मारूंगा।" मैंने कहा, "मार कर दिखाओ" तो वह भी बोला, "मार कर दिखाओ।" मैंने उसे मारा तो उसने भी मुझे मारा लेकिन बहुत जोर से। *(वह फिर रोने लगता है।)*

लड़का 1 : मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ।

लड़का 3 : रोना छोड़ो। तारू, यह रोने-धोने का वक्त नहीं है।

लड़का 4 : मैं कहता हूं सब मिलकर उसे ऐसी सजा दें कि वह फिर कभी किसी की नकल न करे।

लड़का 1 : लड़कों को रोना शोभा नहीं देता।

(लड़का 2 *रोना बंद कर देता है।)*

लड़का 3 : वह हमारी चीज की नकल करता है तो उसे सजा कैसे दें ?

लड़का 4 : इसका मतलब ऐसा काम सोचो जिसकी वह नकल न कर सके।

लड़का 3 : शराबी के तीन रोल भी काम नहीं करेंगे ?

लड़का 1 : नहीं, क्योंकि वह उनकी नकल आसानी से कर सकता है।

लड़का 4 : आओ, हम नये सिरे से सोचें।

लड़का 3 : हां, हां . . . नये सिरे से सोचें।

लड़का 1 : हां . . . हां नये सिरे से सोचें।

लड़का 2 : *(ताली बजाकर)* मिल गया, मिल गया।

लड़का 1,3,4 : *(एक साथ)* क्या मिल गया ?

लड़का 2 : खास कुछ नहीं। पहले तो हम चुपचाप खड़े हो जायें। फिर अचानक सब कहें, "आहा . . ." और आसमान की तरफ इशारा करें। तब वह कुछ न कुछ जरूर कहेगा। और जब कहेगा तो हम उसे पकड़ लेंगे। हम सब मिल कर उसकी नकल करेंगे।

लड़का 3 : क्या आइडिया मारा है !

लड़का 1 : हां भाई, दाद देनी पड़ेगी।

लड़का 4 : हमारे दिमाग में यह बात पहले क्यों नहीं आयी ?

लड़का 2 : देखो, वह आ रहा है।

(नन्हा नकलची *के गाने और उसकी डफली की आवाज सुनाई पड़ती है।)*

नकलची : नकल करने की जो बात है।
मेरा कोई सानी नहीं
मैं नाचूं . . . नाचता ही रहूं
मैं हूं बड़ा नन्हा नकलची
नन्हा नकलची, नन्हा नकलची
दूसरों की नकल करना
यहां, वहां, हर जगह
घूमना दिन भर
अपनी ढपली को बजाना
हा हा हू . . . हा हा हू

लड़का 2 : (लड़का 3 *और* 4 *से)* अच्छा अब वैसा ही करेंगे जैसा हमने सोचा था। मैं ठीक वक्त तक रुकूंगा। और आसमान की तरफ इशारा करूंगा और कहूंगा, "आहा"। तुम लोग भी वैसा ही करोगे। अब चुप हो जाओ।

(लड़का 2 लड़का 1 *के साथ मंच के किनारे दुबक जाता है।* लड़का 3 और 4 *एक दूसरे की तरफ देखकर ओठों पर उंगुली रखते हैं और फिर* नन्हें नकलची *की ओर मुड़ते हैं, जो बायीं ओर से आ रहा है।)*

नन्हा नकलची : *(अपने से)* इस बार चार हैं। चार की नकल करना थोड़ा मुश्किल जरूर है लेकिन ये चारों लड़के गधे हैं। मैं अभी सबका मजाक उड़ाऊंगा।

(नन्हा नकलची लड़का 3 और 4 के पास आता है। तीनों एक दूसरे की तरफ बिना कुछ बोले देखते रहते हैं। लड़का 3 और 4 नम्रता से झुकते हैं। नकलची भी वैसे ही करता है। लड़का 3 और 4 उसकी तरफ देखकर व्यंग्य से मुस्कुराते हैं। नन्हा नकलची भी उसी तरह मुस्कुराता है।)

लड़का 3 : हुं हुं . . .

नन्हा नकलची : हुं हुं . . .

लड़का 4 : ओन ऊन, आन . . .

नन्हा नकलची : ओन, ऊन, आन . . .

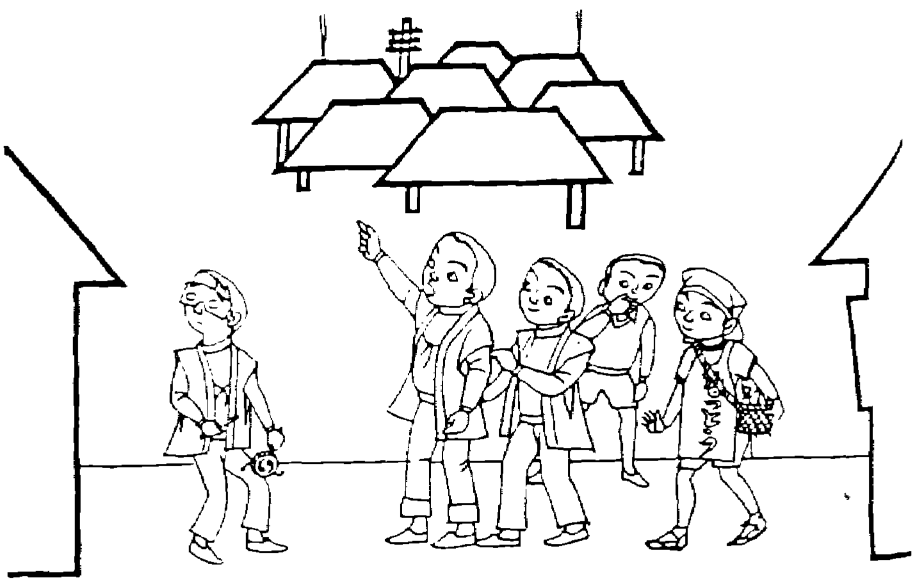
(लड़का 3 और 4 फिर नम्रता से झुकते हैं और नकलची भी वैसे ही करता है। अंतराल)

लड़का 2 : *(अचानक ऊपर इशारा करके)* आहा . . .

लड़का 4 : *(ऊपर इशारा करके)* आहा . . .

नन्हा नकलची : *(अनजाने नकल भूलकर ऊपर देखने लगता है)* ऊपर कुछ है ?

लड़का 3, 4 : *(तुरंत)* ऊपर कुछ है ?



नन्हा नकलची : ओह, तुमने मुझे धोखा दिया।

लड़का 3, 4 : ओह, तुमने मुझे धोखा दिया।

(लड़का 1 और 2 भी कूदकर आगे आते हैं)

नन्हा नकलची : हां, तो तुम बंदरों ने सोचा है कि सब मिलकर मेरी नकल उतारोगे।

सब : हां, तो तुम बंदरों ने सोचा है कि सब मिलकर मेरी नकल उतारोगे।

नन्हा नकलची : तुम सचमुच मसखरे हो।

सब : तुम सचमुच मसखरे हो।

नन्हा नकलची : *(अचानक अपने शरीर को कंपाते हुए नाचना शुरू करता है)* हो रे . . . डफली वाले मेरी डफली . . .

सब : *(उसे घेरकर नाच की नकल करते हुए)* हो रे . . . डफली वाले मेरी डफली।

नन्हा नकलची : हा हा हा . . . तुम कुछ भी करो। तुम मेरी डफली की आवाज की नकल नहीं कर सकते।

सब : हा हा हा . . . तुम कुछ भी करो। तुम मेरी डफली की आवाज की नकल नहीं कर सकते।

नन्हा नकलची : जरा सोचो।

सब : जरा सोचो।

नन्हा नकलची : हा हा हा हा।

सब : हा हा हा हा ।

(वे उसे पकड़ते हैं और डरावनी मुद्रा बनाते हैं, उसे इधर-उधर धकेलते हैं और नकल करते रहते हैं।)

नन्हा नकलची : ए . . . छोकरो।

सब : ए . . . छोकरो।

नन्हा नकलची : तुम सब सिर्फ नकल कर रहे हो।

सब : तुम सब सिर्फ नकल कर रहे हो।

नन्हा नकलची : तुम जानते हो मैं कौन हूं ?

सब : तुम जानते हो मैं कौन हूं ?

नन्हा नकलची : मैं यहां का अकेला नकलची हूं।

सब : मैं यहां का अकेला नकलची हूं।

नन्हा नकलची : बंद करो यह सब।

सब : बंद करो यह सब।

नन्हा नकलची : मैं इसे सहन नहीं कर सकता।

सब : मैं इसे सहन नहीं कर सकता।

नन्हा नकलची : मैं तुम्हें घूंसा मारूंगा।

सब : मैं तुम्हें घूंसा मारूंगा।

नन्हा नकलची : *(मुट्ठी दिखाकर)* यह देखो।

सब : *(मुट्ठियां दिखाकर)* यह देखो।

नन्हा नकलची : *(सामने चार मुट्ठियां देखकर उसकी हिम्मत टूट जाती है और वह रोने लगता है।)* ऊ . . . ऊ . . . ऊ . . .

सब : ऊ . . . ऊ . . . ऊ . . .

(नन्हा नकलची रोता हुआ बायीं ओर भागता है। चारों उसके रोने की नकल करके उसके पीछे भागते हैं।)

नन्हा नकलची : मां। ये लड़के मुझे छेड़ रहे हैं।

सब : मां। ये लड़के मुझे छेड़ रहे हैं।

नन्हा नकलची : ऊ . . . ऊ . . . ऊ . . .

सब : ऊ . . . ऊ . . . ऊ . . . अब कभी किसी की नकल मत करना।

नन्हा नकलची : ऊ . . . ऊ . . . ऊ . . .

सब : ऊ . . . ऊ . . . ऊ . . . अब कभी किसी की नकल मत करना।

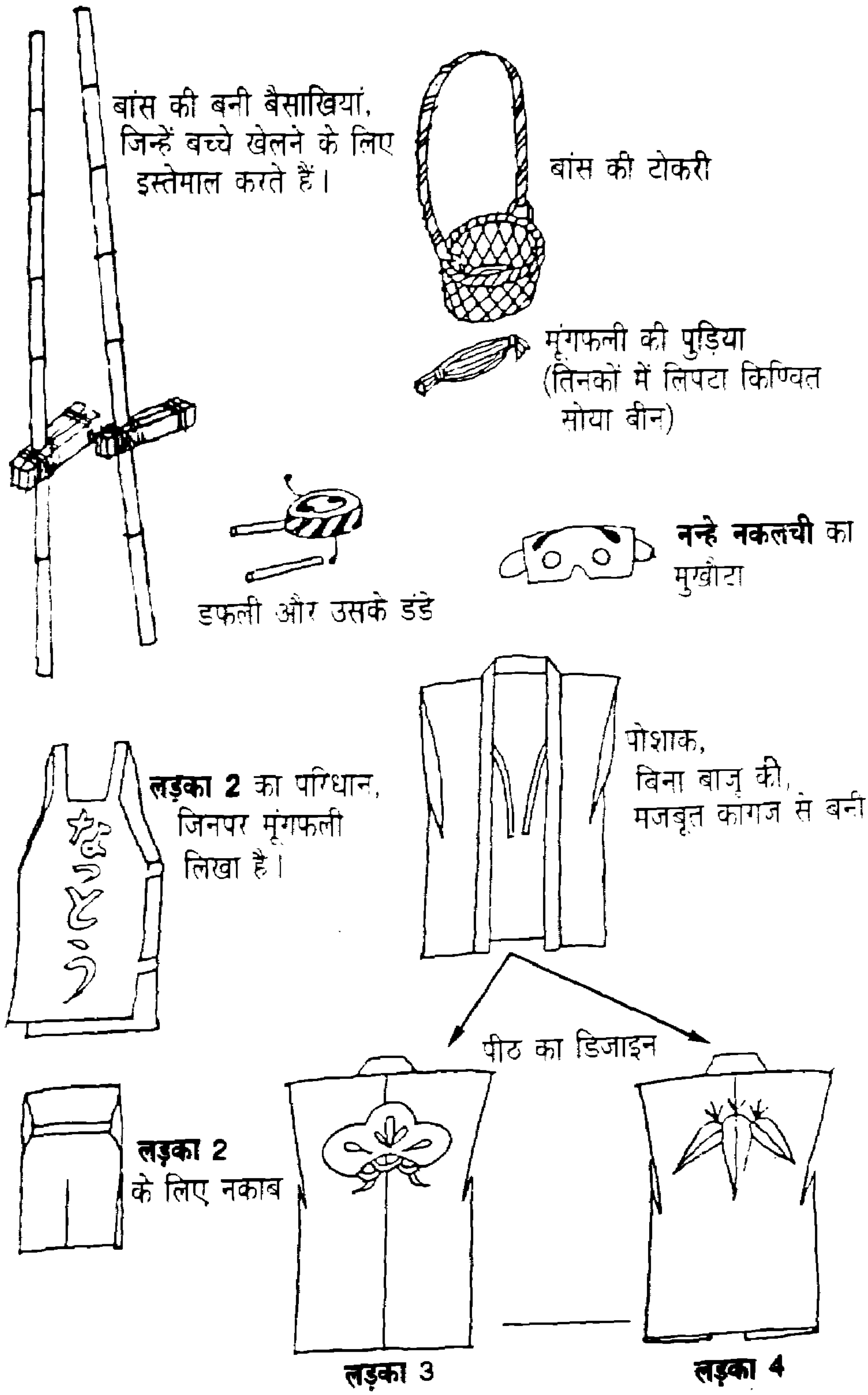
पर्दा

अंग्रेजी अनुवाद : क्योको मत्सुओका

चित्र : सावुरो निशियामा

वेशभूषा




बांस की बनी बैसाखियां,
जिन्हें बच्चे खेलने के लिए
इस्तेमाल करते हैं।
बांस की टोकरी
मूंगफली की पुड़िया
(तिनकों में लिपटा किण्वित
सोया बीन)
डफली और उसके डंडे
नन्हे नकलची का
मुखौटा
पोशाक,
बिना बाजू की,
मजबूत कागज से बनी
लड़का 2 का परिधान,
जिनपर मूंगफली
लिखा है।
पीठ का डिजाइन
लड़का 2
के लिए नकाब
लड़का 3
लड़का 4

कछुआ और उसकी बांसुरी

मलेशिया



कछुआ और उसकी बांसुरी

--हेरानी इस्माइल सुकी

● *पात्र-परिचय*

कछुआ	संगीतकार
लोमड़ी	**कछुए** की दोस्त
मुर्गा	**कछुए** का दोस्त
बकरी	**कछुए** की दोस्त
घोंघा	**कछुए** का दोस्त
बत्तख	**कछुए** की दोस्त
मेंढक	**कछुए** का दोस्त
खरगोश	**कछुए** का दोस्त
बूढ़ा बंदर	लालची बंदर
शिशु बंदर	बूढ़े बंदर का शिशु
हिरन	**कछुए** का दोस्त
केकड़ा	**कछुए** का दोस्त

दृश्य एक

(दोपहर का समय। गांव का बाहरी हिस्सा। कछुआ अपनी बांसुरी बजाता हुआ आता है। वह इधर-उधर घूमता है। फिर एक विशाल पेड़ के तने पर आराम करने बैठ जाता है। लोमड़ी आती है और क्षण भर के लिए उसकी दायीं तरफ हैरान खड़ी रह जाती है। लोमड़ी जल्दी-जल्दी बाहर जाती है और फिर मुर्गे के साथ वापस आती है।)

लोमड़ी : देखो मुर्गे राजा। बांसुरी की आवाज कितनी मधुर होती है। मैं तो इसे सुनकर गद्‌गद् हो गयी हूं। वाह ! कितनी मधुर !

मुर्गा : तुम ठीक कहती हो। मैं भी इसे सुनकर गद्‌गद् हो गया हूं। बांसुरी बजाने में कछुए की बराबरी कौन कर सकता है ?

लोमड़ी : हां। आओ, हम नाचें।

मुर्गा : *(लजाते हुए)* नहीं, नहीं।

लोमड़ी : क्यों नहीं ? क्या अब तुम्हें मेरे साथ नाच करना अच्छा नहीं लगता?

मुर्गा : यह बात नहीं है। बस मेरी इच्छा नहीं है। मुझे शर्म आती है।

लोमड़ी : इस में शर्म करने वाली क्या बात है ? हम एक दूसरे को कितने समय से जानते हैं।

मुर्गा : कछुआ हमें देख लेगा और वह जरूर मेरी मां को बता देगा।

लोमड़ी : वह नहीं बतायेगा। वह बहुत अच्छा है। वैसे उसकी आंखें बंद हैं। वह हमें कैसे देख सकता है ?

(दोनों नाचते हैं। बायीं ओर से बकरी आती है। वह भी बांसुरी के संगीत पर मुग्ध है। जब वह लोमड़ी और मुर्गे को नाचते देखती है तो मुस्कुराती है और घोंघेको बुलाती है।)

बकरी : घोंघे भाई, घोंघे भाई ! जल्दी आओ। वह मिल गया।

घोंघा : *(पर्दे के पीछे से)* क्या है ? कहां है ?

(घोंघा *आता है। वह हांफ रहा है।)*

घोंघा : ओह म् म् म् . . . बांसुरी की आवाज कितनी मीठी है। (लोमड़ी *और*

मुर्गे *को नाचता देख कर वह हंसता है।)* . . . अरे देखो, देखो। लोमड़ी मुर्गे के साथ नाच रही है। हा हा हा . . . ।

बकरी : तुम ठीक कहते हो। कछुआ कितनी अच्छी बांसुरी बजाता है। मैं उससे बांसुरी बजाना सीखूंगी। जब मैं इसमें निपुण हो जाऊंगी तो भेड़ें मुझे बेकार नहीं समझेंगी।

घोंघा : शेखचिल्ली के सपने देखना बंद करो। भेड़ें तुम्हारी जरा भी परवाह नहीं करतीं। तुम्हें तो नहाने तक में आलस आता है।

बकरी : यह बात कहने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ?

घोंघा : गुस्सा मत करो। मैं तो चिढ़ा रहा हूं। सच बात यह है तुम्हारी जैसी सुंदर, बनी-ठनी बकरी पर कौन फिदा नहीं होगा ? *(धीरे से स्वगत)* इससे कितनी दुर्गंध आती है।

बकरी : तुम क्या कह रहे थे ?

घोंघा : अ . . . कुछ नहीं, कुछ नहीं।

(कछुआ *बांसुरी बजाना बंद करता है।* लोमड़ी, मुर्गा, बकरी *और* घोंघे *को बहुत निराशा होती है। वे दौड़कर उसके पास आते हैं।)*

लोमड़ी : कछुआ भाई, बांसुरी बजाओ। मैं मुर्गे के साथ नाचना चाहती हूं। उसके साथ नाचने का मौका मुझे कभी-कभी मिलता है।

मुर्गा : लोमड़ी ठीक कहती है, कछुआ भाई। मुझे भी तुम्हारी बांसुरी सुनने में बड़ा मजा आता है। कम से कम एक बार तो और बजाओ।

कछुआ : मैं थक गया हूं। मैं एक ही धुन बड़ी देर से बजा रहा हूं। और कोई गाना मेरे पास नहीं है। फिर कभी सही।

लोमड़ी, मुर्गा, बकरी और **घोंघा :** मेहरबानी करके एक बार और बजाओ। एक बार बजाकर आराम कर लेना। फिर हम तुम्हें तंग नहीं करेंगे।

कछुआ : सच कहता हूं। मुझे कोई और गीत नहीं सूझता। मैं एक ही धुन को चार-पांच बार बजाकर बोर हो गया हूं।

लोमड़ी : मेरे पास एक नया गाना है। तुमने नहीं सुना होगा। सुनना चाहते हो ?

कछुआ : क्या गीत है ? गाने की कोशिश करो। मुझे अच्छा लगा तो जरूर बजाऊंगा।

लोमड़ी : गाना अच्छा है। लेकिन पहले वायदा करो कि तुम बांसुरी बजाओगे।

कछुआ : बहुत अच्छा। पहले गाना तो सुनाओ। फिर मैं तुम्हारे साथ बजाऊंगा और सब मिलकर गायेंगे। ठीक . . . ?

मुर्गा : और हम सब नाच भी सकते हैं।

कछुआ : जरूर, जरूर।

लोमड़ी : इस गीत का शीर्षक है 'हाथी का नाच'। सुनो --

हर बार जब फूल खिलते हैं
एक हाथी चला आता है
मस्ती में झूमता हुआ
दायीं ओर झुकता
बायीं ओर झुकता
और सब हाथियों को
नाच के लिए बुलाता है। . . . कैसा लगा ?



कछुआ : *(बांसुरी बजाकर)* यह ठीक है ?

लोमड़ी : हां, बिल्कुल ठीक है।

कछुआ : अच्छा, अब मिलकर गायेंगे और नाचेंगे और मैं बांसुरी बजाऊंगा। क्या सब तैयार हैं ? शुरू करो।

(सभी गाते हैं। लोमड़ी पहले गाती है, उसके बाद मुर्गा, बकरी और घोंघा गाने लगते हैं। इस बीच बत्तख, मेंढक और खरगोश आते हैं। वे भी नाच-गाने में सम्मिलित हो जाते हैं। नृत्य के बाद कछुआ नर्तकों की अगुआई करता है। सब नाचते हैं और कछुए के पीछे-पीछे मंच से बाहर जाते हैं।)

दृश्य दो

(दुरियन के बाग की एक शाम। बूढ़ा बंदर और शिशु बंदर शाम के भोजन के बाद दुरियन के पेड़ की शाखा पर बैठे हैं। शिशु बंदर एक शाख के साथ लगकर सो गया है। बूढ़ा बंदर दुरियन के पत्तों का पंखा चला कर अपनी गर्मी शांत कर रहा है। दूर से बांसुरी का संगीत सुनाई देता है। बूढ़ा बंदर यह जानने की कोशिश करता है कि आवाज कहां से आ रही है।)

बूढ़ा बंदर : यह तो बांसुरी की आवाज लगती है। यह बहुत मधुर आवाज है। इसे कौन बजा रहा होगा। *(जोर-जोर से गाने की आवाज आती है।)* यह क्या शोर है ? क्या कोई उत्सव चल रहा है ? नामुमकिन। अगर कोई उत्सव है तो यह मेरे लिए बहुत बुरी बात है। मेरा पेट तो भरा हुआ है। *(वह अपने पेट पर हाथ फेरते हुए शिशु बंदर को जगा देता है।)* उठो, बेटे, उठो। क्या तुम वह संगीत सुन सकते हो ?

शिशु बंदर : *(जम्हाई लेकर)* क्या है बापू ? कौन आ रहा है ?

बूढ़ा बंदर : मैं पूछ रहा हूं, तुम्हें वह संगीत सुनाई दिया ?

शिशु बंदर : हां बापू। सुनाई दे रहा है। यह किस चीज की आवाज है ? मैंने पहले तो कभी नहीं सुनी। यह तो भूत की आवाज की तरह है। क्यों बापू ?

बूढ़ा बंदर : तुम बेवकूफ हो। यह बांसुरी की आवाज है। इसे कौन बजा रहा होगा। कितनी मीठी आवाज है।

शिशु बंदर : बापू, क्या तुम बांसुरी बजा सकते हो ?

बूढ़ा बंदर : क्या तुम नहीं जानते कि इस सारे इलाके में मैं सबसे बढ़िया बांसुरी बजाता हूं।

शिशु बंदर : मैंने तो तुम्हें कभी बजाते नहीं सुना।

बूढ़ा बंदर : *(उदास होकर)* बहुत दिन हुए मैंने बांसुरी बजाना छोड़ दिया था। तुम्हारी मां की मृत्यु के बाद।

(कछुआ और उसके दोस्त गाते और नाचते हुए आते हैं। सब मंच के बीच आकर रुकते हैं। सभी थकान से लंबी-लंबी सांसें भरते हैं।)

बूढ़ा बंदर : आप कैसे हैं कछुए राजा ? कई दिनों से आपको देखा नहीं। इस बीच आप कहां छिपे रहे ?

कछुआ : मैं ठीक हूं। धन्यवाद। मैं यहां से चला गया हूं। अब मैं यहां नहीं रहता।

बूढ़ा बंदर : तभी मैं कहूं इतने दिनों से दिखाई क्यों नहीं दिये। और तुम्हारे साथ जो हिरन रहता था, वह कहां है ?

कछुआ : वह मेरे पीछे-पीछे आ रहा है।

बूढ़ा बंदर : मैंने कुछ देर पहले बांसुरी की धुन सुनी थी। क्या तुम्हीं बजा रहे थे ?

कछुआ : हां, मैं ही बजा रहा था।

बूढ़ा बंदर : *(पेड़ के ऊपर से ही)* इसका मतलब बांसुरी कछुए की है। मुझे बांसुरी किसी भी तरह हथियानी है। *(वह पेड़ से नीचे उतर आता है।)*

शिशु बंदर : बापू, तुम कहां जा रहे हो ?

बूढ़ा बंदर : तुम चुपचाप बैठे रहो। मैं थोड़ी देर के लिए नीचे जा रहा हूं।

शिशु बंदर : ध्यान से जाना बापू !

(बूढ़ा बंदर कछुआ और उसके दोस्तों के पास आता है।)

कछुआ : क्या बात है ?

बूढ़ा बंदर : तुम बांसुरी बहुत अच्छी बजाते हो। शायद यह जादू की बांसुरी है।

कछुआ : नहीं, यह बांसुरी मैंने खुद बनायी है।

बूढ़ा बंदर : ओह, तुमने तो कमाल कर दिया। तुमसे दोस्ती करके मुझे जरा भी अफसोस नहीं है। क्या तुम मुझे यह बांसुरी दे सकते हो ? मैं इसके बदले तुम्हें जितने चाहोगे उतने दुरियन दूंगा।

कछुआ : नहीं, मुझे अपनी बांसुरी से प्यार है। मैं इस तरह की बांसुरी बार-बार नहीं बना सकता।

बूढ़ा बंदर : हा हा . . . अरे देखो तो। ये दुरियन एकदम पके हुए और मीठे हैं। तुम इन्हें जरूर खाना चाहोगे। सभी को यह फल अच्छा लगता है। मेरे पास इस फल के पापड़ भी हैं, हालांकि ज्यादा नहीं हैं। तुमने आने की सूचना दी होती तो मैं तुम्हारे लिए बहुत से पापड़ बना रखता। लेकिन कोई बात नहीं। कल मैं तुम्हारे लिए बहुत से पापड़ बनाऊंगा और तुम्हारे लिए भेजूंगा। दोस्तो, आप भी दुरियन खाना चाहोगे। चाहोगे न . . . ?

(सभी साथी हां, हां कहते हैं।)

कछुआ : शुक्रिया दोस्त। लेकिन मुझे यह फल विशेष पसंद नहीं है।

बूढ़ा बंदर : सचमुच तुम्हें दुरियन नहीं चाहिए ?

कछुआ : नहीं, शुक्रिया।

बूढ़ा बंदर : लेकिन ये सभी दोस्त तो जरूर खाना चाहते हैं। यह लो कुछ दुरियन और अपने दोस्तों में बांट दो।

कछुआ : अगर तुम मुफ्त में दे रहे हो तो हम ले सकते हैं।

बूढ़ा बंदर : नहीं, मुफ्त नहीं। इसके बदले मुझे बांसुरी चाहिए। बांसुरी नहीं तो पापड़ भी नहीं।

कछुआ : ऐसी बात है तो हमें फल नहीं चाहिए।

बूढ़ा बंदर : तो तुम मुझे बांसुरी नहीं देना चाहते ?

कछुआ : नहीं।

बूढ़ा बंदर : कोई बात नहीं। अच्छा, मुझे अपनी बांसुरी बजाने दोगे ? सिर्फ एक बार।

कछुआ : *(कुछ सोचते हुए)* तुम मुझे धोखा तो नहीं दोगे ?

बूढ़ा बंदर : *(जोर से हंसकर)* मैं तुम्हें धोखा क्यों देने लगा ? हम दोनों इतने पुराने दोस्त हैं।

(कछुआ अपनी बांसुरी बूढ़े बंदर *को देता है।* बूढ़ा बंदर *बांसुरी को प्यार से देखता है।)*

बूढ़ा बंदर : *(अचानक बायीं ओर देखकर)* देखो, कौन आ रहा है ?

(कछुआ और उसके दोस्त उधर देखते हैं। बंदर बांसुरी लेकर पेड़ पर चढ़ जाता है। कछुआऔर उसके दोस्त बहुत नाराज होते हैं। कछुआ एक भी शब्द नहीं कह सकता। वह निराश होकर बैठ जाता है।)

लोमड़ी : इससे कुछ नहीं होगा कछुआ भाई। उसने हमें धोखा दिया है। ए बंदर, हमारे दोस्त की बांसुरी लौटा दो।

घोंघा, खरगोश, बकरी, मेंढक और **बत्तख :** ए, धोखेबाज बंदर। बांसुरी लौटा दो।

बूढ़ा बंदर : *(पेड़ के ऊपर से जोरों से हंसकर)* हा . . . हा . . . अब उन्हें पता चला। क्या ? क्या तुम समझते हो मैं बेवकूफ हूं। (शिशु बंदर *से)* बेटे अब सुनो कि तुम्हारा बापू कैसी बांसुरी बजाता है।

शिशु बंदर : ओह बापू। तुम्हारे पास बांसुरी है ? कितनी अच्छी है।

*(*बूढ़ा बंदर *बांसुरी बजाता है लेकिन आवाज बहुत बेसुरी निकलती है।)*

शिशु बंदर : बापू, तुम कछुए की तरह क्यों नहीं बजा सकते ?

बूढ़ा बंदर : *(गुस्से से)* खामोश। तुम्हें संगीत का कुछ पता नहीं। *(बांसुरी बजाता रहता है।)*

(नीचे कछुए के दोस्त आपस में सलाह करते हैं कि बूढ़े बंदर *से बांसुरी कैसे वापस ली जाये।*

मुर्गा : धीरज से काम लो। मैं उड़कर दुरियन के पेड़ पर जाऊंगा। अगर मैं उस डाल तक पहुंच गया तो जरूर बांसुरी ले आऊंगा।

लोमड़ी : इसकी जरूरत नहीं मुर्गे राजा। मैं पेड़ पर चढ़ती हूं। मुझे पेड़ों पर चढ़ने की आदत है।

घोंघा, खरगोश, बकरी, मेंढक और **बत्तख :** हां, हां लोमड़ी को चढ़ने दो। वह बड़ी भी है। बंदर उससे डर जायेगा।

मुर्गा : कोई बात नहीं। पहले लोमड़ी जाये। उसे सफलता नहीं मिली तो मैं कोशिश करूंगा।

(लोमड़ी पेड़ की तरफ उछलती है लेकिन वह उस डाल तक नहीं पहुंच पाती। हारकर वह बैठ जाती है।)

घोंघा, खरगोश, बकरी, मेंढक, बत्तख और **मुर्गा :** *(हिम्मत बढ़ाते हुए)* एक बार फिर कोशिश करो। फिर कोशिश करो।

लोमड़ी : *(उदास होकर)* नहीं, मैं हार गयी। यह डाली बहुत ऊपर है।

मेंढक : मुर्गे को कोशिश करने दो। शायद वह पेड़ पर उड़कर पहुंच जाये।

घोंघा, खरगोश, बकरी, और **बत्तख :** हां, हां, मुर्गा ऊपर तक उड़ सकता है।

मुर्गा : *(गर्व से)* अच्छा, तुम लोग रास्ता दो। मैं उड़ता हूं।

(सारे जानवर कुछ पीछे हटकर रास्ता बनाते हैं। मुर्गा पंख फैलाकर उड़ने की कोशिश करता है, लेकिन सबसे नीचे की डाली तक भी नहीं पहुच पाता। आखिर वह नीचे गिर जाता है।)

बकरी : *(मुर्गेके पास जाकर)* तुम ठीक तो हो न ?

मुर्गा : हां, हां, मैं ठीक हूं। मुझे रास्ता दो। मैं फिर कोशिश करूंगा। इस बार जरूर कामयाब होऊंगा।

(मुर्गा फिर उड़ान भरता है। इस बार वह कुछ ऊपर तक जाता है लेकिन उसके पंख एक डाली से टकरा जाते हैं और वह नीचे गिर जाता है।)

मुर्गा : *(पीड़ा से)* हाय, हाय, मेरे पंख . . . मैं घायल हो गया हूं।

घोंघा, खरगोश, बकरी, लोमड़ी, मेंढक, और **बत्तख :** *(मुर्गे के पास आकर)* ओह, बेचारा मुर्गा। यह तो बहुत बुरा हुआ। तुम्हारे पंख टूट गये क्या ? बहुत दर्द हो रहा होगा ?

कछुआ : छोड़ो, बांसुरी की चिंता मत करो। कभी न कभी तो हम इसे वापस ले ही लेंगे। हिरन को आने दो। तब तक इस बात पर विचार करो कि हम क्या कर सकते हैं।

(सब चुपचाप बैठ जाते हैं। मुर्गा दर्द से कराहता है। लोमड़ी उसके पंखों को सहलाती है। हिरन और केकड़ा आते हैं।)

हिरन : ये रहे कछुआ और उसके दोस्त। *(उनके पास जाकर)* कछुए भाई। रास्ते में मुझे केकड़ा भाई मिल गया। मैंने कहा साथ चलो। (कछुआ *कोई जवाब नहीं देता है।)* . . . क्या बात है ? तुम सब चुप क्यों हो ? (कछुआ *चुप रहता है।)* कुछ तो कहो। कछुए भाई। हुआ क्या आखिर ? बकरी! मुर्गे! लोमड़ी! कुछ तो बताओ।

बकरी : बंदर ने कछुए की बांसुरी चुरा ली है।

हिरन : *(गुस्से से)* बदमाश। कहां है वह। मैं उसे मजा चखाऊंगा।

लोमड़ी : वह देखो पेड़ पर बैठा है। *(दुरियन पेड़ की तरफ इशारा करता है।)*

हिरन : *(निराश होकर)* ओह !

केकड़ा : चिंता मत करो दोस्तो। कछुए भाई, तुम भी उदास मत हो। मैं जरूर तुम्हारी मदद करूंगा।

कछुआ : तुम मेरी मदद करोगे ? क्या कहा ? सच कह रहे हो ?

केकड़ा : *(मुस्कुराकर)* हां, मैं झूठमूठ नहीं कह रहा हूं। मैं तुम्हारी बांसुरी वापस लाऊंगा। *(बूढ़े बंदर से)* तू ठहर बंदर . . .

केकड़ा : *(कुछ सोचकर, स्वगत)* बांसुरी कैसे मिलेगी ? (जोर से) मैं इसे काटूंगा। यही बढ़िया तरीका रहेगा।

(केकड़ा *पेड़ की तरफ चलता है। बूढ़ा बंदर बांसुरी बजाने में डूबा हुआ है।)*

हिरन : केकड़े भाई, मैं तुम्हें बता सकता हूं कि डंक के असर को तेज कैसे किया जाये।

केकड़ा : कैसे ?

हिरन : *(कानों में कुछ फुसफुसाकर)* ऐसे। *(केकड़ा भी मुस्कुराकर सिर हिलाता है।)*

(पेड़ पर बंदर बांसुरी बजाने में मस्त हैं। वह केकड़े की तरफ ध्यान नहीं देता। शिशु बंदर केकड़े *को धीरे-धीरे पेड़ पर चढ़ता देखता है।)*

शिशु बंदर : बापू, बापू . . . यह देखो . . .

बूढ़ा बंदर : *(गुस्से से)* चुप रह ? देखते नहीं, मैं संगीत का आनंद ले रहा हूं ?

शिशु बंदर : लेकिन बापू, तुम्हारे पीछे . . .

बूढ़ा बंदर : खामोश।

(केकड़ा बंदर के कूल्हे पर जोर से डंक मारता है। बंदर चीखता है और बांसुरी सहित पेड़ से नीचे गिर पड़ता है।)

बूढ़ा बंदर : हाय, मैं मर गया। बेटा, मुझे बचाओ। मेरी मदद करो।

(शिशु बंदर बूढ़े बंदर के पास आता है। बूढ़ा बंदर दर्द से कराहता है।)

हिरन : अब बताओ बंदर मामा, कैसी रही ?

लोमड़ी : केकड़े के डंक से कैसा लग रहा है ? (दोस्तों से) आओ दोस्तो, इसे खत्म करो।

(सभी जानवर "मारो मारो" कहकर बंदर की तरफ बढ़ते हैं)

बूढ़ा बंदर : *(मिन्नत करते हुए)* अरे, मेरी मदद करो। हिरन, कछुए भाई . . . मुझे मत मारो . . . मैं अपनी गलती मानता हूं। फिर कभी ऐसा नहीं करूंगा। मेरी मदद करो कछुए भाई . . . । ओ, मेरे बेटे तुम कहां हो। मेरी पीठ बहुत दर्द कर रही है।

कछुआ : ठीक है दोस्तो। हमने इसे सबक सिखा दिया है। लगता है उसे अपने किये पर पछतावा है। लेकिन बंदर मामा, तुम्हें वायदा करना पड़ेगा कि फिर कभी ऐसा नहीं करोगे। भूलना नहीं।

बूढ़ा बंदर : मैं वायदा करता हूं। वायदा करता हूं।

बकरी : कसम खाते हो ?

कछुआ : कसम खाता हूं।

कछुआ : ऐसी बात है तो हम तुम्हें कुछ नहीं कहेंगे। सांझ हो रही है। हम अब चलेंगे। क्या तुम हमारे साथ आओगे ?

बूढ़ा बंदर : नहीं, अभी नहीं। मेरा शरीर दर्द कर रहा है। फिर कभी सही।

कछुआ : अच्छा हम चलते हैं। बाय-बाय।

बूढ़ा बंदर : बाय-बाय। फिर आना । दुरियन खाने हों तो इधर आना। जब मैं अच्छा हो जाऊंगा तो तुम सब के लिए बहुत से पापड़ बनाऊंगा। फिर आना। जरूर . . .

(सभी जानवर कहते हैं,"जरूर . . . हम जरूर आयेंगे।" कछुआ फिर अपनी बांसुरी बजाता है। सब 'हाथी नाच गीत' गाते हैं और नाचते हैं। फिर वे कछुए के पीछे पीछे बाहर निकल जाते हैं।)

पर्दा

अंग्रेजी अनुवाद : शहरजाद इब्राहिम

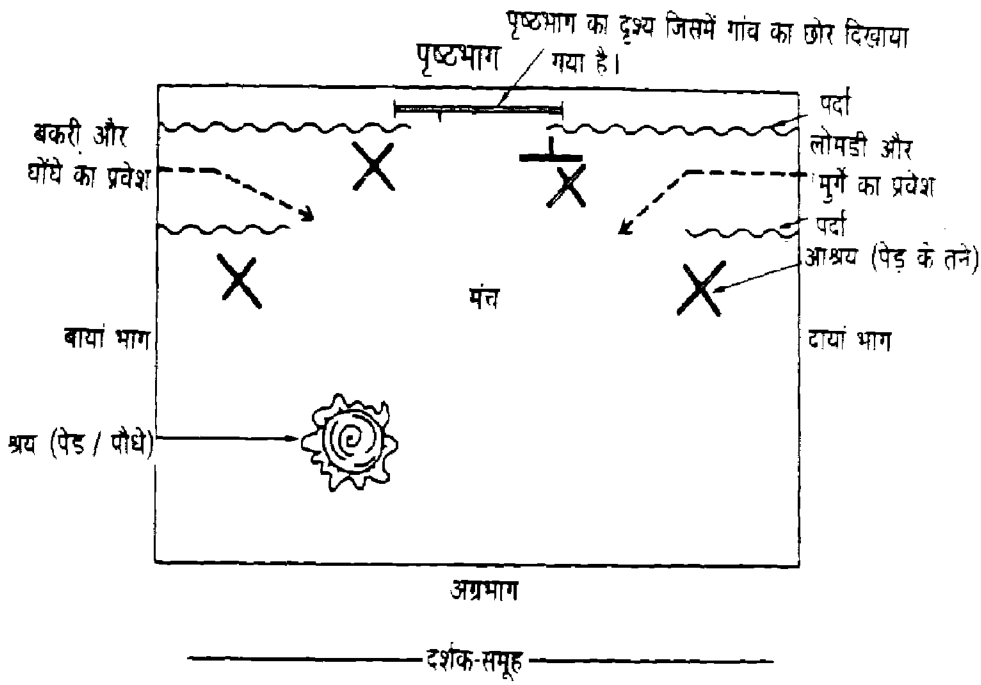
चित्र : जैनुद्दीन बिन जमील

वेशभूषा



मंच की रूपरेखा

«दृश्य 1»



दृश्य 2 : पृष्ठभाग के दृश्य को हटाकर और पेड़ लगाये जायें।

बालक सिद्धार्थ

नेपाल



बालक सिद्धार्थ

--शिव अधिकारी

● *पात्र-परिचय*

सिद्धार्थ	कपिलवस्तु के राजकुमार जो आगे चलकर गौतम बुद्ध बने
छंदक	महल का वफादार कर्मचारी
देवदत्त	कपिलवस्तु का एक क्षत्रिय बालक, शिकारी, **सिद्धार्थ** का मित्र
शुद्धोधन	कपिलवस्तु के राजा, **सिद्धार्थ** के पिता
महामंत्री	**शुद्धोधन** का महामंत्री

(सुबह का समय। कपिलवस्तु के महल के निकट वाटिका। राजकुमार सिद्धार्थ और छंदक टहल रहे हैं।)

सिद्धार्थ : आओ छंदक। सरोवर के किनारे चलें। वहां हंस अठखेलियां कर रहे होंगे। देखो, कितने सुंदर हैं।

छंदक : *(निकट जाकर)* युवराज, आप इस जगह आने के लिए इतने उत्सुक क्यों रहते हैं ? मैं नहीं जानता आप हमेशा जैसे सपनों में खोये-खोये क्यों रहते हैं ?

सिद्धार्थ : जब मैं प्रकृति के आमने-सामने होता हूं तो मैं खुशी में आपे से बाहर हो उठता हूं। बोलो छंदक, क्या दुनिया में ऐसा भी कोई आदमी है जो इस तरह के सरोवर, पेड़-पौधों, झाड़ियों और फूलों के पास आकर खुश न होता हो ?

छंदक : लेकिन यह आपके लिए ठीक नहीं है युवराज। आप जैसे राजवंशी व्यक्ति का प्रकृति पर इतना मोहित होना ठीक नहीं है। महारानी ने मुझे बार-बार कहा है कि मैं आपको जिंदगी की कठिन सचाईयों की याद दिलाऊं। आप जैसे आदमी को अपना मन इन सब खयाली चीजों की तरफ नहीं लगाना चाहिए।

सिद्धार्थ : *(आनंद में डूबकर)* देखो छंदक, आसमान में उड़ने वाले उन पक्षियों को देखो। ये कौन से पक्षी हैं ? लो, अब वे साफ दिखने लगे हैं। ये हंस हैं जो सुंदर पंक्ति में उड़े जा रहे हैं। देखो, कितने सुंदर लगते हैं। वे हमारी तरफ ही आ रहे हैं। आसमान में बादलों के टुकड़े और बादलों के नीचे पांत में उड़े जा रहे हंस। कितना सुंदर दृश्य है।

छंदक : यह कोई असाधारण दृश्य नहीं है युवराज। हमेशा ये पक्षी इसी तरह उड़ते हैं।

सिद्धार्थ : नहीं छंदक, हम आदमी कभी इस सुंदरता को प्राप्त नहीं कर सकते। प्रकृति ने उनके रूप को कितना संवारा है। उनकी मासूम, निष्कपट और मनोहर सुंदरता आंखों को मोह लेती है।

छंदक : युवराज, आप तो फिर वही बात कहने लगे। आप प्रकृति को बहुत प्यार करते हैं।एक बार महाराज ने कहा था कि आप पिछले जन्म में कोई योगी या कवि रहे होंगे, इसीलिए इस जन्म में भी आप प्रकृति में इतने डूबे रहते हैं। आप सचमुच प्रकृति के पुजारी हैं।

सिद्धार्थ : *(मुस्कुराकर)* शायद सचमुच ही मैं पिछले जन्म में योगी रहा होऊंगा। संभवतया इसीलिए इस जीवन में भी मैं योगी की तरह ही रहना चाहता हूं, छंदक।

छंदक : *(डरकर)* नहीं, नहीं, युवराज। ऐसी बातें आपको नहीं करनी चाहिए। आप इस देश के होने वाले राजा हैं। सारे देश पर आपको राज करना है, प्रजा को न्याय देना है। युवराज होने के नाते आपको ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए।

सिद्धार्थ : छंदक, पता नहीं क्यों मुझे राजा बनना और महलों में रहना अच्छा नहीं लगता। *(अचानक चौंक कर)* देखो छंदक, एक हंस तेजी से नीचे गिर रहा है। जल्दी करो, उधर चलकर देखें।

(हंस उनके सामने आकर गिरता है। सिद्धार्थ जल्दी से उसे बांहों में उठा लेता है।)

छंदक : ठहरिये युवराज, ठहरिये। इसमें विष हो सकता है। इसे न छुएं। ओह! कितना रक्त बह रहा है।

सिद्धार्थ : *(घायल हंस पंख फड़फड़ाकर छूटने की कोशिश करता है।)* लगता है किसी दुष्ट शिकारी ने तीर मारकर इसे नीचे गिरा दिया है। इसने किसी का क्या बिगाड़ा था ?

छंदक : बस कीजिये युवराज। इसे छोड़ दीजिये। किसी शिकारी ने इसे मारा होगा। हम क्यों सिरदर्द मोल लें ? रोज सैकड़ों पक्षियों को इसी तरह मारा जाता है।

सिद्धार्थ : *(नाराजगी दिखाकर)* छंदक, जब कोई जीव अंतिम सांस के लिए तड़प रहा हो तो उसे देखकर भी तुम्हें दया नहीं आती ? *(वह हंस के शरीर से बड़े प्यार और ध्यान से मिट्टी और रक्त को पोंछता है। पक्षी डर और घबराहट के कारण छूटने के लिए पंख फड़फड़ाता है।)*

सिद्धार्थ : यह देखो, इसके पंखों के पीछे गहरा घाव हुआ है।

छंदक : *(घाव देखकर)* घाव तो बहुत बड़ा दिखाई देता है। इसे ठीक करना आसान नहीं है। इस घायल पक्षी को प्यार करने से हमें कुछ नहीं मिलने वाला।

सिद्धार्थ : मैं नहीं जानता था कि तुम इतने पत्थर दिल हो। एक गंभीर रूप से घायल पक्षी हमारी शरण में आया है। मनुष्य के नाते हमारा यह कर्तव्य है कि हम इसका उपचार करें और इसकी जान बचायें। भागकर राजवैद्य के पास जाओ और मरहम ले आओ। इसे असह्य पीड़ा हो रही है।

छंदक : *(जाते हुए)* राजकुमार। आप सचमुच बहुत दयालु हैं।

सिद्धार्थ : *(स्वगत)* इस बेचारे पक्षी की किसी से क्या दुश्मनी ? हे भगवान ! क्या गरीबों को तुमने इसीलिए पैदा किया है कि बलवान उन्हे मारें ?

(इतने में हंस को तीर मारकर गिरानेवाला शिकारी देवदत्त आता है।)

देवदत्त : युवराज सिद्धार्थ ! यह मेरा हंस हैं, इसे मुझे दे दीजिये।

सिद्धार्थ : तुम्हारा हंस ? कैसे ?

देवदत्त : हां,मेरा। मैंने इसे तीर मार कर गिराया है।

सिद्धार्थ : तो इसे तुमने घायल किया है ? पापी, इसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था ? क्या तुम्हें किसी की जान लेते शर्म नहीं आती ?

देवदत्त : दयालु राजकुमार। क्षत्रियों का धर्म ही यही है कि बहादुरी के साथ शिकार करें। मैं जन्म से शिकारी हूं और इस हंस पर मेरा अधिकार है। इसे मुझे दे दीजिये।

सिद्धार्थ : मैं यह निर्दोष घायल पक्षी तुम्हें कभी नहीं दूंगा। यह मेरी शरण में आया है। शरण में आये हुए की रक्षा न करना बड़ा पाप है।

देवदत्त : ठीक है युवराज। मैं भी क्षत्रिय हूं, शिकारी हूं और अपने शिकार को मैं वापस ले कर रहूंगा। आप देख लीजिए।



(छंदक आता है।)

सिद्धार्थ : देखो छंदक। देवदत्त कहता है कि वह इस घायल पक्षी को लेकर रहेगा। कुछ भी हो जाये मैं इसे नहीं दूंगा।

(छंदक पक्षी के घाव पर मरहम लगाता है। पक्षी पंख फड़फड़ाता है।)

देवदत्त : *(गुस्से में जाते हुए)* मैं देखता हूं कि आप यह पक्षी मुझे कैसे नहीं देंगे।

सिद्धार्थ : *(पक्षी के पंखों को सहलाते हुए)* मेरे प्यारे हंस, तुम कितने सुंदर हो। छंदक, आदमी सचमुच निर्दयी होता है। वह ऐसे मासूम प्राणी को भी मारने के लिए तैयार हो जाता है, जो उसे कोई हानि नहीं पहुंचाता।

छंदक : युवराज, अब हमें वापस चलना चाहिए। इसे भी साथ ले चलेंगे।

सिद्धार्थ : ठहरो छंदक, इसे कुछ देर सुस्ताने दो। फिर चलेंगे।

(एक सेवक महल से आता है और छंदक से कुछ कहता है।)

छंदक : युवराज, आपको महाराज ने बुलाया है। यह सेवक यही बताने के लिए आया है। आइये, चलें।

(सिद्धार्थ घायल पक्षी को बगल में उठाये छंदक के साथ राजदरबार में आता है। राजा शुद्धोधन सिंहासन पर विराजमान हैं। महामंत्री और अन्य दरबारी आसपास बैठे हैं। देवदत्त सामने बैठा है।)

शुद्धोधन : सिद्धार्थ, तुम्हारे खिलाफ शिकायत है कि तुमने एक क्षत्रिय के शिकार को जबरदस्ती अपने कब्जे में ले लिया है। क्या यह सच है ?

सिद्धार्थ : हां, महाराज। लेकिन मैंने इस पर कब्जा नहीं किया है, बल्कि मैंने इसे शरण दी है। तीर से घायल यह हंस मेरे पास आकर गिरा था। मैंने सोचा पीड़ा से छटपटाते पक्षी की रक्षा करना मेरा धर्म है। यह रहा वह पक्षी।

(गोद में आराम से उठाये पक्षी को दिखाता है।)

शुद्धोधन : क्या तुम समझते हो कि किसी के शिकार को उठाकर तुमने ठीक काम किया है ?

सिद्धार्थ : महाराज, इस सृष्टि में जो भी पैदा होता है उसे जीने का पूरा अधिकार है। किसी को किसी की जान लेने का अधिकार नहीं है। किसी की जान लेना बहुत बड़ा पाप है। हर एक आदमी का कर्तव्य है कि शरण में आये हुए की रक्षा करे। मैं समझता हूं कि मैंने इस निरीह पक्षी को शरण देकर ठीक काम किया है।

शुद्धोधन : (देवदत्त *की तरफ देखकर)* देवदत्त, क्या सिद्धार्थ ठीक कह रहा है?

देवदत्त : नहीं, महाराज। इस पक्षी पर कानून से मेरा अधिकार है, सिद्धार्थ का इसे लेना कानून के विरुद्ध है। मेरा धर्म है कि मैं बहादुरी से लड़कर जिसे जीत लूं, उसे प्राप्त करूं। मैं युद्ध करके इसे प्राप्त करना चाहता हूं।

शुद्धोधन : जरा ठहरो देवदत्त। इस राज्य में हमारी न्याय प्रणाली है और सभी को इसका पालन करना चाहिए। केवल असभ्य लोग ही युद्ध से निर्णय किया करते हैं।

सिद्धार्थ : मैं आपकी बात से सहमत हूं, महाराज।

शुद्धोधन : (महामंत्री *की तरफ देखकर)* महामंत्री जी। इसका ऐसा फैसला कीजिए जो दोनों को मंजूर हो।

महामंत्री : *(कुछ देर सोचते हैं, फिर घायल हंस को* देवदत्त *के पास ले जाते हैं।)* देवदत्त, इस हंस को तुम अपने पास बुलाओ।

देवदत्त : *(दोनों हाथ फैलाकर)* आओ, मेरे हंस, मेरे पास आओ।

(हंस चीखता है और दूर भागने की कोशिश करता है।)



महामंत्री : तुम्हारी बारी खत्म। अब राजकुमार सिद्धार्थ की बारी है। क्या आप हंस को अपने पास बुला सकते हैं ?

सिद्धार्थ : *(प्यार से)* आजा मेरे दोस्त। मेरे पास आ। मैं तुम्हारी देखभाल करूंगा।

(हंस आवाज सुनते ही तुरंत सिद्धार्थ के पास आ जाता है।)

सिद्धार्थ : *(हंस को सहलाते हुए)* तुम मारने वाले और बचाने वाले को पहचानते हो। देखना, मैं जल्दी ही तुम्हें स्वस्थ कर दूंगा।

महामंत्री : महाराज, जीत राजकुमार सिद्धार्थ की हुई। हर जीव की रक्षा की जानी चाहिए, हत्या नहीं। इसलिए यह पक्षी राजकुमार का है। इस नासमझ पक्षी ने हम सबके सामने स्वयं फैसला कर दिया है।

(देवदत उदास होकर बाहर जाता है। छंदक भी उसके पीछे-पीछे जाता है।)

शुद्धोधन : *(खुश होकर)* महामंत्री, आपने बहुत सही न्याय किया है, धन्यवाद। *(सिद्धार्थ की तरफ मुड़कर)* बेटे, प्राणियों के प्रति तुम्हारी ममता प्रशंसनीय है। मैं तुम्हारा भी धन्यवाद करता हूं। ईश्वर तुम्हारा भला करे।

(छंदक फिर देवदत्त के साथ राजदरबार में आता है और सिद्धार्थ के पास बैठ जाता है।)

सिद्धार्थ : देखो छंदक, यह पक्षी मुझसे कुछ खाने को मांग रहा है। मैंने इसे प्यार दिया है न, इसलिए। अब इसे मेरे ऊपर पूरा भरोसा है। इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि सभी प्राणियों को बिना डर के जीने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

छंदक : हम इसे ठीक करने के बाद ऐसी जगह ले जायेंगे जहां यह अपने बंधु-बांधवों और दोस्तों के साथ जा मिलेगा।

सिद्धार्थ : हां, ऐसा करने पर उसे शांति और प्रसन्नता मिलेगी। यह बहुत जल्दी ही ठीक हो जायेगा।

छंदक : राजकुमार आप यहीं रहिये। मैं इसकी पूरी देखभाल करूंगा और इसके चंगा होने के बाद जंगल में छोड़ आऊंगा।

(छंदक हंस को लेने की कोशिश करता है लेकिन हंस उसके हाथ से छूटने के लिए संघर्ष करता है।)

सिद्धार्थ : रहने दो छंदक। इसे कुछ देर मेरे पास ही रहने दो। तुम मेरे वफादार सेवक हो तो भी इस पक्षी की देखभाल मैं खुद करूंगा। जो कष्ट में हैं, उनकी सेवा करके मुझे बहुत सुख मिलता है। *(वह पक्षी को उठाकर छंदक और देवदत्त के साथ बाहर जाने की महाराज से अनुमति लेता है।)*

शुद्धोधन : *(राजकुमार से)* बेटा सिद्धार्थ! सचमुच मुझे तुम पर गर्व है। मुझे विश्वास है कि तुम हमेशा इसी तरह सभी प्राणियों के प्रति दया और क्षमा का भाव रखोगे। मेरी सारी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि इस बीच तुम ज्यादा से ज्यादा वक्त राज्य का काम-काज सीखने में लगाओगे। अब जाओ बेटे, तुम बाग में खेलने जा सकते हो। *(देवदत्त से)*, देवदत्त, तुम भी सिद्धार्थ के साथ जाओ और हमेशा की तरह मिलकर खेलो। *(उठते हुए)* आज की सभा यहीं समाप्त होती है।

(सब लोग धीरे-धीरे उठकर जाते हैं।)

पर्दा

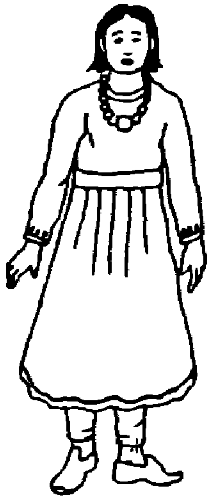
अंग्रेजी अनुवाद : तारा नाथ शर्मा

चित्र : टेकबीर मुखिया

वेशभूषा



शुद्धोधन



सिद्धार्थ

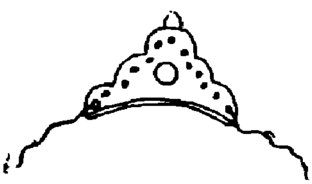


देवदत्त

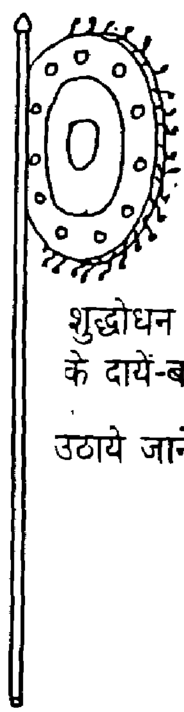


छंदक

मंच-सज्जा



शुद्धोधन का मुकुट



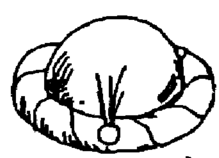
शुद्धोधन के दायें-बायें उठाये जाने वाले ध्वज



तरकस



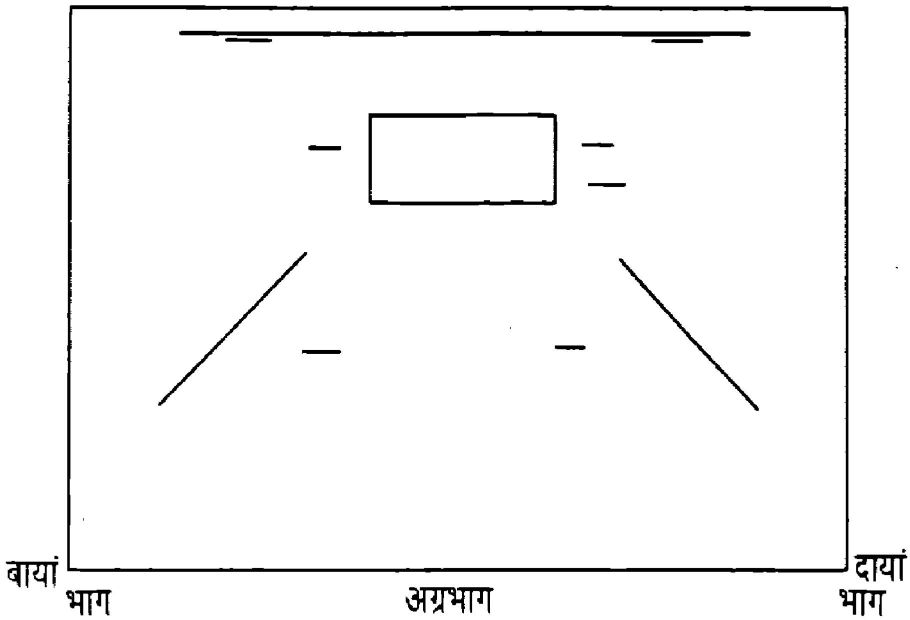
कमान



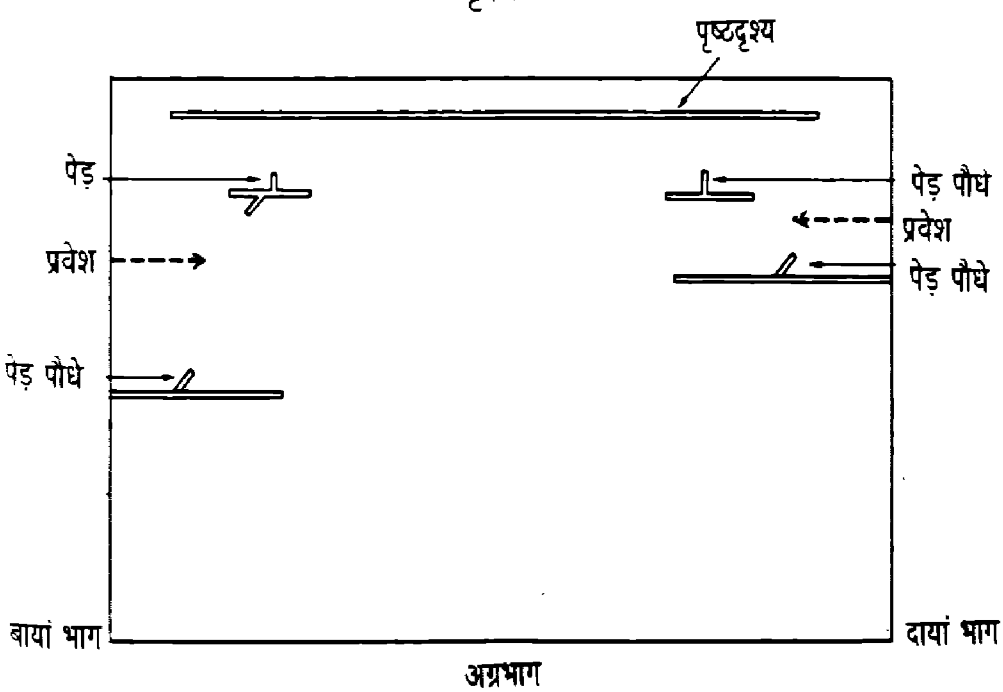
देवदत्त की टोपी

मंच की रूपरेखा

« दृश्य 1 »

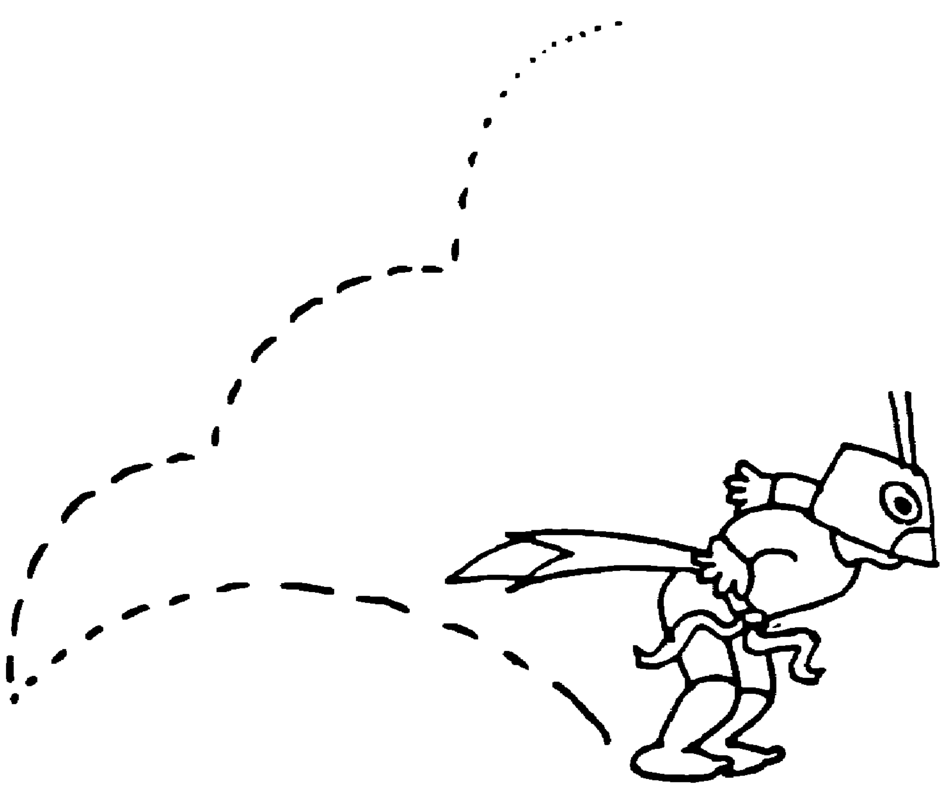


« दृश्य 2 »



टीनी वीनी

फिलिपीन्स



टीनी वीनी

--रेने ओ. विलानूवा

● *पात्र-परिचय*

टीनी वीनी	एक नन्हा टिड्डा जो काम करने को बहुत उत्सुक है।
बड़ा टिड्डा	कामचोर और सुस्त बूढ़ा टिड्डा
मुर्गी	प्यार करनेवाली मुर्गी मां
चिकचिक	मुर्गी की नन्ही बेटी
बाज	स्थानीय पक्षी
प्रधान चींटा	चींटों का अधिकारी (निरीक्षक)
पांच कर्मचारी	प्रधान चींटे के अधीन काम करने वाले

(गर्मियों का मौसम। गांव के बाहर खुला खेत। सिर्फ एक स्टूल (या पत्थर) मंच के बीच में हैं—सेट का संकेत देने के लिए। बड़ा टिड्डा *आता है। वह खुशी से इधर-उधर उछलता है और अपने दोस्त* नन्हे टिड्डे, टीनी वीनी *को पुकारता है।)*

बड़ा टिड्डा : आओ टीनी वीनी। अपनी नन्ही-नन्ही टांगों को सीधा कर लो। नन्हे पंखों को फैला लो। आओ हम देहात की हरियाली भरे खेत में खूब उछलें-कूदें और मौज करें।

टीनी वीनी : *(पर्दे के पीछे से)* आता हूं।

(बड़ा टिड्डा *नाचने की तरह उछल-कूद करता है।)*

बड़ा टिड्डा : *(गाता है।)*

मैं उछलूंगा, मैं कूदूंगा
जब तक सूरज ऊपर है
मैं उछलूंगा, मैं कूदूंगा।
जब तक रात नहीं होती
मैं उछलूंगा, मैं कूदूंगा
मैं कूदूंगा, . . . कूदूंगा . . . कूदूंगा।

(बड़ा टिड्डा *रुककर* टीनी वीनी *को देखता है)*

बड़ा टिड्डा : टीनी वीनी! तुम इतनी देर क्यों लगा रहे हो ?

टीनी वीनी : *(पर्दे के पीछे से)* अभी आया। अभी आया।

(टीनी वीनी *लंगड़ाता हुआ आता है और पत्थर पर बैठ जाता है।)*

बड़ा टिड्डा : आओ टीनी वीनी ! आज तो खेलने-कूदने का दिन है। आज मई का पहला दिन है और चारों तरफ फूल-खिले हैं। मधुमक्खियों के झुंड उमड़े पड़े हैं। वे एक फूल से दूसरे फूल तक उड़ रही हैं। और तितलियां. . . ? वे एक छोटी तितली का पीछा कर रही हैं जिसके पंखों पर लाल धब्बे हैं। *(तितलियों को देखकर हंसता है।)* वह नन्ही तितली तो निकल भागी। आओ टीनी वीनी, हम भी उनके पीछे भागें।

टीनी वीनी : *(अपना पैर पकड़कर)* नहीं, हम यहां रुक कर सुस्ता लें।

बड़ा टिड्डा : रुक कर क्या करेंगे ?

टीनी वीनी : मुझे लगता है, मेरे पांव में चोट लग गयी है। सुबह से हम भाग-दौड़ और उछल-कूद रहे हैं। *(वह अपना पांव सहलाता है।)*

बड़ा टिड्डा : तुम्हारे पांव में चोट . . . *(हंसता है)* यह तो हो ही नहीं सकता। हम तो अभी पांच मील भी नहीं दौड़े हैं। और उससे आधी दूरी तक भी उछल-कूद नहीं की है। टीनी वीनी, हम अभी अपने घर से कुछ ही दूर आये हैं। और तुम कहते हो तुम्हारे पांव में चोट आ गयी ?

टीनी वीनी : *(पांव दिखाकर)* यह देखो, मेरा अंगूठा तो सूज कर लाल हो गया है।

बड़ा टिड्डा : मैं तुम्हारी जगह होता तो इतने छोटे अंगूठे की परवाह नहीं करता।

टीनी वीनी : तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है ?

बड़ा टिड्डा : अब आओ भी। तुम्हें जरूरत है थोड़ा और उछलने-कूदने और दौड़ने की। जरा अपने नन्हे, कमजोर पैर को ताकत दो, एक मिनट में सारा दर्द हवा हो जायेगा। उठो, टीनी वीनी !

टीनी वीनी : नहीं।

बड़ा टिड्डा : कितनी चोट आ गयी तुम्हारे अंगूठे को। हम टिड्डों की जात को छोटे-मोटे दर्द और छोटे-मोटे अंगूठे की छोटी-मोटी पीड़ा की चिंता नहीं करनी चाहिए।

टीनी वीनी : मैंने कहा न, मैं नहीं जाऊंगा।

बड़ा टिड्डा : अच्छा, अच्छा। इतना तो बता दो कि तुम इतनी अच्छी धूप वाले दिन में करोगे क्या ?

टीनी वीनी : क्यों ? थोड़ी देर आराम करूंगा और फिर वही करूंगा जो मेरी मां ने कहा था।

बड़ा टिड्डा : वह क्या ?

टीनी वीनी : *(जोर देकर)* भोजन की तलाश।

बड़ा टिड्डा : किसकी तलाश. . . ? *(हंसता है)* भोजन की तलाश ? कभी-कभी मुझे लगता है कि तुम्हारा नाम सिरफिरा वीनी होना चाहिए था। गर्मी के पहले दिन भोजन की तलाश ? एक टिड्डे के मुंह से ऐसी बेतुकी बात पहले कभी नहीं सुनी थी।

टीनी वीनी : इसमें बेतुकापन क्या है ?

बड़ा टिड्डा : क्योंकि यह मई का महीना है। मई का . . . समझे ?

टीनी वीनी : इससे क्या होता है ?

बड़ा टिड्डा : यह समय उछलने-कूदने और मौज मनाने का है।

टीनी वीनी : मौज मनाने का ?

बड़ा टिड्डा : *(उछलते और नाचते हुए)* हां . . .
यह मई का महीना है
टिड्डे मौज मनायेंगे
हरे-हरे पत्तों पर
रंग-बिरंगे फूलों पर
नाचेंगे, गायेंगे
आओ खेलें चोर-सिपाही
यह मई का महीना
टिड्डे उछलेंगे, कूदेंगे।

टीनी वीनी : लेकिन मैं तो यह नहीं कर सकता।

बड़ा टिड्डा : क्यों नहीं कर सकते। मेरी तरह अपने नन्हे पंख फैलाओ। *(पंख फैलाकर)* देखो, इस तरह और फिर धीरे-धीरे कदम रखकर मेरे पीछे आओ। *(धीरे-धीरे उछलकर)* ऐसे कोशिश करो टीनी, कोशिश करो . . . ।

(टीनी वीनी *अपने पंख फैलाकर* बड़े टिड्डे *की तरह चलने की कोशिश करता है)*

बड़ा टिड्डा : हां, यह हुई न बात।.तुम यह नाच कर सकते हो, कर सकते हो।

टीनी वीनी : *(रुककर)* नहीं, मैं नहीं कर सकता।

बड़ा टिड्डा : तुम कर सकते हो। तुम बहुत अच्छा कर रहे हो। मुझे तो असल में तुम्हारी नकल करनी चाहिए।

टीनी वीनी : नहीं, बात यह नहीं है।

बड़ा टिड्डा : तो फिर क्या बात है ?

टीनी वीनी : मैंने तुम्हें बताया था न। मुझे भोजन की तलाश करनी है। मां ने कहा था।

बड़ा टिड्डा : लेकिन तुम्हारी मां ने यह भी तो कहा होगा कि तुम खेल भी सकते हो।

टीनी वीनी : कहा था। लेकिन उसने मुझे रास्ते में भोजन जमा करने को भी कहा था। मैं अब काफी खेल चुका हूं। अब खेलने का समय खत्म हो गया है।

(जाने लगता है।)

बड़ा टिड्डा : टिड्डों की जिंदगी में उछलने-कूदने की कोई सीमा नहीं होती। तुम गलती कर रहे हो टीनी वीनी।

टीनी वीनी : *(रुककर)* बहुत बड़ी गलती ?

बड़ा टिड्डा : हां, बहुत बड़ी गलती जो एक टिड्डा गर्मी के इतने बढ़िया दिन में कर सकता है।

टीनी वीनी : मेरी समझ में नहीं आता।

बड़ा टिड्डा : क्योंकि छोटे और जिद्दी हो। चुपचाप बैठो, मैं तुम्हें बताता हूं। चूंकि तुम्हारी छोटी टांगे उछलती हैं इसलिए छोटा टिड्डा इतनी अच्छी तरह उछलता है। मैं गर्मी के इस खूबसूरत दिन को बेकार जाता नहीं देख सकता।

टीनी वीनी : बड़े टिड्डे, अच्छा बताओ। मैं तुम्हारी बात सुनने का इंतजार कर रहा हूं।

बड़ा टिड्डा : (टीनी वीनी *के गिर्द चक्कर लगाकर)* जरा रुको, मुझे सोचने दो।

टीनी वीनी : (बड़े टिड्डे *की नकल में चक्कर लगाकर)* सोचना क्या है ?

(बड़ा टिड्डा *गोल दायरे में घूमता रहता है।)*

टीनी वीनी : किस बारे में सोचना है ?

बड़ा टिड्डा : *(रुककर)* सोचना यह कि तुम्हें कैसे समझाऊं कि टिड्डे गर्मी के पहले दिन भोजन की तलाश में नहीं जाते हैं। मेरा मतलब है, मैं जो तुम्हें बताना चाहता था वह साफ-साफ यही है कि *(जोर देकर)* टिड्डे गर्मी के पहले दिन भोजन की तलाश में नहीं जाते।

(अंतराल। टीनी वीनी *सोच में पड़ जाता है।)*

टीनी वीनी : *(तभी अचानक)* लेकिन क्यों ?

बड़ा टिड्डा : मैं जानता था। मैं जानता था। इस बातचीत का कहीं अंत नहीं होगा क्योंकि तुम्हारे पास क्यों के सवालों का एक खत्म न होने वाला लंबा सिलसिला है। आखिर, क्या तुम सिर्फ मौज नहीं कर सकते ? अरे, उछलो, कूदो, मौज करो और 'क्यों' 'क्यों' को भूल जाओ। क्यों-क्यों के सवाल करते रहोगे तो जीना मुश्किल हो जायेगा।

टीनी वीनी : लेकिन मैं अब भी जानना चाहता हूं, ऐसा क्यों होता है ?

बड़ा टिड्डा : (टीनी वीनी *की नकल करते हुए)* मैं अब भी जानना चाहता हूं, ऐसा क्यों होता है? *क्यों को सचमुच जानना चाहते हो? गहरी सांस लेकर आगे मार्च करता है और एक-एक वाक्य पर* टीनी वीनी *को सलाम करता है।)* . . . गर्मी के दिनों में . . . भोजन आसानी से मिलता है . . . गर्मी के मौसम में . . . भोजन की कमी नहीं होती . . . इसीलिए . . .

(बड़ा टिड्डा *जोर-जोर से सांस लेकर* टीनी-वीनी *के पीछे बैठ जाता है।* टीनी वीनी *थोड़ी देर के लिए चुप रहता है।)*

टीनी वीनी : तुम जानते हो बड़े टिड्डे, मैं सोच रहा हूं कि . . .

बड़ा टिड्डा : नहीं, अब नहीं।

टीनी वीनी : बड़े टिड्डे सुनो, सुनो तो सही बड़े भाई ! बस . . .

बड़ा टिड्डा : *(अपने कान बंद करके)* मैं सुन रहा हूं।

टीनी वीनी : चूंकि गर्मी में भोजन आसानी से इकट्ठा किया जा सकता है. . .

बड़ा टिड्डा : गर्मी में भोजन बड़ी मात्रा में मिलता है।

टीनी वीनी : शायद इसीलिए हमें गर्मी में भोजन जमा करना चाहिए।

बड़ा टिड्डा : *(उठकर)* मैं यह सब नहीं सुन सकता। (टीनी वीनी *की तरफ इशारा करके)* यह मुझसे बात नहीं कर रहा है। यह मेरे सामने है ही नहीं। यह सिर्फ एक सपना है।

टीनी वीनी : अरे, मेरी बात तो सुनो बड़े . . .

बड़ा टिड्डा : नहीं, नहीं, नहीं।

टीनी वीनी : क्या मैं ठीक नहीं कह रहा हूं ? क्या गर्मी का मौसम भोजन इकट्ठा करने के लिए सबसे अच्छा मौसम नहीं है ? आखिर तुम्हीं तो कह रहे थे कि गर्मी के मौसम में भोजन की कमी नहीं होती। तो फिर क्यों नहीं हम भोजन इकट्ठा करें और जमा कर लें। गर्मी के बाद बरसात आयेगी। वह समय तो भोजन इकट्ठा करने का नहीं है।

बड़ा टिड्डा : टीनी वीनी ! मैं इतना ही कह सकता हूं कि तुम बेवकूफ हो। *(बाहर जाता है।)*

टीनी वीनी : ठहरो, ठहरो। मुझे इतना तो बता दो कि भोजन कैसे इकट्ठा किया जाता है। मैं कैसे भोजन इकट्ठा करूं ?

बड़ा टिड्डा : *(पर्दे के पीछे से)* टीनी वीनी तुम बेवकूफ हो।

(टीनी वीनी *पत्थर पर बैठकर सोचता है।)*

टीनी वीनी : ठीक है। मैं खुद ही सीखूंगा कि भोजन कैसे इकट्ठा किया जाता है। (*वह अपने पैर पर हाथ से मालिश करता है।)* ओह, यह पैर भी दर्द कर रहा है। *(पर्दे के पीछे* मुर्गी *अपनी बेटी* चिकचिक *के साथ बातचीत करती हुई सुनाई देती है।)*

मुर्गी : *(मुर्गी की आवाज करके)* ठहरो, जब तक मैं न आऊं, वहीं ठहरो।

चिकचिक : *(उसी तरह आवाज करके)* लेकिन मैं इस दड़बे में नहीं रहना चाहती।

(टीनी वीनी *डर जाता है। वह छिपने की कोशिश करता है। वह मंच के पिछले भाग में बायीं ओर चला जाता है।* मुर्गी *और* चिकचिक *आती हैं।* मुर्गी चिकचिक *के पीछे दौड़ती है। वे कुड़कुड़ करती मंच पर दौड़ती हैं। उनकी नजर* टीनी वीनी *पर नहीं पड़ती जो अपने को छिपाने की कोशिश कर रहा है। अंत में* मुर्गी चिकचिक *को पकड़ लेती है।)*

मुर्गी : अब फिर मत करना ऐसा। मेरी तो सांस फूल गयी। मैं तो बेहोश हो चली थी।

चिकचिक : लेकिन मैं उस दड़बे में सारी जिंदगी नहीं बिताना चाहती।

मुर्गी : कौन कहता है तुम सारी उम्र दड़बे में रहोगी ? तुम्हें सिर्फ सुबह वहां बितानी हैं तब तक, जब तक बाज नाश्ता नहीं कर लेता।

चिकचिक : यह तो काफी लंबा समय है। मैं अब बड़ी हो गयी हूं मां। देखो मेरे पैर कितने बड़े-बड़े हैं। मजबूत भी हैं। *(पांव पटककर)* और इनसे मैं बहुत तेज दौड़ सकती हूं।

(वह फिर दौड़ती है जैसे मां से छिपना चाहती हो।)

मुर्गी : *(बैठती है और पंखों से पसीना सुखाती है)* हां, हां, तुम बहुत तेज भागती हो। मैंने तुम्हें झट से पकड़ लिया था और मैं तो बाज भी नहीं हूं।

चिकचिक : तुम मुझे इसलिए पकड़ सकी क्योंकि मैंने दौड़ना बंद कर दिया था ताकि तुम मुझे पकड़ सको।

मुर्गी : *(बनावटी हंसी से)* वाह . . . वाह। मेरी बेटी बहुत अक्लमंद है। वह अपनी बूढ़ी मां का दिल रखना जानती है। खैर, तुम देख लेना मैं तुम्हें पकड़कर रहूंगी।

(मुर्गी फिर चिकचिक के पीछे दौड़ लगाती है। वह उसे पकड़ लेती है। चिकचिक अपने को छुड़ाने की कोशिश करती है।)

मुर्गी : *(उसे छोड़ देती है।)* बेटी, मैं तुम्हें कहती हूं। तुम अभी छोटी हो, नन्ही हो . . . बिल्कुल मटर जितनी। तुम बाज का मुकाबला नहीं कर सकती जो तुम्हें अपना नाश्ता बनाने पर तुला है।

टीनी वीनी : माफ कीजिये. . .

(मुर्गी और चिकचिक चौंकती हैं और डरकर भागती हैं)

टीनी वीनी : ठहरिये . . . ठहरिये। मैं तो टीनी वीनी हूं। छोटा सा टिड्डा। मैं आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता।

चिकचिक : मां, मां, यह तो छोटा सा टिड्डा है।

मुर्गी : हमने सोचा तुम बाज हो।

टीनी वीनी : तुम बहुत डरती हो।

मुर्गी : क्योंकि यह बाज के नाश्ते का समय है।

चिकचिक : इसलिए हमें इस खुले खेत में तुम्हारे जैसे छोटे से कीड़े से बातें नहीं करनी चाहिए। बाज किसी भी वक्त आकर अपना नाश्ता ले जा सकता है।

टीनी वीनी : बाज ?

चिकचिक : आसमान में उड़नेवाला सबसे कमीना पक्षी।

मुर्गी : बाज हर सुबह अपना भोजन इकट्ठा करता है। खतरनाक बात यह है कि वह मेरी बेटी चिकचिक जैसे बच्चों को नाश्ते के लिए बहुत पसंद करता है।

टीनी वीनी : क्या कहा आपने ? भोजन इकट्ठा करता है ?

चिकचिक : क्या तुम बहरे हो ?

टीनी वीनी : नहीं, नहीं। मैं जानना चाहता था कि मैंने ठीक सुना या नहीं। क्या बाज जानता है कि भोजन कैसे इकट्ठा किया जाता है ?

चिकचिक : *(अभिमान से)* . . . हां, बाज यह काम अच्छी तरह जानता है।

मुर्गी : *(डर कर)* बाज ने पिछले कुछ हफ्तों में ही सात छोटे मुर्गे और पच्चीस चूज़े खा डाले हैं। ओह . . .

टीनी वीनी : इसका मतलब, बाज बड़ा समझदार है। वह भोजन इकट्ठा करना जानता है।

चिकचिक : लेकिन इस बार नहीं। नहीं, वह मुझे नहीं पकड़ सकता।

मुर्गी : तो फिर चलो, हमें यहां से भाग लेना चाहिए। चलो दड़बे में जाकर छिप जाओ। चलो मेरी नन्ही बिटिया। *(वह* चिकचिक *को पकड़कर खींचती है।)*

चिकचिक : नहीं, मां . . .

मुर्गी : क्या है ?

चिकचिक : उस अंधेरे, बदबूदार दड़बे में छिपने से कोई फायदा नहीं।

मुर्गी : तो फिर तुम कहां छिपोगी ?

चिकचिक : कहीं भी नहीं। हम यहीं रहेंगे।

मुर्गी : यहीं।

टीनी वीनी : तुम्हें बाज से डर नहीं लगता नन्ही ?

चिकचिक : डर लगता है लेकिन मैं सारी उम्र उससे डरी-डरी नहीं रह सकती। यहां तक कि सारी सुबह भी नहीं। बाज के डर से मैं उस अंधेरे दड़बे में नहीं छिपी रह सकती।

मुर्गी : तो फिर मेरी बहादुर बेटी, हम क्या करेंगे ?

चिकचिक : हमें उससे लड़ना होगा।

मुर्गी : बाज से लड़ना होगा ? तुम्हारा छोटा सा दिमाग खराब है क्या? *(वह* चिकचिक *को पकड़कर बाहर जाने लगती है।)* सपने देखना छोड़ दो और भूल जाओ कि तुम चूज़ों को खाने वाले उस राक्षस से लड़ सकती हो। चलो, दड़बे में।

चिकचिक : नहीं मां। मेरी तरकीब सुनो। ऐसी तरकीब है कि बाज का काम-तमाम हो जायेगा।

(पृष्ठभूमि से बाज *की तीखी आवाज।* मुर्गी *उसे सुनकर डर जाती है।)*

मुर्गी : बाज आ रहा है। चलो छिप जायें। चलो, दड़बे में। दड़बे में . . .

(मुर्गी चिकचिक *को पकड़ लेती है। दोनों बायीं ओर बाहर जाती हैं।* बाज *दायीं ओर से उछलकर आता है। वह* टीनी वीनी *के पीछे दौड़ता है जो उसके बड़े और तेज पंजों से छूट कर भागने की कोशिश में फुदकता है।)*

बाज : हो . . . हो हू . . . खुले खेत में नाश्ता . . .

टीनी वीनी : मुझे जाने दो, मुझे जाने दो।

बाज : *(उसे छोड़ता है।)* . . . अरे . . . लगता है मैं बूढ़ा हो रहा हूं। क्या मेरी नजर कमजोर हो गयी है ? मुझे लगा, मैंने मुर्गी का चूज़ा पकड़ा है।सच बात तो यह है कि मैंने इस जगह पर तीन प्राणी देखे थे। लेकिन मिला क्या ? यह जरा सा टिड्डा *(बहुत निराश होता है।)* नहीं, मैं अपने भोजन की आदत नहीं बदलूंगा। मुर्गी के चूज़ों का नाश्ता निश्चय ही बहुत अच्छा होता है।

टीनी वीनी : और मैं मुर्गी का चूज़ा नहीं हूं। तुम बहुत बड़ी गलती करने वाले थे। तुमने मुझे मसल ही दिया था।

बाज : तुम यहां खुले खेत में क्या कर रहे हो ? तुम्हें तो इधर-उधर उछलना-कूदना चाहिए था।

टीनी वीनी : तुम ठीक कहते हो। लेकिन मेरी मां ने कहा था कि मैं भोजन की तलाश करूं।

बाज : तो तुम मेरा साथ दोगे ?

टीनी वीनी : मैंने सुना है कि तुम भोजन इकट्ठा करने में बहुत कुशल हो। क्या तुम मुझे यह काम सिखा सकते हो ?

बाज : यह क्या है ? क्या मेरा इंटरव्यू लिया जा रहा है ? क्या हम अभी उड़ान में हैं।

टीनी वीनी : मेहरबानी करके मेरा मजाक मत उड़ाओ। मैं सचमुच जानना चाहता हूं कि भोजन कैसे इकट्ठा किया जाता है। मुझे बताओ, तुम यह काम कैसे करते हो ?

बाज : काम . . . ? का . . . म . . . काम ?

टीनी वीनी : हां, हां, तुम काम करते हो न ?

बाज : नहीं, मैं काम नहीं करता।

टीनी वीनी : तुम काम नहीं करते ?

बाज : *(आराम से बैठकर)* नहीं करता।

टीनी वीनी : तो फिर मैंने अभी-अभी जो सुना वह झूठ था।

बाज : क्या सुना तुमने मेरे बारे में ? क्या मेरे पीठ पीछे मेरी बातें की जाती हैं ?

टीनी वीनी : नहीं . . . मैंने सुना कि पिछले कुछ हफ्तों में ही . . .

बाज : हां, हां, . . . पिछले कुछ हफ्तों में ही मैंने . . . क्या ?

टीनी वीनी : *(हिम्मत से)* कुछ हफ्ते में तुमने सात छोटे मुर्गे और पच्चीस मुर्गी के चूज़े खाये हैं। क्या यह सच है ?

बाज : हूं . . . मुझे नहीं पता था कि कोई मेरे भोजन का हिसाब-किताब रखता है लेकिन यह गलत है। सात छोटे मुर्गे और सत्ताइस मुर्गी के चूज़े तीन हफ्ते में। सही हिसाब यही है।

टीनी वीनी : तो फिर बताओ, तुम कैसे काम करते हो ?

बाज : मैं काम नहीं करता। मैं तुम्हें कितनी बार बताऊंगा कि बाज काम नहीं करते।

टीनी वीनी : तो फिर तुम कैसे . . . ?

बाज : *(उठता है)* टिड्डे की बकवास बहुत हो चुकी। सुनो, बाज अपने भोजन के लिए काम नहीं करते, भोजन को हथियाते हैं।

टीनी वीनी : हथियाते हैं ?

बाज : तुम्हारा दिमाग कमजोर लगता है। अरे हथियाते हैं, झपट कर उठा लेते हैं। जब हम झपट कर हथिया सकते हैं तो काम क्यों करें ? हथियाना इतना थकाने वाला काम नहीं है जितना काम करना। यह तो मजा है। मजा . . . । मैं तुम्हें दिखाता हूं। *(वह मुर्गी के चूज़े को पकड़ने का अभिनय करता है।)* हम तेज नजर से आसमान में उड़ते हैं तब तक जब तक हमें नीचे कोई चीज नहीं दिखाई देती, छोटी सी, पीली, नरम-नरम पंखों वाली। *(जेब से पीला रूमाल निकालकर जमीन पर फेंकता है।)* हम उड़ते रहते हैं, उड़ते रहते हैं, ठीक क्षण की तलाश में ताकि हम ठीक तरह से झपट्टा मार सकें। और तब शूं . . . . करके अपने नाश्ते को झपटने नीचे आते हैं *(रूमाल को उठाकर)* और यह रहा मुर्गी का चूज़ा, मेरा नाश्ता।

टीनी वीनी : मुर्गी के चूज़ों का नाश्ता।

बाज : हां, हां, मुर्गी के चूज़ों का नाश्ता। नरम-नरम हड्डियां, मीठा-मीठा मांस। भोजन की इन सारी बातों ने मेरी भूख को बहुत तेज कर दिया है। मुझे मुर्गी के चूज़े की गंध आ रही है।

(मुर्गी और चिकचिक *जाल के साथ आती हैं। वे* बाज *पर जाल फेंकती हैं।* बाज *फंस जाता है और वह जाल से निकलने के लिए छटपटाता है।)*

बाज : यह क्या है ? मुझे छोड़ो, छोड़ो।

चिकचिक : नहीं श्रीमान बाज। अब नहीं छूट सकते।

मुर्गी : तरकीब कामयाब हुई, तरकीब कामयाब हुई। मेरी प्यारी बेटी तुम तो बहुत चतुर निकली। दुष्ट बाज को हमने पकड़ ही लिया।

चिकचिक : *(जाल और* बाज *को खींच कर बाहर की ओर ले जाती है।)* हम इसे नहीं छोड़ेंगे। तुम देखना टीनी वीनी . . .

मुर्गी : (टीनी वीनी *से)* शुक्रिया, तुमने उसे बातों में लगाये रखा। वह बोलने का इतना शौकीन है कि उसने जाल की तरफ ध्यान ही नहीं दिया।

बाज : *(बाहर जाते हुए)* मुझे जाने दो। मैं कसम खाता हूं। अब मैं मुर्गी के चूज़ों को हाथ भी नहीं लगाऊंगा। मैं उपवास रखूंगा। मैं वायदा करता हूं . . .

*(*टीनी वीनी *को छोड़कर सब बाहर जाते हैं।)*

टीनी वीनी : मैं समझता हूं कि हथियाना, भोजन इकट्ठा करने का बहुत अच्छा तरीका नहीं है। मुझे काम करना और भोजन इकट्ठा करना कौन सिखा सकता है ?

(पृष्ठभूमि से हार्न की आवाज आती है और फिर . . .)

प्रधान चींटा : *(कई बार हार्न बजाकर)* लाइन बनाओ . . . सीधी लाइन। इससे काम आसान होगा।

(पांच कर्मचारी चींटे *और* प्रधान चींटा *जो हार्न बजा रहा है, मंच पर आते हैं। लाइन के अंत में रोटी का एक बड़ा टुकड़ा है।)*

प्रधान चींटा : अब देखना है कि रोटी के इस टुकड़े को हम इस तरफ ले जा सकते हैं या नहीं। इसे उठाओ और पास के चींटे को दे दो . . . चलो एक दो तीन . . . एक दो तीन . . .

*(*चींटे *बोलते हैं एक . . . दो . . . तीन कहकर रोटी के भारी टुकड़े को खींचने लगते हैं और पास खड़े दूसरे* चींटे *को देने लगते हैं।)*

टीनी वीनी : माफ कीजिये . . .

(चींटे *रुककर* टीनी वीनी *को देखते हैं। रोटी का टुकड़ा गिर जाता है।)*

प्रधान चींटा : देखो, तुमने क्या कर दिया ?

टीनी वीनी : माफ कीजिये . . . मैं यह जानना चाहता था . . .

प्रधान चींटा : हमें करीब सौ रोटी के टुकड़े ढो कर घर लाने हैं। हमारे पास एक सवाल के लिए भी वक्त नहीं है।

टीनी वीनी : इसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा। बहुत सीधा सा सवाल है।

प्रधान चींटा : तुम देख नहीं रहे हो कि हम काम कर रहे हैं ?

टीनी वीनी : देख रहा हूं। तभी तो पूछना चाहता हूं *(संकोच से)* अगर आप इजाजत दें तो . . .

कर्मचारी चींटा 1,2 : (प्रधान चींटे *से)* आओ पूछ लेते हैं, यह क्या कहना चाहता है।

कर्मचारी चींटा 3,4,5 : हां, हां, हम कुछ देर रुक सकते हैं।

कर्मचारी चींटे : हम थोड़ी देर के लिए आराम कर लें और इसकी बात भी सुन लें।

(सभी चींटे *एक तरह बैठ जाते हैं।)*

प्रधान चींटा : ठीक है, लेकिन वक्त बहुत कम है।

(वह चींटों *के पास जाकर उन्हीं की तरह बैठ जाता है।* सभी चींटे *एक साथ आगे सरकते हैं।)*

टीनी वीनी : मैं जानना चाहता हूं कि तुम काम क्यों कर रहे हो ?

(चींटे *एक साथ एक ही जगह सिर खुजलाते हैं।)*

टीनी वीनी : गर्मी का मौसम है और खेलने-कूदने के लिए बहुत अच्छा दिन है। (चींटें *एक साथ ठोड़ी खुजलाते हैं।)* दौड़ने, उछलने-कूदने का अपना ही मजा है। (चींटे *एक साथ आह भरते हैं।)*

प्रधान चींटा : यह तो सोचने और समझने की बात है। दार्शनिक पहलू . . .

कर्मचारी चींटे : छोड़ो, छोड़ो।

कर्मचारी चींटा 1,2 : यह सीधा सा सवाल पूछ रहा है।

कर्मचारी चींटा 3,4,5 : इसे सीधा सा जवाब दो।

कर्मचारी चींटे : अपना दर्शन मत बघारो।

प्रधान चींटा : अच्छा, अच्छा *(नाटकीय ढंग से)* देखो छोटे टिड्डे . . .

कर्मचारी चींटा 1,2 : थोड़े में जवाब दो।

कर्मचारी चींटा 3,4,5 : मतलब की बात करो।

प्रधान चींटा : भई, मुझे थोड़ा वक्त दो। मैं इसे एक शब्द में कैसे समझा सकता हूं।

टीनी वीनी : मैं सुन रहा हूं।

प्रधान चींटा : देखो, हम जानते हैं कि गर्मी के दिनों में खेलने-कूदने में बड़ा मजा आता है।

कर्मचारी चींटे : *(बैठने की मुद्रा बदलकर)* और हम खेलते-कूदते भी हैं।

प्रधान चींटा : लेकिन यह मौसम सिर्फ मजे करने के लिए नहीं है।

कर्मचारी चींटे : *(बैठने की मुद्रा बदलकर)* एक दिन यह मौसम खत्म हो जाता है।

प्रधान चींटा : इसलिए वक्त पर काम करो . . .

कर्मचारी चींटे : और वक्त पर खेलो।

कर्मचारी चींटे : गर्मी का मौसम खत्म होने से पहले।

प्रधान चींटा : *(हार्न बजाकर)* आराम का समय खत्म। चलो उठाओ रोटी के टुकड़े को . . .

(कर्मचारी चींटे *उठते हैं और लाइन में खड़े हो कर अपना काम शुरू करते हैं।)*

टीनी वीनी : ठहरिये . . . एक सवाल और . . .

प्रधान चींटा : हमने सिर्फ एक सवाल का जवाब देने का वायदा किया था।

टीनी वीनी : हां, लेकिन यह सवाल भी बहुत महत्वपूर्ण है।

प्रधान चींटा : और इस महत्वपूर्ण सवाल के बाद एक और महत्वपूर्ण सवाल होगा।

टीनी वीनी : नहीं, यह आखिरी होगा।

कर्मचारी चींटे : *(बैठने की मुद्रा बदलकर)* . . . चलो इसे सुन लें।

(प्रधान चींटा *भी कर्मचारियों की तरह बैठ जाता है।)*

टीनी वीनी : मैं काम करना कैसे सीख सकता हूं ?

(सभी चींटोंको यह सवाल बहुत मूर्खतापूर्ण लगता है। वे हैरान होकर टीनी वीनी *की तरफ देखते रहते हैं।)*

कर्मचारी चींटे : काम करना सीखोगे ?

प्रधान चींटा : मैंने कहा न, हम अपना वक्त बरबाद कर रहे हैं।

टीनी वीनी : क्या आप मुझे सिखायेंगे ?

कर्मचारी चींटे : *(बैठने की मुद्रा बदलकर)* काम करना सीखोगे ?

प्रधान चींटा : हां, हां, यह वही कह रहा है।

टीनी वीनी : हां, हां।

कर्मचारी चींटे : तुम्हें काम करना नहीं आता ?

टीनी वीनी : मैं सीखना चाहता हूं। तुम देख रहे हो न, मैं अभी बहुत छोटा सा टिड्डा हूं। मैं तो अच्छी तरह उछलना भी नहीं जानता हूं। *(पंख फैला कर उछलने की कोशिश करता है लेकिन पांव दर्द करने पर रुक जाता है।)* यहां आते-आते मेरे पांव में चोट लगी है। मैं जानता हूं कि मैं काम करना जल्दी ही सीख जाऊंगा।' लेकिन इसी वक्त सीखना चाहता हूं। मेरी मां कहती है कि काम का महत्व जितनी जल्दी कोई जान जाये उतना ही अच्छा।

प्रधान चींटा : *(कुछ सोचने के बाद)*. . . तो तुम लोगों का क्या विचार है? *(सभी* चींटे कर्मचारी *उठते हैं और टीनी वीनी के निकट आते हैं। वे उसके पंखों और पैरों की जांच करते हैं।)*

टीनी वीनी : अरे रुको। बंद करो यह सब। तुम मेरे पंखों और मेरी टांगों में उंगलियां क्यों चुभो रहे हो ?

(कर्मचारी चींटे *उसे छोड़ देते हैं।)*

कर्मचारी चींटा 1 : यह तो बहुत छोटा टिड्डा है।

कर्मचारी चींटा 2,3 : टांगें कितनी कमजोर हैं।

कर्मचारी चींटा 4,5 : और चमकदार नाजुक पंख।

प्रधान चींटा : हम इसे सिखायें या नहीं ?

टीनी वीनी : क्या कोई मुश्किल है ?

प्रधान चींटा : टीनी वीनी, हम अक्सर यह काम नहीं करते। इससे हमारे काम में बाधा पड़ेगी।

टीनी वीनी : बस मुझे जरा सा बता दो। मैं सीख लूंगा।

प्रधान चींटा : तुम सचमुच सीखना चाहते हो तो इस रोटी के टुकड़े को खींचने में हमारी मदद करो।

टीनी वीनी : यह रोटी का टुकड़ा ? लेकिन यह तो बहुत भारी है। इसे कोई नहीं उठा सकता।

कर्मचारी चींटे : इसीलिए तो हम सब मिलकर काम करते हैं। साथ मिलकर काम करने से काम का बोझ हल्का हो जाता है।

प्रधान चींटा : *(हार्न बजाकर)* आओ, रोटी के टुकड़े को आगे बढ़ाओ।

(कर्मचारी चींटे *पंक्ति में खड़े होते हैं। आसमान में बादल गरजते हैं।* सभी चींटे *एक साथ आसमान में एक तरफ देखते हैं।)*

प्रधान चींटा : जल्दी-जल्दी। बारिश होने वाली है।

*(*टीनी वीनी *भी चींटों के साथ खड़ा होता है।)*

टीनी वीनी : मैं भी कोशिश करूं ?

प्रधान चींटा : यह खेल नहीं है। हमें जल्दी-जल्दी काम पूरा करना है। बादल गरज रहे हैं। जल्दी ही अंधेरा हो जायेगा। बारिश भी शायद होगी।

टीनी वीनी : मेहरबानी करके मुझे भी कोशिश करने दीजिये।

कर्मचारी चींटे : बच्चे को कोशिश करने दो।

प्रधान चींटा : अच्छा, गिनती सुनो। हमारी लय के साथ लय मिलाओ। जल्दी . . . जल्दी। एक, दो, तीन . . . एक दो तीन . . . ।

*(*चींटे एक, दो, तीन *गिनती गाते हुए रोटी के टुकड़े को आगे बढ़ाते जाते हैं और अंत में रोटी का टुकड़ा* टीनी वीनी *के पास पहुंच जाता है।)*

कर्मचारी चींटे : *(गाते हैं।)* एक, दो, तीन, एक, दो, तीन . . .

(टीनी वीनी रोटी के टुकड़े को पकड़े रखता है लेकिन वह अगले चींटे को उसे नहीं दे पाता। उसका शरीर झुकता है जैसे वह गिरने वाला हो। फिर वह संभल जाता है।)

प्रधान चींटा : शाबाश, जोर लगाओ, जोर लगाओ।

कर्मचारी चींटे : एक, दो, तीन, एक, दो, तीन . . .

(अंत में टीनी वीनी रोटी का टुकड़ा अगले चींटे को पहुंचा देता है। दूसरे चींटे दौड़कर दूसरे छोर पर आ जाते हैं और लाइन को टूटने नहीं देते। टीनी वीनी लाइन से अलग होकर पत्थर पर बैठ जाता है और जोर-जोर से सांस लेता है। चींटे एक, दो, तीन गिनते हुए रोटी के टुकड़े को आगे बढ़ाते रहते हैं। सभी कर्मचारी चींटेरोटी के टुकड़े को खींच कर बाहर ले जाते हैं। मंच पर प्रधान चींटा और टीनी वीनी रह जाते हैं।)

टीनी वीनी : टुकड़ा बहुत भारी है। मुझे लगा मेरी कमर टूट जायेगी।

प्रधान चींटा : तुमने बहुत बहादुरी से काम किया। तुमने न सिर्फ जल्दी काम सीख लिया बल्कि तुम्हारा इरादा भी पक्का है।

टीनी वीनी : आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रधान चींटा : *(जेब से रोटी का टुकड़ा निकालकर)* यह लो।

टीनी वीनी : रोटी का टुकड़ा ?

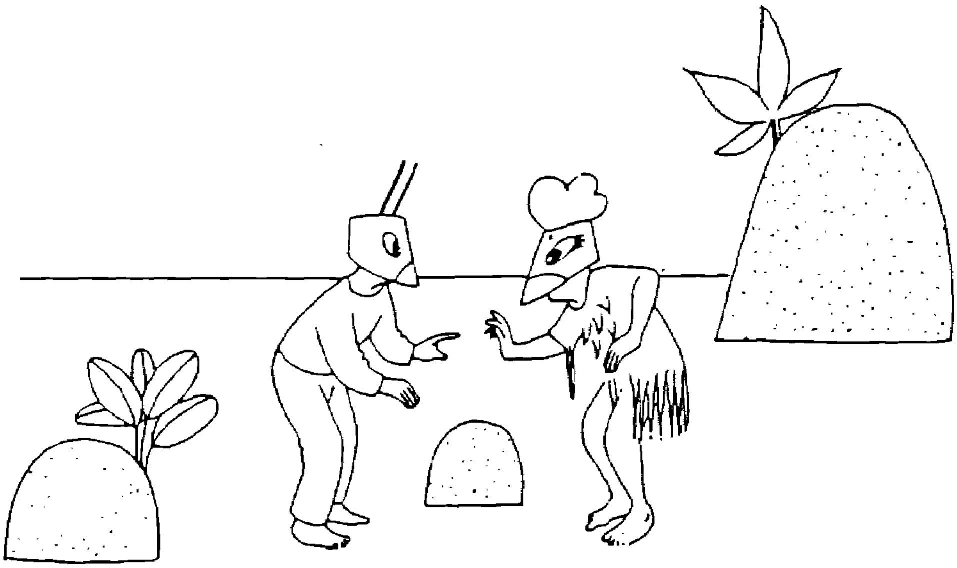
प्रधान चींटा : यह तीन दिन पुराना केले की रोटी का टुकड़ा है। इसमें काफी मिठास है।

टीनी वीनी : धन्यवाद। मुझे आपने काम करना सिखाया, इतना ही बहुत है। अब मैं अपना भोजन स्वयं इकट्ठा कर सकता हूं। मेरी मां बहुत खुश होगी।

प्रधान चींटा : जरूर खुश होगी। इसे ले लो। यह इनाम नहीं है। हर काम करने वाले को मेहनताना मिलना चाहिए। इस बात को हमेशा याद रखना।

टीनी वीनी : लेकिन मैंने उसे थोड़ी दूर तक ही उठाया था।

प्रधान चींटा : इसीलिए तो मैं तुम्हें सारी रोटी नहीं दे रहा हूं, केले की रोटी का एक टुकड़ा दे रहा हूं।



(आसमान में बादलों के गरजने की आवाज। दोनों ऊपर देखते हैं। पृष्टभूमि से चींटों की आवाज सुनाई देती है।)

कर्मचारी चींटे : *(पृष्ठभूमि से)* प्रधान चींटे । बातें बंद करो और अपना काम करो। जल्दी।

प्रधान चींटा : आया . . . आया। *(हार्न बजाकर बाहर जाता है और जाते-जाते* टीनी वीनी *से कहता है)* कहीं आड़ में बैठो, बारिश होने वाली है।

(टीनी वीनी *रोटी के टुकड़े को देखता है।)*

टीनी वीनी : यह तो बोनस की आमदनी है। काम सीखना ही काफी बड़ा इनाम है, मैं इसे ले जाकर मां को दूंगा। वह बहुत खुश होगी।

(बड़ा टिड्डा *नाचता हुआ मंच पर आता है। वह फूलों का मुकुट पहने हुए है।)*

बड़ा टिड्डा : यह मई का महीना है
टिड्डे मौज मनायेंगे
हरे-हरे पत्तों पर

रंग बिरंगे फूलों पर नाचेंगे, गायेंगे
आओ खेलें चोर-सिपाही
यह मई का महीना है
टिड्डे उछलेंगे, कूदेंगे।

टीनी वीनी : कैसे हो टिड्डे राजा ?

बड़ा टिड्डा : तुम अभी यहीं हो ?

टीनी वीनी : मैं अब जा ही रहा हूं। बारिश आने वाली है।

बड़ा टिड्डा : बारिश ? धूप वाले दिन ? मुझे तुम्हारी बात सुनकर हंसी आ रही है।

टीनी वीनी : खैर, मैं तो घर जा रहा हूं। मुझे भूख लगी है। मैं रोटी के इस टुकड़े को मां के साथ बांटकर खाऊंगा।

बड़ा टिड्डा : रोटी का टुकड़ा ? छोटा-मोटा रोटी का टुकड़ा ?

टीनी वीनी : तीन दिन पुराना केले की रोटी का टुकड़ा जिसमें बहुत अच्छी मिठास है।

बड़ा टिड्डा : यह तुम्हें कहां मिला ? मैं दिनभर उछलता-कूदता रहा, मुझे तो नहीं मिला।

टीनी वीनी : यह अजीब बात नहीं है ? गर्मी के मौसम में भोजन बहुत मिलता है। मैं जा रहा हूं . . . । साथ में उछलना-कूदना भी है। भूलना नहीं--बारिश आये तो यहां छिपना। *(उछलकर जाता है।)*

बड़ा टिड्डा : क्या बात है। टीनी वीनी ने जब से मुझे रोटी का टुकड़ा दिखाया है, मुझे भोजन की याद हो आयी है। अब मेरे पेट में चूहे दौड़ रहे हैं। मुझे सचमुच थोड़ी-सी भूख लग रही है। थोड़ी-सी नहीं बहुत अधिक . . . । जोरों की भूख। मेरा पेट भूख से ऐंठने लगा है। मेरे आसपास कहीं रोटी का टुकड़ा होना चाहिए। छोटा-मोटा ही सही।

(बादलों के गरजने की भयानक आवाज आती है।)

बड़ा टिड्डा : *(हथेली पर वर्षा की बूंद गिरती है।)* नहीं, नहीं। अभी जब मैं भोजन की तलाश करना चाहता हूं, यह बारिश होने लगी। कौन कह सकता था कि

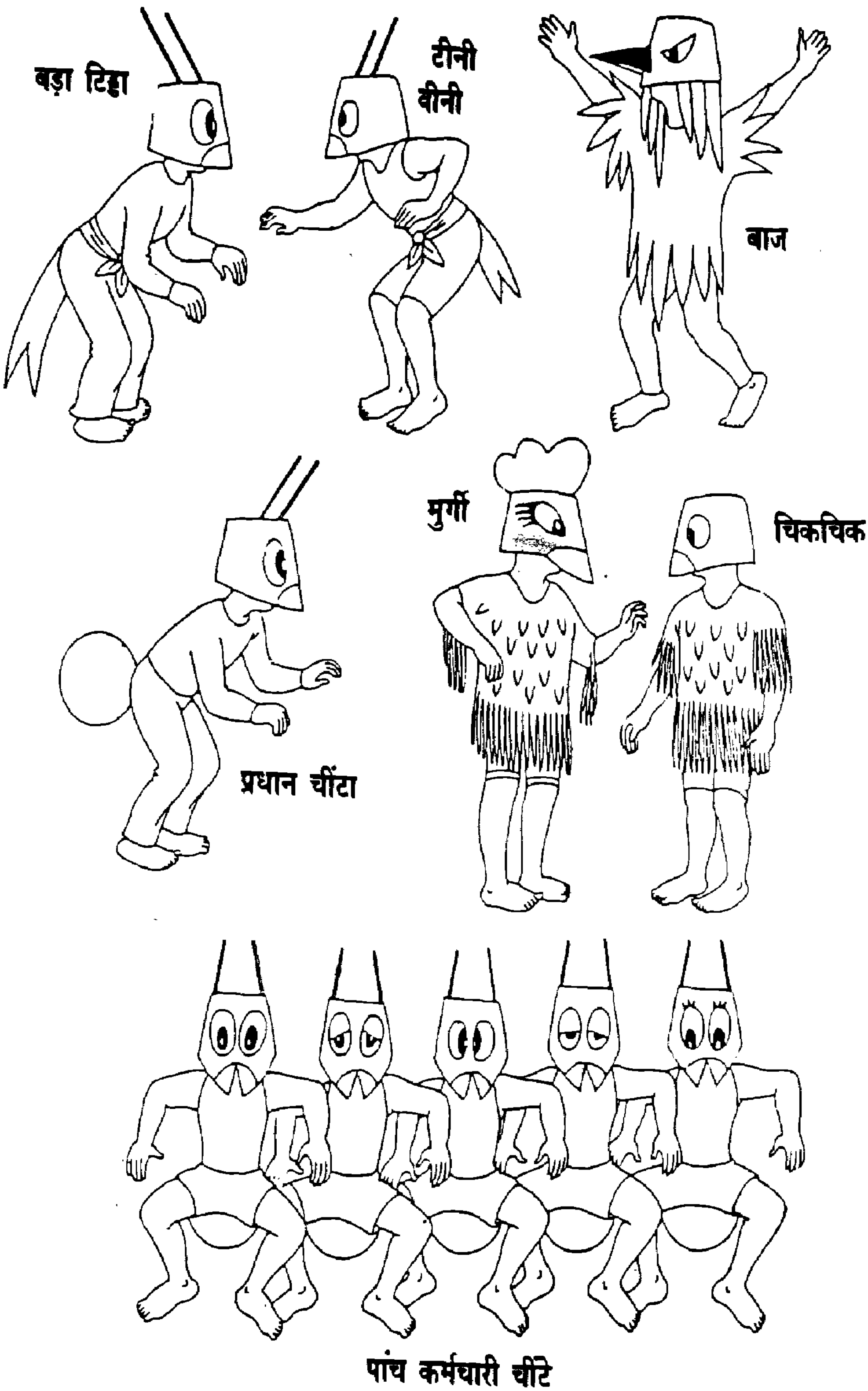
टीनी वीनी का अनुमान ठीक होगा। यह तो सचमुच बारिश होने लगी। मैं भूखा रहूंगा और भीगूंगा।थोड़ा-थोड़ा नहीं, पूरा भीग जाऊंगा। भागो रे टिड्डे राजा, भागो।

(बादलों के गरजने और बिजली के कड़कने की आवाज। बड़ा टिड्डा उछल कर बाहर जाता है।)

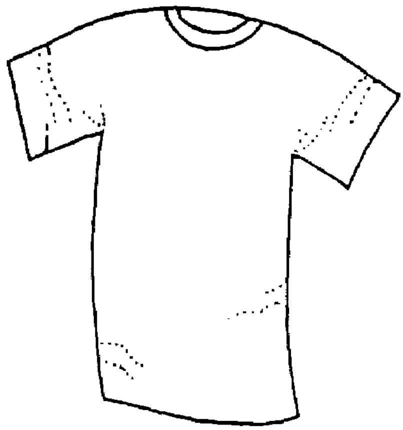
पर्दा

अंग्रेजी अनुवाद : रेने ओ. विलानूवा
चित्र : अलबर्टो गेमोस

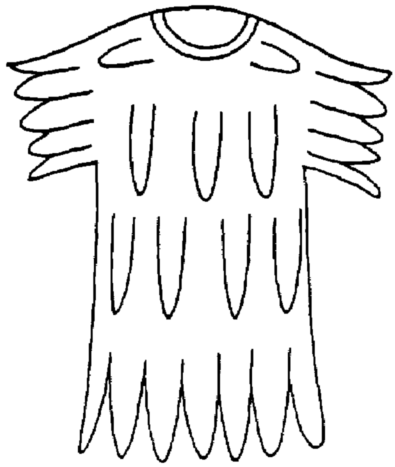
वेशभूषा



मुर्गी की पंखों वाली वेशभूषा कैसे बनायें?



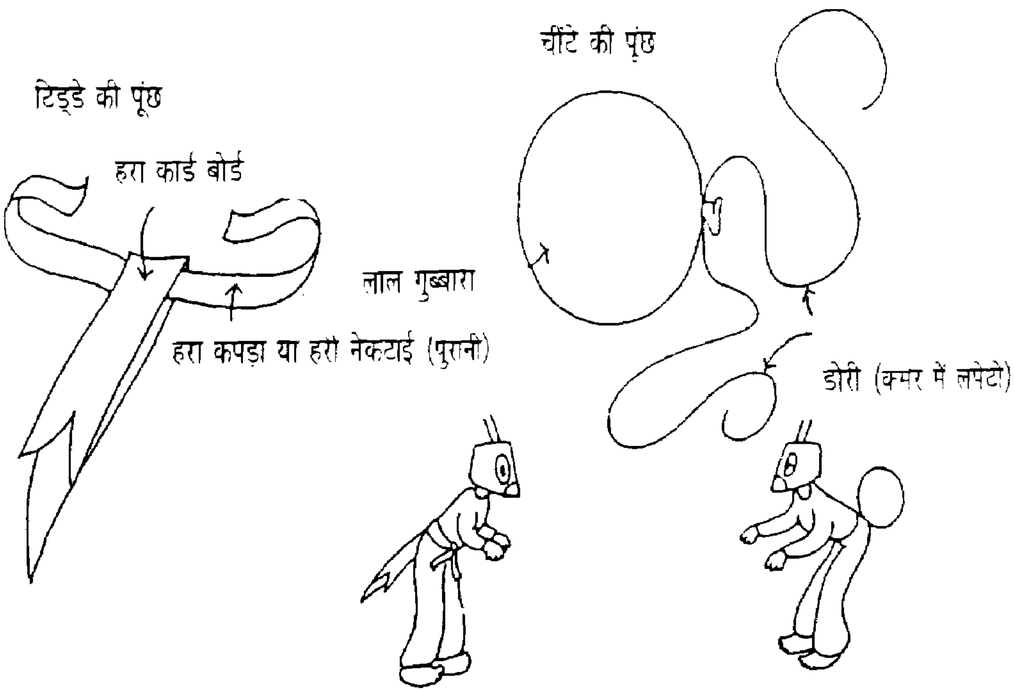
1. एक पुरानी(बड़ी) कमीज लो



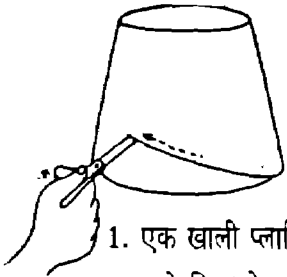
2. चित्र में दिखाये अनुसार इसे काटो

टिप्पणी : इसी तरह चिकचिक और बाज की वेशभूषा बनाओ।

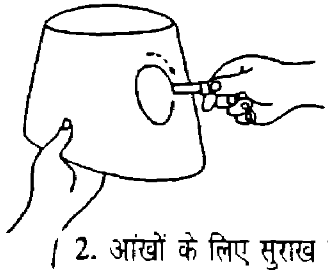
चींटे और **टिड्डे** की पूंछ कैसे बनायें



मुखौटा कैसे बनायें ?



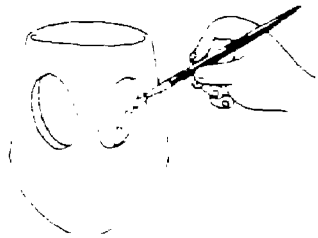
1. एक खाली प्लास्टिक की बाल्टी लो और उसे चित्र के अनुसार काटो



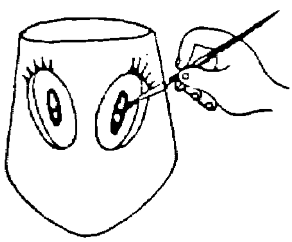
2. आंखों के लिए सुराख बनाओ।



3. इन पर मच्छरदानी की जाली के पर्दे लगाओ।



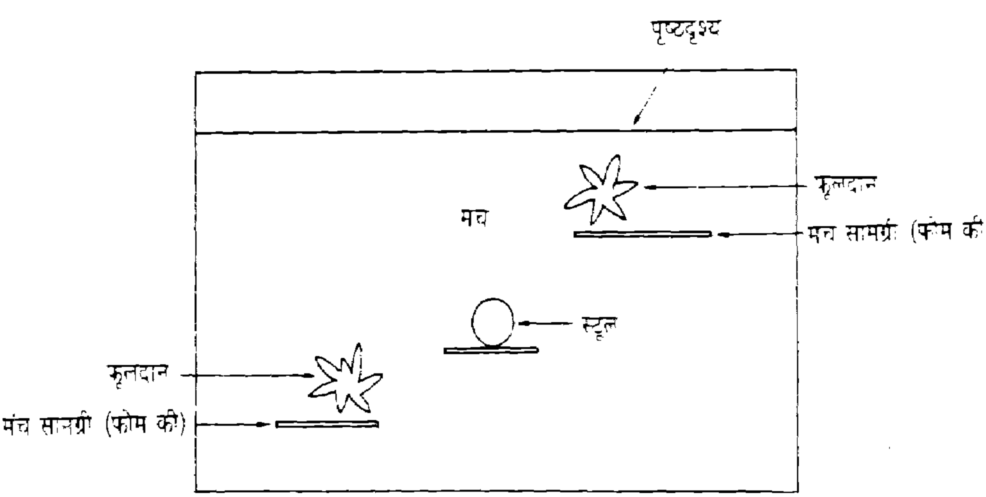
4. मच्छरदानी की जाली पर सफेद पेंट लगाओ अंदर से इस जाली को चिपका दो



5. अब पलकें, पुतली आदि बना दो।

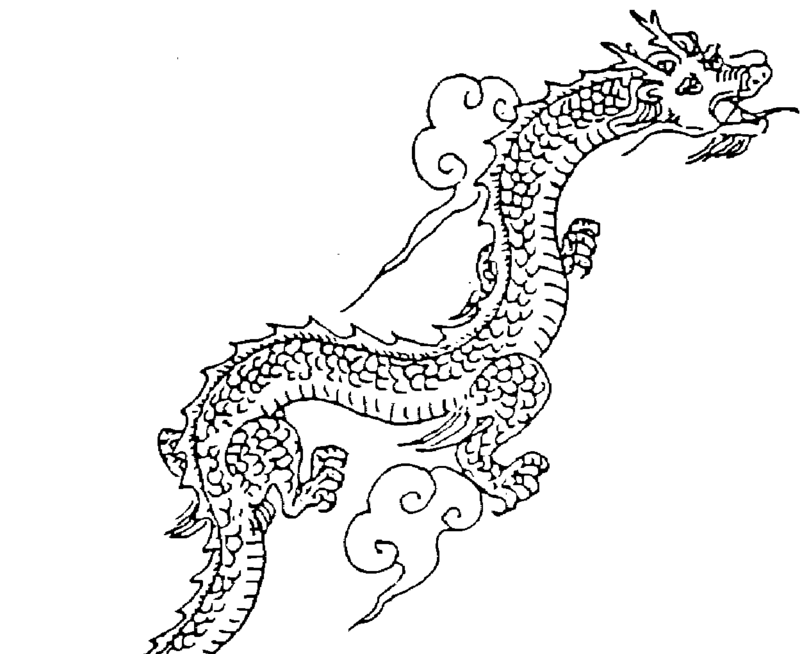
टिप्पणी : अन्य मुखौटों के लिए भी यही तरीका अपनाओ

मंच की रूपरेखा



पूर्वी सागर का एंचोवी

कोरिया गणराज्य



पूर्वी सागर का एंचोवी

--यी योंग-जुन

● *पात्र-परिचय*

एंचोवी	आयु 3,000 वर्ष
फ्लैटफिश	एक जिसकी दोनों आंखें एक तरफ हैं और दूसरी जिसकी एक-एक आंख दोनों तरफ है।
गोबी	आयु 800 वर्ष
कैटफिश	एक गोल सिर वाली और दूसरी चपटे सिर वाली
आक्टोपस	एक जिसकी आंखें सिर पर हैं, दूसरा जिसकी आंखें कूल्हों पर हैं।
ड्रैगन	नीला रंग
बटरफिश	एक बड़े मुंह वाली, दूसरी सिकुड़े मुंह वाली
सूत्रधार	एक बूढ़ा जिसने घोड़े के बालों की टोपी लगा रखी है और जो विद्वान की भूमिका भी निभाता है।

दृश्य एक

(पूर्वी सागर के एंचोवी का महल। बीच में एंचोवी का सिंहासन है। आस पास समुद्री वनस्पति इस बात का संकेत देती है कि यह स्थान सागर के तल में है। सूत्राधार जो एक बूढ़ा है और उसने घोड़े के बालों वाली टोपी पहनी हुई है, विवरण देने के लिए प्रवेश करता है।)

सूत्रधार : *(सिर झुका कर)* नमस्कार! आज मैं आप को ऐसी कहानी सुनाऊंगा कि हंसते-हंसते आपके पेट में बल पड़ जायेंगे। *(दाढ़ी पर हाथ फेरकर)* . . . *अच्छा तो मैं शुरू करता हूं। कहानी का शीर्षक है. . .*

(फ्लैटफिश *एक पोस्टर के साथ आती है जिस पर लिखा है* पूर्वी सागर का एंचोवी। *इसे दिखाकर वह बाहर निकल जाती है।)*

सूत्रधार : शीर्षक है पूर्वी सागर का एंचोवी।

(एंचोवी *का प्रवेश। वह सिंहासन पर बैठता है।)*

सूत्रधार : एक समय की बात है कि पूर्वी सागर में एंचोवी रहता था। उसकी आयु 3,000 वर्ष थी। एंचोवी का दबदबा सारे पूर्वी सागर में था। जल-प्रदेश में यह सब से बड़ी आयु वाला था और सब मछलियां इसका बहुत आदर करती थीं।

(सूत्रधार *बाहर आता है।)*

एंचोवी : *(आज्ञा के स्वर में)*. . कोई है?
(अंतराल) कोई है तो आगे आओ।

(कोई उत्तर नहीं आता। एंचोवी *सिंहासन से उछलता है।)*

एंचोवी : *(और जोर से)* सुनो कोई आस-पास है ? ओह. . . !

फ्लैटफिश : *(पृष्ठभूमि से)* आ . . . आ . . . आती हूं।

(फ्लैटफिश *का प्रवेश।)*

एंचोवी : क्या बात है ? तुम राजा को क्या समझती हो। मैं इतनी जोर से बुला रहा हूं फिर भी कोई जवाब नहीं देता।

फ्लैटफिश : महाराज, क्षमा कीजिए। मुझे बहुत अफसोस है।

एंचोवी : बहुत अफसोस, बहुत अफसोस। यह क्या तरीका है ? किसी आदमी की हत्या करने के बाद भी तुम 'बहुत अफसोस' कह दोगी तो क्या मैं तुम्हें माफ कर दूंगा ?

फ्लैटफिश : महाराज, आप तो बहुत भयानक बात कह रहे हैं। मैंने तो कभी खटमल भी नहीं मारा। आदमी को मारने की बात तो दूर रही।

एंचोवी : क्या मैं यह बात नहीं जानता हूं ? मेरे मुंह से अंटशंट निकल गया क्योंकि मैं गुस्से से पागल हो रहा था। मैं जानता हूं। फ्लैटफिश, तुम दूसरों की तरह बुरी नहीं हो। तुम बहुत अच्छी हो। देखो, दूसरी मछलियों ने तो अभी शक्ल ही नहीं दिखायी।

(इसी क्षण कैटफिश, आक्टोपस, बटरफिश, एंचोवी की नजर बचाकर प्रवेश करते हैं।)

एंचोवी : आ गये तुम लोग ?

(कैटफिश, आक्टोपस, बटर फिश *डर से कांपने लगते हैं।)*

एंचोवी : तुम लोग एंचोवी राजा को क्या समझते हो ?

कैटफिश, आक्टोपस, बटरफिश : महाराज, हमें क्षमा कीजिये।

एंचोवी : तुम लोगों को क्षमा करूं ?

सब : हां, महाराज, क्षमा कीजिये।

एंचोवी : क्षमा कीजिये, क्षमा कीजिये . . . क्षमा किस बात के लिए करूं ?

सब : *(चुप)*

एंचोवी : तुम चुप क्यों हो, कैटफिश ?

कैटफिश : जी. . . जी. . .

एंचोवी : आक्टोपस तुम !

आक्टोपस : जी. . . जी. . .

एंचोवी : बटरफिश, तुम !

बटरफिश : जी. . . जी. . .

एंचोवी : क्या तुम सब गूंगे हो गये हो ? यह सब क्या तमाशा है ?

फ्लैटफिश : महाराज, इस बार हमें क्षमा कीजिए। फिर कभी ऐसा नहीं करेंगे।

एंचोवी : हूं. . . नमकहराम ! मैं तुममें से हरेक को दस-दस कोड़े लगाता लेकिन

चूंकि फ्लैटफिश ने इस कदर माफी मांगी है, इसलिए माफ करता हूं।

कैटफिश : *(क्यौंगसैंग बोली में)* महाराज, मैं आपकी मेहरबानी कभी नहीं भूलूंगी।

आक्टोपस : *(चोल्ला बोली में)* हमारे महाराज एंचोवी बहुत दयालु हैं।

बटरफिश : *(हैमग्यौंग बोली में)* महाराज, मैं आपकी मेरबानी कभी नही भूलूंगी।

आक्टोपस : *(चोल्ला बोली में)* हमारे महाराज एंचोवी बहुत दयालु हैं।

बटरफिश : *(हैमग्यौंग बोली में)* मैं आपकी कृपा के लिए बहुत अभारी हूं।

एंचोवी : ठीक है, ठीक है। इतने प्रकार की बोलियों का मतलब है कि तुम देश के अलग अलग भागों मे आये हो। अब मेरी बात सुनो।

सब : हां, महाराज !

एंचोवी : कल रात मैंने एक सपना देखा. . .।

सब : सपना महाराज ?

एंचोवी : सपना बड़ा अजीब था।

(सब एक दूसरे के कानों में फुसफुसा कर कुछ कहते हैं।)

फ्लैटफिश : महाराज, आपने सपने में क्या देखा ?

एंचोवी : तुम जानना चाहती हो ?

सब : हां, हम जानना चाहती हैं, महाराज।

एंचोवी : अच्छा, बताता हूं। सपने में मैंने देखा कि मैं आसमान में ऊपर उठता था, फिर नीचे आता था . . . *(दोनों हाथों से इशारा कर)* ऊपर उठता था फिर नीचे आता था। मौसम बहुत खराब। कभी चारों तरफ सफेद बादल घेर लेते थे, कभी रूई की तरह बर्फ गिरने लगती थी। अभी-अभी गर्मी, अभी अभी सर्दी। इतना खराब मौसम था।

(एंचोवी के कहने के साथ-साथ मौसम के परिवर्तनों को सफेद बादलों तथा बर्फ गिरने, बिजली चमकने आदि के दृश्यों तथा संगीत से दिखाया जा सकता है।)

एंचोवी : यह अजीब सपना था। लेकिन मैं समझता हूं कि मुझसे बड़ी उम्र का तो पूर्वी सागर में कोई नहीं है।

सब : हां महाराज, कोई नहीं है।

एंचोवी : तो फिर इस सपने का अर्थ पूछने के लिए मैं किसके पास जाऊं ?

(सब मछलियां *इकट्ठी हो फुसफुसाकर आपस में विचार करती हैं।)*

फ्लैटफिश : महाराज . . .

एंचोवी : क्या तुम किसी का नाम सुझा सकती हो?

फ्लैटफिश : महाराज, आप जानते हैं। यहां आने से पहले यह आक्टोपस पश्चिमी सागर में रहता था।

आक्टोपस : क्या मैं एक सुझाव दे सकता हूं ?

एंचोवी : हां, हां, बोलो।

आक्टोपस : पश्चिमी सागर में जहां मैं रहता था . . .

एंचोवी : बोलो, बोलो।

आक्टोपस : आठ सौ साल उम्र का बूढ़ा गोबी है।

एंचोवी : आठ सौ साल का बूढ़ा गोबी ?

आक्टोपस : लेकिन महाराज, आपके मुकाबले में वह बच्चा है। आपकी उम्र तो 3000 साल है।

एंचोवी : लेकिन क्या गोबी सपनों का अर्थ लगाना जानता है?

आक्टोपस : जी हां, महाराज।

एंचोवी : तो फिर मेरी तरफ से गोबी को यहां आने का न्यौता दिया जाये।

आक्टोपस : क्या मैं गोबी को जाकर लाऊं ?

एंचोवी : ठीक है।

आक्टोपस : *(चुप)*

एंचोवी : आपस में सलाह करके तय कर सकते हो कि गोबी को लाने कौन जाये। मैं नहाने जा रहा हूं। अभी लौट आता हूं।

(एंचोवी उठकर बाहर जाता है।)

आक्टोपस : मैं नहीं जा सकता।

फ्लैटफिश : क्यों ?

आक्टोपस : नहीं जा सकता, बस!

बटरफिश : तुम लंबे समय तक पश्चिमी सागर में रहे हो, इसलिए वहां का रास्ता जानते हो।

कैटफिश : हां, हां, तुम ठीक कहती हो। आक्टोपस तुम्हें ही जाना चाहिए।

आक्टोपस : मैं नहीं जा सकता। अगर मैं वहां गया तो जिंदा नहीं लौटूंगा।

फ्लैटफिश : क्यों ?

आक्टोपस : मैं जब पश्चिमी सागर में रहता था तो मेरी कोरविना नाम की मछली

से लड़ाई हो गयी थी।

फ्लैटफिश : फिर . . . ?

आक्टोपस : मैंने उसे मारा और . . . वह गिर गयी थी. . . ।

कैटफिश : इसका मतलब तुम हत्यारे हो।

आक्टोपस : नहीं, यह सही नहीं है। मैंने तो उसे एक घूंसा मारा था . . .

कैटफिश : मैं समझ गयी कि तुम पश्चिमी सागर में क्यों नहीं जाना चाहते हो। तो फिर कौन जायेगा ?

बटरफिश : इसमें क्या है? कैटफिश, तुम जाओ। तुम अपने क्योंगसैंग जिले से अपनी यात्रा शुरू करो।

कैटफिश : क्या ? मैं वहां जाऊं ? मेरी जान भी ले लो तब भी मैं वहां न जाऊं। बटरफिश, आखिर तुम मेरे पीछे क्यों पड़ गयी हो ?

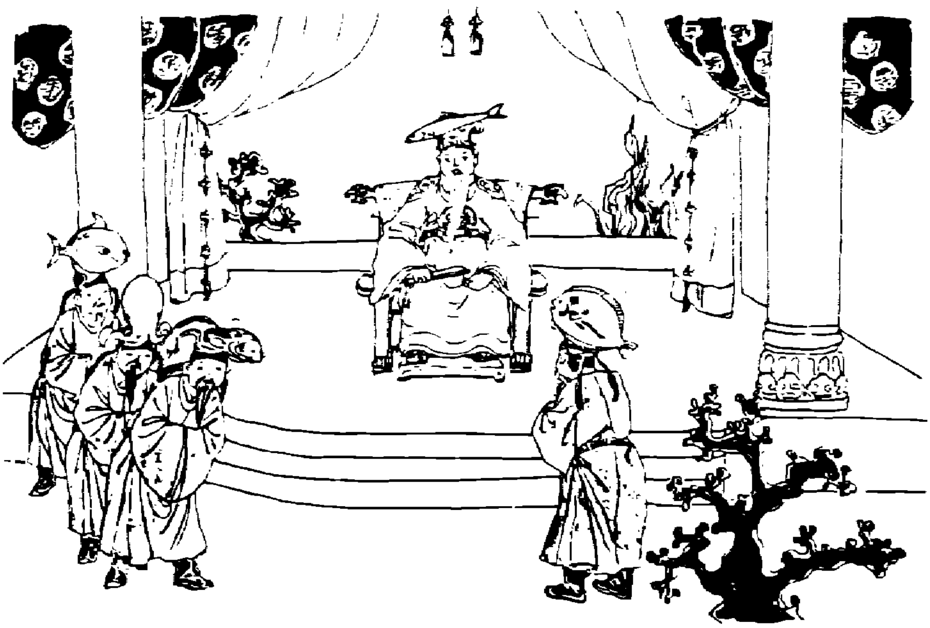
फ्लैटफिश : तो फिर बटरफिश जाये।

बटरफिश : *(घबरा कर)* हे ईश्वर मैं कैसे जाऊंगी ? मैं तो सारी उम्र इसी पूर्वी सागर में रही हूं। दक्षिणी सागर से होकर पश्चिमी सागर कैसे पहुंचूंगी ? मेरे जाने की बात तो छोड़ ही दो।

(एंचोवी *आकर सिंहासन पर बैठता है।)*

एंचोवी : हां. . . आप लोगों ने फैसला कर लिया ?

फ्लैटफिश : नहीं महाराज, अभी नहीं।



एंचोवी : फ्लैटफिश . . .

फ्लैटफिश : हां, महाराज।

एंचोवी : फ्लैटफिश मेरी आज्ञाकारी फ्लैटफिश

फ्लैटफिश : हां, महाराज।

एंचोवी : मैं जानता हूं कि यह तुम्हारे ऊपर ज्यादती होगी। लेकिन तुम्हें ही जाना होगा। तुम्हारे सिवा मैं किसी पर विश्वास नहीं कर सकता हूं।

फ्लैटफिश : महाराज . . .

एंचोवी : बोलो ?

फ्लैटफिश : मैं तो वहां का भूगोल भी नहीं जानती . . . ।

एंचोवी : तुम रास्ता पूछ-पूछकर जा सकती हो। अगर तुम गोबी को यहां ले आओगी तो मैं तुम्हें बहुत अच्छा इनाम दूंगा। इसलिए, जल्दी जाओ। गोबी के साथ बड़ी नम्रता से पेश आना क्योंकि वह बूढ़ा आदमी है।

फ्लैटफिश : अच्छा, महाराज।

एंचोवी : अब जाओ।

(फ्लैटफिश *कुछ हिचकिचाती है, फिर जाती है। सब उसे जाते देखते हैं।)* . .

दृश्य दो

(वही स्थान। सूत्रधार *आता है।)*

सूत्रधार : इस तरह अच्छे स्वभाव वाली फ्लैटफिश चली तो गयी लेकिन क्या आप समझते हैं कि वह जाना चाहती थी ? इतना बड़ा गुस्सा (मुट्ठी दिखाकर) उसके दिल से उठकर गले में आ फंसा था। लेकिन उसने अपने गुस्से पर काबू पाकर गोबी को लाने के लिए कई दिनों तक उफनती लहरों वाले पानी में यात्रा की।

(मंच के बीच मेज बिछी है। एंचोवी *अन्य मछलियों के साथ गोबी के स्वागत के लिए खड़े हैं।* फ्लैटफिश गोबी *के साथ आती है। संगीत* एंचोवी *खुशी से* गोबी *का हाथ पकड़ता है।)*

एंचोवी : मुझे बहुत अफसोस है कि आप जैसे वृद्ध को इतनी दूर चल कर आना पड़ा।

गोबी : मेरे लिए यह सौभाग्य की बात है कि मैं पूर्वी सागर के राजा एंचोवी के

दर्शन पा सका। अफसोस यही है कि मैं इससे पहले आपके दर्शन नहीं कर सका।

एंचोवी : अब हम वहां चलेंगे और आपकी सेहत के लिए जाम पियेंगे।

गोबी : आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। और महाराज, आपको मेरे आगे इतना नम्र होने की जरूरत नहीं क्योंकि मैं आपसे बहुत छोटा हूं।

एंचोवी : ओह! आप कितने नम्र हैं, गोबी जी।

(एंचोवी *और* गोबी *आमने-सामने बैठते हैं और जाम पीते है। दूसरी* मछलियां, फ्लैटफिश *आदि हसरत भरी निगाहों से उन्हें देखती हैं। सूत्रधार का प्रवेश।)*

सूत्रधार : आप देख रहे हैं कि चाटुकार गोबी को शराब पिलाने के लिए राजा मेज की तरफ ले गया, लेकिन उसने फ्लैटफिश को धन्यवाद देने की जरूरत भी नहीं समझी। जब एंचोवी और गोबी आपस में प्यालों की अदला-बदली कर रहे थे तो फ्लैटफिश ललचाई नजरों से उनकी तरफ देख रही थी। अंत में राजा एंचोवी अपने सपने के बारे में गोबी को बताने लगा। गोबी ध्यान से एंचोवी की बात सुनता है।)

सूत्रधार : गोबी ने ध्यान से सपने को सुना और उसका अर्थ बताने लगा। आइये सुनें कि वे क्या कहते हैं।

(सूत्रधार *बाहर जाता है।)*

(गोबी जब सपने का अर्थ बताता है, तभी ड्रैगन संगीत के साथ प्रवेश करता है और गोबी की नकल करने लगता है।)

गोबी : महाराज, यह सपना कहता है कि आपने यहां तीन हजार साल तक अपने को अनुशासित रखा है, अब आप ड्रैगन बनकर सारी दुनिया पर राज करेंगे। मैं इस सपने का यही अर्थ लगाता हूं। ड्रैगन को छोड़कर कौन ऐसा है जो आसमान तक उठने और नीचे आने का चमत्कार कर सकता है और यह धुंध पैदा करना फिर उसे जमा कर बरफ की तरह बरसाना भी तो ड्रैगन का ही काम है। सफेद बादल पैदा करना और उनमें ऊपर उठना और सारी दुनिया में फैलना, धरती को गर्मी से झुलसाना, सपने की ये तमाम बातें कहती हैं कि आप ड्रैगन बनने वाले हैं मैं आपको इसके लिए बधाई देता हूं। . . .यह . . . यह . . . इसलिए महाराज, मैं आपकी सेहत का जाम प्रस्तावित करता हूं।

(गोबी शराब का प्याला एंचोवी को देता है और एंचोवी खुश हो कर उसे स्वीकार करता है।)

एंचोवी : हा . . . हा . . . यह तो मेरी आशा से कहीं बढ़कर है।

गोबी : लेकिन मेरा अर्थ बिल्कुल सही है।

एंचोवी : मैं आपकी बुद्धि की दाद देता हूं।

(इसी क्षण **फ्लैटफिश** *आगे बढ़कर उंगली से उनकी तरफ इशारा करती है।)*

फ्लैटफिश : तुम दोनों बेवकूफ हो

(एंचोवी *और* गोबी *चौंक पड़ते हैं।)*

कैटफिश : फ्लैटफिश, तुम्हें क्या हो गया है?

फ्लैटफिश : मुझे क्या हुआ है? तुम चुप हो। मैं यह भेदभाव नहीं सह सकती।

आक्टोपस : शांति, शांति।

फ्लैटफिश : मैं शांति करूं ? मैंने उस बूढ़े गोबी को यहां लाने के लिए इतनी मुसीबतें उठायीं लेकिन मेरा किसी ने शुक्रिया तक नहीं किया, इनाम की तो बात छोड़ो। यह सब देखकर मेरा खून खौल उठा है।

बटरफिश : फिर भी तुम्हें गुस्सा नहीं करना चाहिए। तुम इस मामले में कर ही क्या सकती हो ?

फ्लैटफिश : तुम दूर खड़ी रहो और देखती जाओ। तुम सब बूढ़ियां मेरी परवाह न भी करो तब भी मैं अपने पेट भरने का इंतजाम कर सकती हूं।

एंचोवी : तुम कितनी एहसान फरामोश हो। मेरे सामने ऐसी बातें करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ?

फ्लैटफिश : मूर्ख बूढ़े गोबी ने सपने का जो अर्थ बताया वह गलत है। इसका सही अर्थ मैं बताती हूं। हूं !

(वादक, फ्लैटफिश *द्वारा किये गये अर्थ की नकल करते हैं।* सूत्राधार विद्वान *की भूमिका निभाता है।)*

फ्लैटफिश : *(मजाक में)* सागर के किनारे एक विद्वान रहता था। वह सियोल की यात्रा पर निकला। सियोल शहर में घूमने के बाद वह अपनी बहू के लिए किसी उपहार की तलाश करने लगा। उसने सियोल के एक विक्रेता से सूइयों का एक पैकेट खरीदा। विद्वान ने उनकी कीमत तीन पैनी दी, लेकिन घर आकर पता चला कि वह ठगा गया है क्योंकि सूइयां नोक से मुड़ी हुई थी। वह उन सूइयों को फेंकना नहीं चाहता था, इसलिए उसने उन्हें मछली पकड़ने के कांटे के रूप में इस्तेमाल किया। उसने कांटे के साथ चारा लगाया और उसे समुद्र

में डालकर इंतजार करने लगा। बूढ़ा सुस्त एंचोवी उस कांटे में फंस गया। विद्वान ने जब डोर को जोर से खींचा तो एंचोवी आसमान में उछला और फिर जमीन पर आ गिरा। इसके बाद उसे आग पर पकाया गया। सफेद धुआं ऊपर उठा क्योंकि कोयले अभी भली प्रकार नहीं जले थे। यही धुआं ऊपर उठने वाले सफेद बादल थे। इसके बाद विद्वान ने मछली पर नमक लगाया, यही हैं बरफ के रोएं। विद्वान पंखा चलाता रहा ताकि आग अच्छी तरह से जल जाये और एंचोवी अच्छी तरह भुन जाये। लपटों के छूने से उसे गर्मी लगती थी और हवा करने से ठंड लगती थी। बूढ़ा एंचोवी तीन हजार साल जी चुका है और मेरा ख्याल है कि अब उसे जाना ही चाहिए। और तुम कहते हो कि यह सपना इस बात का संकेत है कि एंचोवी ड्रैगन बनेगा? तुम झूठे और धूर्त बूढ़े हो।

आक्टोपस : महाराज, लगता है पश्चिमी सागर की लंबी यात्रा के कारण फ्लैटफिश कुछ पागल हो गयी है।

एंचोवी : हुं . . . आक्टोपस, तुम ठीक कहते हो। अगर इसका दिमाग सही होता तो यह ऐसी बातें नही करती।

बटरफिश : इसलिए हमें उम्मीद है कि महाराज उसे क्षमाकर देंगे।



गोबी : महाराज,शांत हो जाइये। क्या आप मुझे अपने पूर्वी सागर की सैर नहीं करायेंगे ?

एंचोवी : एक मिनट श्रीमान गोबी ! (फ्लैटफिश *की तरफ)* क्या तुम्हारे होश ठिकाने आये ?

फ्लैटफिश : मेरे होश ठीक थे और ठीक हैं।

एंचोवी : तो तुम्हारा दिमाग सही सलामत है ?

फ्लैटफिश : मुझे यह कहने में जरा भी डर नहीं है कि मैंने जो कुछ कहा, ठीक होशोहवास में कहा।

एंचोवी : तुमने मेरे बारे में ऐसी गंदी बातें की हैं, तुम दगाबाज हो।

(एंचोवी *उसे जोर से थप्पड़ मारता है।* फ्लैटफिश *कई बार घूम जाती है।)*

फ्लैटफिश : ओह, मैं मर गयी. . .

(फ्लैटफिश पीछे हटकर कैटफिश *के सिर पर गिरती है और दोनों गिर जाती है।* आक्टोपस *और* बटरफिश *भी चौंक कर गिर पड़ते हैं।)*

एंचोवी : गंदी मछली, बड़ों का अपमान करने के लिए तुम्हें देवताओं का दंड मिलना चाहिए।

गोबी : *(पास आकर)* महाराज !

एंचोवी : इस गड़बड़ी का मुझे बहुत खेद है श्रीमान गोबी !

गोबी : *(पीछे हटकर)* कोई बात नहीं लेकिन महाराज, माफ कीजिए मुझे. . . बाथरूम जाना है।

एंचोवी : जाइये,जाइये।

(गोबी *बाहर जाता है और जाते-जाते इधर-उधर देखकर एक आंख मींचता है।)*

एंचोवी : श्रीमान गोबी, बाथरूम हो लें तो मेरी बैठक में तशरीफ लायें।

गोबी : *(पृष्ठभूमि से)* जी हां, आऊंगा।

एंचोवी : दुष्ट, अगर फिर कभी तुमने ऐसी बातें की तो मैं तुम्हारे होंठ सी दूंगा।

(एंचोवी गोबी *से विपरीत दिशा में बाहर जाता है।* फ्लैटफिश *और* कैटफिश *उठकर खड़ी होती हैं।* फ्लैटफिश *की दोनों आंखें अब एक तरफ आ गयी हैं और* कैटफिश *का सिर चपटा हो गया है।)*

कैटफिश : फ्लैटफिश !

फ्लैटफिश : क्या है ?

कैटफिश : तुम्हारी दोनों आंखें एक तरफ कैसे हो गयीं ?

फ्लैटफिश : क्या ? क्या कहा ?

कैटफिश : अपना हाथ फेर कर देखो

फ्लैटफिश : *(हाथ से टटोल कर)* ओह, यह सब उस एंचोवी का काम है। कैटफिश!

कैटफिश : क्या है ?

फ्लैटफिश : तुम्हारे सिर को क्या हुआ ? हा. . . हा. . .हा. . .यह तो चपटा हो गया है।

कैटफिश : *(अपने सिर पर हाथ फेरकर)* ओह मेरा सिर ! तुम मेरे ऊपर गिरी थी, तुम्हीं ने मेरा यह हाल किया। हाय राम ! अब मैं क्या करूं ?

(आक्टोपस और बटरफिस भी उठते हैं। आक्टोपस की आंखें खिसक कर उसके कूल्हों पर आ गयी हैं और बटरफिश का मुंह पिचक गया है।)

फ्लैटफिश : आक्टोपस ! तुम्हारी आंखें कूल्हे पर कैसे आ गयी हैं?

आक्टोपस : मैंने जल्दी से अपनी आंखें कूल्हों की तरफ घुमायी थी क्योंकि मैंने सोचा एंचोवी मुझे भी थप्पड़ मारेगा। वह . . . वह . . .

कैटफिश : और इस बटरफिश का मुंह तो देखो। कैसे पिचक गया है।

बटरफिश : हां, हां. . . मैंने अपनी हंसी को दबाने के लिए जोर से मुंह सिकोड़ लिया था। शायद इसीलिए. . . ।

(सभी कहकहा लगा कर हंसते है। सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार : क्या मजेदार दृश्य है! यही वजह है कि फ्लैटफिश की आंखें एक तरफ हैं, कैटफिश का सर चपटा है, आक्टोपस की आंखे उसके निचले हिस्से में हैं और बटरफिश का मुंह छोटा है। इस तरह पूर्वी सागर में सारी मछलियां बदशक्ल हो गयी थीं।

(खुशी के साथ वे नाचते हैं।)

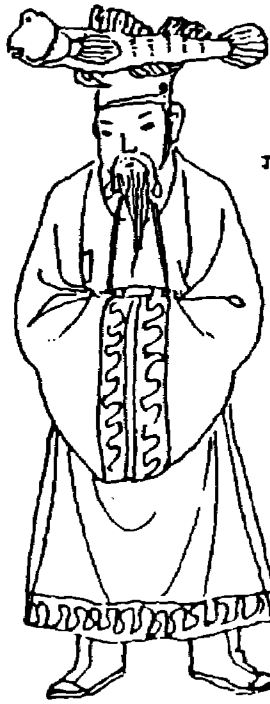
पर्दा

अंग्रेजी अनुवाद : आह्न जुंग-ह्यो

चित्र : युंग-जू, किम



एंचोवी



गोबी



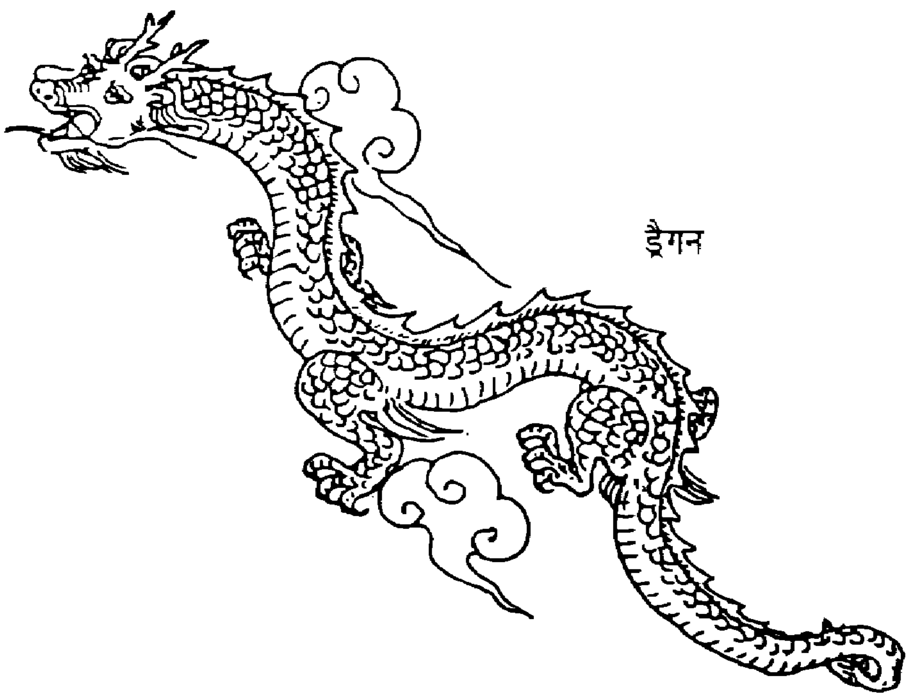
कैटफिश



फ्लैटफिश

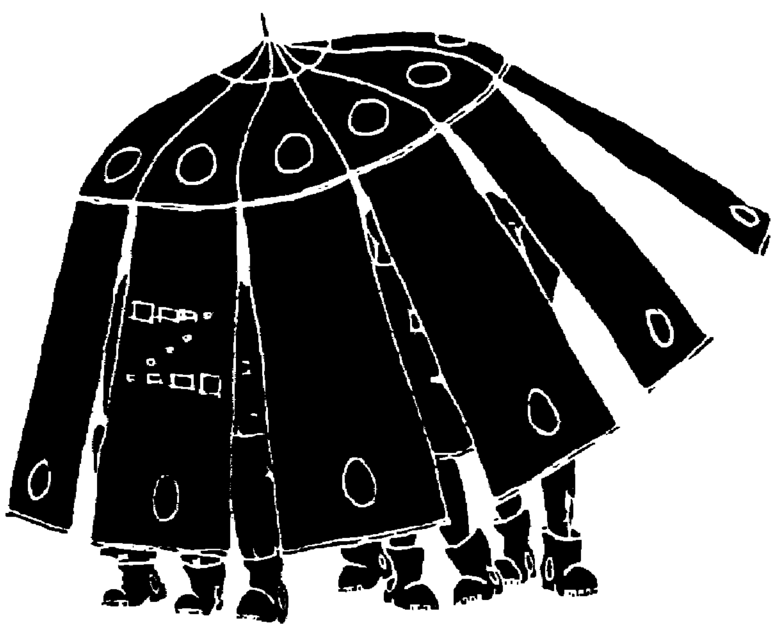

आक्टोपस


बटरफिश


ड्रैगन

जुड़वां अजनबी

सिंगापुर



जुड़वां अजनबी

--जेस्सी वी

● *पात्र-परिचय*

गाब-रा	जूश ग्रह के दो जुड़वां अजनबी लड़के
साब-री	जूश ग्रह की दो जुड़वां अजनबी लड़कियां
तीन पुरुष मजदूर	
एक युवा जोड़ा	
बच्चों का एक दल	भूत
लोगों की भीड़	

दृश्य एक

(शाम का समय। एक सुनसान पार्क। मंच पर कुछ पेड़ और झाड़ियां चारों ओर दिखाई देती हैं। मंच का मध्य भाग खाली है। मंच की दायीं ओर श्रोताओं के निकट फूलवाले पौधों के बीच कुछ चट्टानें हैं। जब पर्दा उठता है तो मंच खाली दिखाई देता है और रोशनी मद्धिम होती है। ऊंचे स्वर में मधुर गूंज सुनाई देती है। आवाज तेज होने के साथ-साथ अंतरिक्ष यान बायीं ओर से प्रवेश करता है और मंच का चक्कर लगाता है। घूमते हुए और तेज रोशनी बिखेरते हुए अंतरिक्ष यान अंत में मंच के पिछले मध्यभाग में स्थिर हो जाता है।धीरे-धीरे हवा निकलने से यह सिकुड़ता है और जमीन पर टिक जाता है। जमीन से जुड़वां अजनबियोंके दो जोड़ उठते हैं। वे बिना हिले-डुले रहते हैं। उनके सिर धीरे धीरे चारों दिशाओं में घूमते हैं और अपने उतरने की जगह का मुआयना करते हैं। फिर वे धक्का देकर अंतरिक्ष यान को खींचकर ले जाते हैं तथा झाड़ियों के पीछे छिपा देते हैं। यह काम पूरा करने के बाद वे इधर-उधर देखते और भूक्षेत्र का मुआयना करते हुए आगे आते हैं।)

गाब-रा : *(एक-एक करके बोलने से पहले गहरा उच्छवास लेते हैं)* . . . तो यह पृथ्वी ग्रह है। यह जूश ग्रह से कितनी अलग है। ओह, मुझे तो घर की याद आ रही है। मुझे भी . . .

साब-री : *(सिर घुमा कर एक दूसरी को देखती हैं और फिर एक साथ बोलती हुई रो पड़ती हैं)* ऊं. . . ऊं. . . । हम घर जायेंगे। ऊं. . . ऊं. . . ऊं. . . हम अपने घर जूश ग्रह जायेंगे।

गाब-रा : *(घबरा कर इधर-उधर देखते हैं और फिर बारी-बारी बोलते हैं)* चुप करो साब ! चुप करो री ! शी. . . । शी. . . । खामोश साब-री! क्या तुम चाहती हो कि हमारे कुछ करने से पहले ही पृथ्वी पर रहने वाले लोग हमें देख लें?

साब-री : *(अभी भी रो रही हैं और एक साथ बोलती हैं लेकिन और जल्दी-जल्दी)* ऊं. . . ऊं. . . । हम घर जायेंगे, जूश ग्रह में।

गाब-रा : *(एक-एक करके, हताशा में)* शी. . . । तुम जानती हो हम नहीं जा सकते। तब तक नहीं जब तक हमें पृथ्वी के दोस्त नहीं मिल जाते जो हाथ फैला कर हमारा स्वागत करने को तैयार हों।

साब-री : *(एक साथ बोलते हुए)* ऊं . . . ऊं. . . ऊं. . . । हम उन्हें कैसे ढूंढ़ें?

अगर वे दोस्त नहीं निकले तो क्या होगा ? ओह, यह सब तुम्हारी वजह से हुआ। तुम्हारी ही वजह से हम इस अजनबी ग्रह पर हैं।

गाब-रा : *(एक-एक करके, साब से बातें करते समय एक दूसरे की ओर इशारा करके)* यह सब गाब का कसूर है। नहीं, यह रा का कसूर है। *(आमने-सामने हो कर)* तुम्हें अपना भोंपू जैसा मुंह नहीं खोलना चाहिए था। तुम्हें मेरी खोपड़ी में अपने विचार नहीं डालने चाहिए थे।

साब-री : *(गुस्से से, एक-एक करके)* तुम मूर्ख हो। तुम गधे हो। तुम जानते हो जूश ग्रह में यह कहने की मनाही है कि दो सिर एक सिर से बेहतर हैं। तुम जानते हो कानून इसकी मनाही करता है। तुम्हें छोड़कर बाकी सब इस बात को जानते हैं।

गाब-रा : *(एक-एक करके)* तुमने हमें बेवकूफ बनाया। हमें धोखा दिया। अगर वह तुम्हारी बेवकूफी भरी कहानी न होती तो मैंने हां नहीं की होती। और उसने सुन लिया। हां, उसने सुन लिया।

गाब-रा : *(एक-एक करके)* हां, उसने सुन लिया। उसने, सर्वोच्च ने हमें सुन लिया। शी. . . । क्या वह अब भी हमारी बात सुन सकता है। *(रुककर सुनता है और इधर-उधर देखता है।)* एक सिर के जूशवासी के कान बहुत तेज होते हैं।

साब-री : *(एक साथ)* और तुम दोनों के मुंह बहुत बड़े हैं।

गाब-रा : *(एक-एक करके)* हम बिना सोचे-समझे बोले थे ओह, वह तो सिर्फ कहानी की बात थी। खैर, अब तो बहुत देर हो गयी। . . . हमें जूश ग्रह से धक्के मारकर निकाल दिया गया है। . . . हमेशा के लिए . . . जब हमें पृथ्वी पर कोई दोस्त मिल जायेगा, जो हमें अपनाने को तैयार होगा, हम जैसे हैं, उसी रूप में, . . . तभी वह हमें जूश में वापस आने की आज्ञा देगा।

साब-री : *(एक साथ, व्याकुलता से)* क्या पृथ्वी का ऐसा आदमी हमें मिलेगा ?

गाब-रा : *(मिलकर)* यही तो हमें देखना है। आओ, हम पहले इस जगह ढूंढें।

साब-री : *(मिलकर)* ओह! हमें जरूर कोई पृथ्वीवासी दोस्त मिलना चाहिए। तभी हम घर जा सकते हैं, घर . . .घर . . . घर, प्यारा घर !

साब-री : *(एक-एक करके)* तो फिर आओ। अब हम वक्त बरबाद नहीं करेंगे। *(मिलकर)* मेरे पीछे आओ. . इस तरफ।

(गाव *दायीं ओर और* रा *बायीं ओर इशारा करता है।)*

साब-रा : *(गुस्से में पांव पटककर और एक के बाद एक बड़ी तेजी से बोलते हुए)*

किस तरफ ? किस तरफ ? तुम दोनों मिलकर एक बात क्यों नहीं सोचते ? ओह, गाब-रा, तुम्हारे दो सिर निश्चय ही एक सिर से बेहतर नहीं हैं।

(चारों सिर आपस में एक साथ बोलते हुए बहस करने लगते है। जुडवां लड़के भिन्न-भिन्न दिशाओं की तरफ इशारा करते हैं। और सभी जोर-जोर से पैर पटकते हैं तथा बांहे हिलाते हैं। अंत में साब-री, गाब-रा को धक्का देकर मंच की बायीं ओर ले जाती है। बहस अभी तक जारी है। मंच फिर खाली हो जाता है। कुछ देर के बाद तीन मजदूर दायीं ओर से आते हैं जो दिन भर की मेहनत के बाद थके हुए लगते हैं।)

पहला मजदूर : *(एक पत्थर पर बैठकर)* . . . मैं तो बहुत थक गया हूं।

दूसरा मजदूर : *(दूसरे मजदूर के पैरों के पास बैठकर)* आह! मैं भी बहुत थक गया हूं। हमने पूरे दिन मेहनत जो की है। लेकिन हम जल्दी ही घर पहुंच जायेंगे।

तीसरा मजदूर : *(उन दोनों के पास ही लेटकर)* घर . . . घर . . . घर, प्यारा घर। ठंडे पानी का स्नान, गर्म-गर्म खाना और . . .*(वह सो जाता है और खर्राटे भरने लगता है।)*

पहला मजदूर : *(हंसते हुए दूसरे मजदूर को कोहनी मारकर)* अरे देखो तो . . . वह तो सो गया।

दूसरा मजदूर : कितनी जोर से खर्राटे ले रहा है। इन्हें सुन कर तो मुर्दा भी जाग जाये। (दूसरा मजदूर तीसरे मजदूर *के खर्राटों की नकल करता है। वह* तीसरे मजदूर *की गर्दन को पत्तों से खुजलाता है।* पहला मजदूर *भी इस हंसी-मजाक में शमिल हो जाता है। वे* गाब-रा *और* साब-री *को नहीं देख पाते जो बायीं ओर से मंच पर आते हैं।)*

गाब-रा : *(एक साथ)* यहां कोई नहीं है। सारा इलाका सुनसान है।

साब-री : *(एक साथ)* देखो. . . पृथ्वी के लोग।

गाब-रा : *(एक दूसरे से)* वह दोस्त जैसे दिखते हैं. . . क्यों गाब ? हां रा, दिखते हैं। आओ साब-री। डरो मत। हम चल कर उनसे मिलेंगे।

गाब-रा व साब-री : *(अजीब झटके की चाल में उत्सुकता से आगे बढ़ते हैं और एक स्वर में बोलते हैं)* नमस्कार पृथ्वी वासी दोस्तो !

(पहला *और* दूसरा मजदूर *नजर उठा कर देखते हैं और अचरज से उनका मुंह खुला रह जाता है।)*

दूसरा मजदूर : *(हड़बड़ा कर उठते हुए)* . . . अरे ये तो मुर्दे हैं। उसके खर्राटों ने सचमुच मुर्दों को जगा दिया है।

पहला मजदूर : *(उछल कर)* अइइया. . .

(तीसरा मजदूर चौंक कर उठ बैठता है और हक्का बक्का होकर आसपास देखता है और डर के मारे चिल्लाता है। मजदूर भागते हुए एक दूसरे पर गिरते हैं। दायीं ओर मंच से बाहर हो जाते हैं। जुड़वां हैरानी से पीछे हटते हैं और फिर रोने लगते हैं। वे लड़ाखड़ाते हैं। वे लड़खड़ाते हुए बांयीं तरफ से बाहर निकल जाते हैं। पर्दा गिरता है।)

दृश्य दो

(कई मिनट बाद गाब-रा मंच की बायीं ओर से झांकता है, इधर-उधर देखकर, धीरे-धीरे और सावधानी से मंच पर आता है।)

गाब-रा : *(एक साथ साब-री को आने का इशारा करते हैं)* साब-री अब तुम आ सकती हो। पृथ्वीवासी चले गये।

साब-री : *(एक साथ, दायें-बायें देखकर गाब-रा के पीछे मच पर आती हैं)* ओह! हम तो बहुत डर गये थे।

गाब-रा : *(एक साथ)* डरो नहीं। कम से कम उन्होंने हम पर हमला तो नहीं किया।

साब-री : *(एक साथ)* हां . . . हां, हमला तो नहीं किया। लेकिन कौन जाने अगली बार. . .

गाब-रा : *(एक साथ)* शी. . . । वह क्या है ?

साब-री : *(एक साथ)* क्या चीज ?

गाब-रा : *(एक साथ)* चुप. . . कोई आ रहा है। छिप जाओ।

(जुड़वां मंच के पिछले भाग के सायों में चले जाते हैं एक युवा जोड़ा हाथ में हाथ डालकर दायीं तरफ से मंच पर आता है। बीच की ओर आते हुए वह आपस में बातें करता है।)

युवती : *(रुक कर आसपास देखती है)* यहां से छोटा रास्ता लेने में कोई खतरा तो नहीं होगा? यह जगह कितनी सुनसान और उजाड़ है।

युवक : *(उसकी कमर में बांह डाल कर)* प्रिय, डरो मत। मैं तुम्हारे साथ हूं और मैं तुम्हारी किसी भी आदमी या जानवर से रक्षा करूंगा।

युवती : *(अपना सिर उसके कंधे पर रख कर)* मेरे हीरो, तुम बहुत बहादुर हो। तुम्हारे

साथ रहते मुझे कोई डर नहीं। *(एक बार आस-पास देखती है और सांस रोकती है)* . . . वहां कोई चीज हिल रही है। उन सायों में कोई है। वहां, वहां.

युवक : *(युवती को अपने पीछे करके सीना तानकर)* कौन हो तुम ? बाहर निकलो, डरपोक कहीं के। निकलो।

(पत्तों की सर्र-सर्र के बाद गाब-रा *और* साब-री *साये में से आगे आते हैं।* युवक *और* युवती *धीरे-धीरे पीछे हटते हैं,* युवक *कराटे की मुद्रा में है।* गाब-रा *आगे-आते है।* युवक *डर के मारे लड़खड़ा कर पीछे हट जाता है। जब* साब-री *भी सामने आती हैं तो उसके घुटने कांपने लगते हैं।* युवती *चीखती-चिल्लाती हुई युवक को खींचती है जो बेहोशी की सी हालत में* युवती *के सहारे टिका है।* युवक *और* युवती *दायीं ओर से मंच के बाहर हो जाते हैं।)*

गाब-रा : *(एक दूसरे की तरफ हैरानी से देख कर, बारी-बारी से)* उसने हमें बाहर आने के लिए कहा था। मैंने सोचा वह हमसे दोस्ती करना चाहता है।

साब-री : *(एक साथ हाथ रोकते हुए)* ऊं. . . ऊं. . . । ये पृथ्वी वासी तो दोस्ती ही नहीं करते। अब हम कभी जूश ग्रह पर वापस नहीं जायेंगे। ऊं. . . ऊं

गाब-रा : *(एक दूसरे को देखकर, बारी-बारी से)* अब क्या किया जाये ? पृथ्वी के लोग तो लगता है हमसे डरते हैं। यह तो बहुत बुरी बात है।

(इसी समय कई भूत *बायीं ओर से मंच पर प्रवेश करते हैं। एक-दो* भूत *भोजन की टोकरियां लिये हुए हैं। एक सफेद चादर से लिपटा* भूत *उनका नेतृत्व कर रहा है।)*

नेता : (जुड़वां जोड़ों *से)* . . . ओह, तुम यहां हो ? हम तो तुम्हें सब जगह देख रहे हैं।

गाब-रा और **साब-री :** *(प्रसन्न होकर)* तुम हमें देख रहे थे ?

भूत : *(दौड़कर* जुड़वां लोगों *के पास आते हैं। उनकी अजीब शक्ल की प्रशंसा करते हैं और बारी-बारी से बोलते है)* . . . देखो तो इन्हें ? क्या इनकी शक्ल डरावनी नहीं लगती ? ओह ! ये कितने चतुर हैं ! यह बात मेरे मन में क्यों नहीं आयी?

(वे जुडवां लोगों *की पीठ थपथपाते हैं और उन्हें इधर-उधर घुमा कर देखते हैं।)*

नेता : *(दूसरे भूतों को इशारा करके)* आओ, आओ। अब हम मिलकर भोजन करें।

(भूत सारे मंच पर फैलकर भोजन की तैयारी करते हैं। भोजन की टोकरियां खाली की जाती हैं और उनकी चीजें बांटी जाती हैं। भूत खाते-खाते बातें करते हैं, हंसते, गाते और नाचते हैं। जुड़वां लोग यह सब देखकर इतने खुश होते हैं कि एक दूसरे से हाथ मिलाकर अजीब तरह से नृत्य करने लगते हैं। अचानक पृष्ठभूमि से लोगों के चिल्लाने की आवाजें आती हैं। सभी चौंकते हैं और दायीं ओर से आनेवाली भीड़ की तरफ देखते हैं। इस भीड़ में तीन मजदूर और युवा जोड़ा भी है। लोगों के हाथों में लाठियां, पत्थर आदि हैं।)

पहला मजदूर : *(चिल्लाता है और डरे हुए जुड़वां लोगों की तरफ इशारा करता है।)* वो रहे. . . वो रहे।

दूसरा मजदूर : *(अपने दोस्त को पकड़कर)* होशियार. . . देखो, उनके साथ और भी आ गये हैं।

(दूसरा मजदूर लाठी उठाकर सावधानी से आगे बढ़ता है और भीड़ के लोग उसके पीछे चलते हैं। भूत डर कर पीछे हटने लगते हैं।)

नेता : *(अचानक अपना हाथ उठाकर)* रुको, रुको ! तुम्हें पता नहीं है। *(वह एक दो कदम आगे बढ़ता है। भूत भी आगे बढ़ते हैं। भीड़ पीछे हटती है।)* रुको, रुको। मैं भूत नहीं हूं। *(वह जल्दी से अपनी चादर हटा देता है।)*

भूत : और हम भी भूत नहीं है। *(उनमें से भी एक दो अपने मुखौटे उतार देते हैं।)*

युवक : अरे, ये तो पड़ोस के बच्चे हैं।

युवती : तुम सब इस पार्क में क्या कर रहे हो ?

भूत : *(हाथ हिलाकर और नाचते हुए)* हम यहां भूत पार्टी करने आये हैं।

पहला मजदूर : *(अपनी लाठी दिखाकर)* क्या तुम्हारे मां-बाप जानते हैं कि तुम यहां भूत पार्टी कर रहे हो ?

नेता : क्यों नहीं ? हमारी माताओं ने ही तो हमें यह खाना बनाकर दिया है।

दूसरा मजदूर : माफ करना बच्चो। (जुडवां लोगों *की ओर इशारा करके)* ये जो चार जोकर हैं न, इन्होंने तो हमें डरा ही दिया था। हमें लगा कि ये दूसरे ग्रह से आये हुए अजनबी हैं।

भूत : *(खिलखिलाकर)* अजनबी ! अंतरिक्ष के जुड़वां अजनबी ! (भूत जुड़वां लोगों *की पीठ थपथपा कर और उन्हें घुमा कर हंसते हैं।)*

युवक : चलो, अब घर चलें। इन बच्चों को भूत पार्टी का मजा लेने दो। (वह *दायीं तरफ बाहर जाता है। भीड़ भी उनके साथ बाहर चली जाती है।)*

भूत : (*जुड़वां अजनबियों से)* तुम्हारे इस अजीब पहनावे ने उन सब बड़े मूर्खों को डरा दिया। उन्होंने सोचा तुम दूसरे ग्रह से आये हो! हा. . . हा. . . हा. . . हमने जितने पहनावे देखे हैं उनमें तुम्हारा पहनावा सब से अच्छा है।

गाब-रा : *(एक साथ)* यह अजीब पहनावा नहीं है। हम हमेशा ऐसे ही कपड़े पहनते हैं।

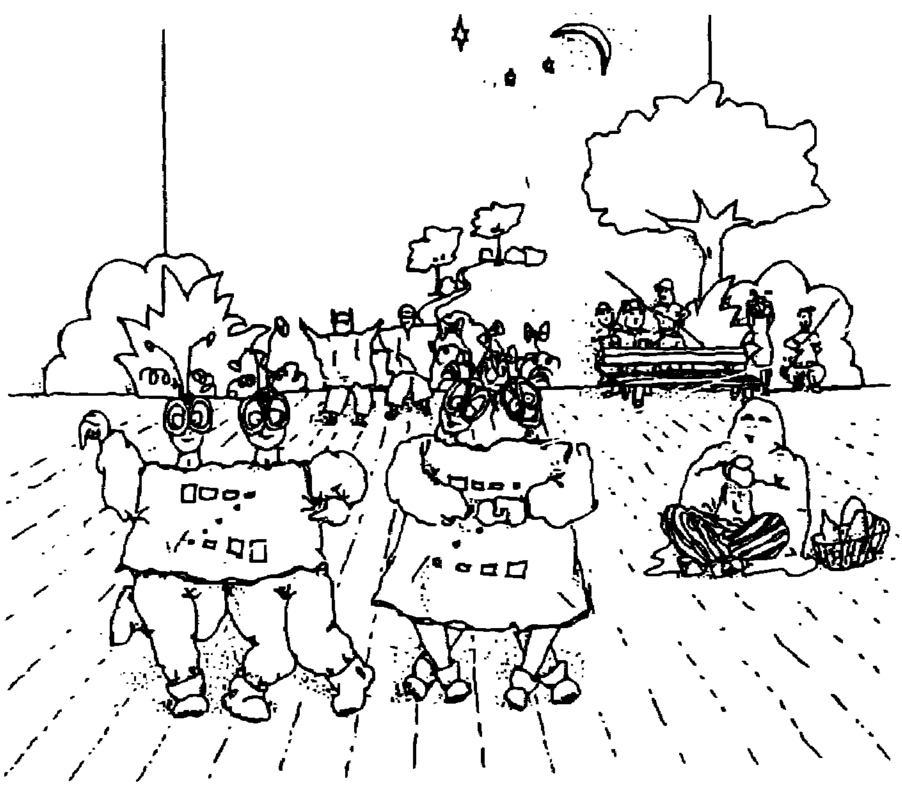
साब-री : *(एक साथ)* . . . इसमें बड़ा मजा आता है।

गाब-रा : *(एक साथ)* हमें बहुत खुशी है कि तुम लोगों ने हमें देख लिया। यह पार्क इतना बड़ा है कि हम एक दूसरे को मिल ही नहीं पाते।

नेता : ओह, हम यह खेल फिर खेलेंगे।

भूत : *(तालियां बजाकर और एक दूसरे को धकियाते हुए)* हां. . . हां. . . हां. ..हां!

नेता : *(घड़ी देखकर ऊंची आवाज में)* अरे, देर हो रही है। हमें अब घर चलना चाहिए।



भूत : *(गाते हुए सामान बटोरते हैं)* अब देर हो गयी है। देर हो गयी है। हमें घर चलना चाहिए।

(भूत *हाथ हिलाकर* जुड़वां अजनबियों से *विदा लेते हैं।* जुड़वां अजनबी *मंच पर रह जाते हैं।)*

गाब-रा : (भूतों *को हाथ हिलाकर विदा करते हुए)* आहा! कितने प्यारे लोग हैं इस पृथ्वी के।

सा-बरी : हम बहुत खुशकिस्मत हैं। अब हम अपने घर जा सकते हैं।*(वे अजीब तरह से नाचने लगती हैं।)*

गाब-रा : *(झाड़ियों, फूलों और श्रोताओं को टा टा करते हुए एक-एक करके)* . . . टा टा प्यारी पृथ्वी। टा टा पृथ्वी के प्यारे दोस्तो।

सा-बरी: टा. . . टा. . .

(जुड़वां अजनबी *झाड़ियों में जाते हैं जहां उनका अंतरिक्ष यान था। वे उसे खींच कर लाते हैं और उसे खोलते हैं। अंतरिक्ष यान धीरे-धीरे उठता है और* जुड़वां अजनबियों *को छिपा देता है। फिर घूमता हुआ और अपनी रोशनी बिखेरता हुआ वह चक्कर काट कर बायीं ओर से बाहर हो जाता है।* भूतों का नेता *अपनी चादर को बांहों पर लटकाये बायीं ओर से आता है। उसके पीछे पहला* भूत *है जिसने अपना मुखौटा उतार दिया है।)*

नेता : मेरा चाकू यहां रह गया था। यहीं कहीं होगा।

पहला भूत : *(ऊपर आसमान में इशारा करके)* अरे . . . वह क्या है ?

नेता : *(ऊपर देखकर)* यह तो अंतरिक्ष यान है, अंतरिक्ष यान। देखो कितना खूबसूरत है !

पहला भूत : यह यहां क्या कर रहा है? *(उसी तरह इशारा करते हुए वह अंतरिक्ष यान को देखता रहता है।)* अरे. . . वह गायब हो गया।

(नेता *और* पहला भूत *आसमान की ओर देख रहे होते हैं, तभी चार* नये भूत, *मुखौटे हटा कर दायीं ओर से आते हैं। वे बहुत गुस्से में दिखाई देते हैं।)*

प्रवक्ता : अरे तुम कहां थे। हम पार्क के उस कोने में खड़े कितनी देर से तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं। क्या तुम छिपे हुए थे ?

नेता : *(चारों* भूतों *को देखकर हैरानी से)* लेकिन तुम तो हमारे साथ थे ! तुम

थे। . . . तुम थे. . .*(रुककर वह आसमान की तरफ देखता है और फिर चार क्रुद्ध भूतों की ओर)* तुम हमारे साथ थे न. . . *(मुश्किल से बात गले उतरती है)!*

पहला भूत : *(रुआंसा होकर चारों भूतों की तरफ इशारा करके)* हां हां, ये हमारे साथ थे। हमारी पार्टी में शामिल थे।

प्रवक्ता : *(गुस्से में आगे बढ़ता है। उसके बाकी साथी भी आगे बढ़ते हैं)*

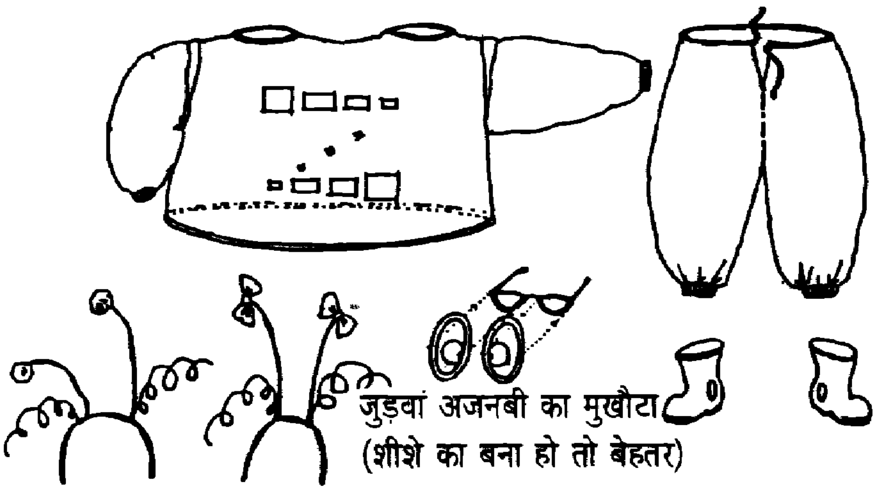
नेता और **पहला भूत :** *(जोर-जोर से रोते हुए और आसमान की तरफ इशारा करके)* अजनबी ! अंतरिक्ष के जुड़वां अजनबी ! *(वे मुड़कर मंच से भागते हैं और जोर-जोर से चिल्लाते हैं)* अजनबी. . . अंतरिक्ष के जुड़वां अजनबी !

चार भूत : *(चिल्लाते हुए उनके पीछे भागते हुए)* अरे यहां आओ। तुम दोनों यहां आओ। तुम हमसे बच नहीं सकते *(मंच के बायें किनारे पर दूर रुक कर)* वे चले गये। दोनों गधे चले गये। *(मुट्ठियां दिखा कर)* हम सोमवार को स्कूल में उन्हें मजा चखायेंगे। दिमाग ठिकाने लगाकर रख देंगे। *(वे यह कहते हुए मुड़कर गुस्से से गुर्राते हुए दायीं ओर से बाहर निकल जाते हैं)* उन्होंने हमें पार्टी से बाहर रखा। उन्होंने हमें धोखा दिया। अजनबी, जुड़वां अजनबियों की कहानी गढ़कर. . हम उन्हें स्कूल में पकड़ेंगे। हम मार-मार कर उनकी नाक चपटी कर देंगे।

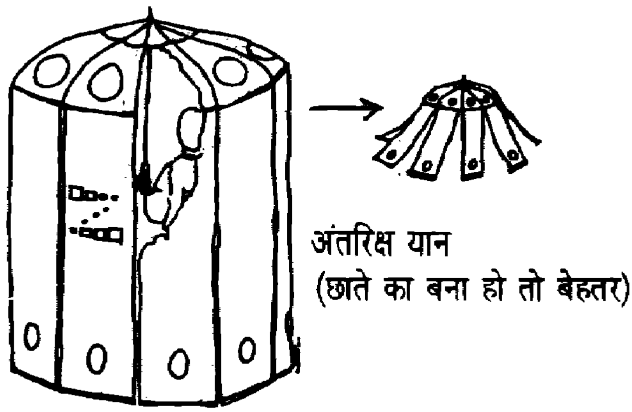
पर्दा

चित्र : डेरेक वी

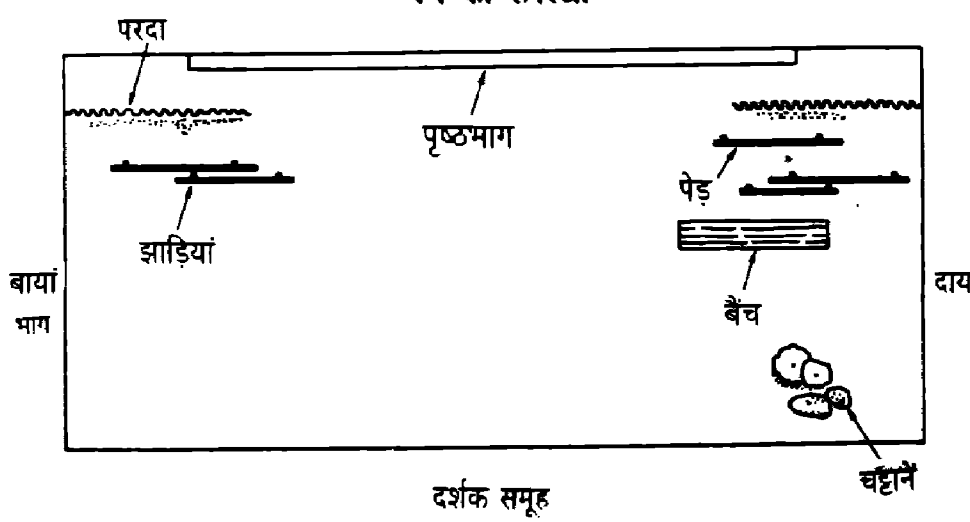
वेशभूषा



मंच-सज्जा



मंच की रूपरेखा



कोलतार की गुड़िया

श्री लंका



कोलतार की गुड़िया

-- लीला एकनायके

● *पात्र-परिचय*

लोमड़	धूर्त किंतु मूर्ख
श्रीमती लोमड़ी	लोमड़ की झगड़ालू पत्नी
खरगोश	एक चालाक पात्र
कोलतार कन्या	एक चिपचिपाती गुड़िया
पेड़ों का समूह	उद्घोषक

(जंगल में एक साफ जगह। मंच के दायीं ओर पेड़ों की वेशभूषा में बच्चों की कतार। पेड़ों के पीछे लोमड़ और श्रीमती लोमड़ी का घर। मंच के निचले भाग में बायीं ओर लंबी घास से घिरा एक पेड़ जो खरगोश का घर है। पर्दा उठने पर खरगोश पेड़ के पीछे से भागता हैं वह चूहे का पीछा करते हुए मंच से बाहर जाता है।लोमड़ और श्रीमती लोमड़ी पेड़ों के पीछे से निकल कर मंच के बीच आते हैं। काले कपड़ों और काले मुखौटे में एक बच्ची कोलतार कन्या बनी है। उसे पेड़ों के पीछे से लाकर खरगोश के घर और पेड़ों के बीच खड़ा किया जाता है। जब खरगोश उसे थप्पड़ मारता है तो उसका हाथ कोलतार की गुड़िया से चिपक जाता है और खरगोश उसे छुड़ा नहीं पाता। संवाद गाये या बोले जा सकते हैं।)

पेड़ : एक था खरगोश
रहता था जंगल में हरियाली के बीच
रंग था उसका बर्फ सा सफेद
इधर कूदता था, उधर दौड़ता था
हवा की तरह बेफिक्र डोलता था।

खरगोश : मुझे प्यार है हरी घास से
मीठी महक की हरी घास से
शाम की ठंडी हवा,वाह !

नन्हें चूहों के पीछे दौड़ना-कूदना
नहीं दुश्मनी है मुझे किसी से
यह सब खेल है दोस्ती के लिए।

पेड़ : लेकिन किसान की बाड़ के पीछे
झांक रही है श्रीमती लोमड़ी
खरगोश पर रखती है नजर
रहती ताक में पूरी रात भर।

(खरगोश बाहर जाता है। लोमड़ और श्रीमती लोमड़ी पेड़ों के पीछे से निकल कर आगे आते हैं।)

श्रीमती लोमड़ी : ओ प्यारे देखा उस खरगोश को
कितना वह मोटा और गुदगुदा

रहे उछलता हरी घास पर
दुनिया से वह है बेखबर।

लोमड़ : छोड़ो भी रानी न देखो वहां
खरगोश को होश होता कहां ?
आओ हम मुर्गे का भोजन करें
नाचें हरी घास पर यहां चांदनी रात में।
और गायें गीत दो-एक
दिल से निकालो तुम खरगोश को
बहुत तेज है हाथ आता नहीं
तुम्हारे लिए लाऊंगा केकड़े
या कछुए या मुर्गे या जो भी कहो।

श्रीमती लोमड़ी : *(रोती हुई)* भाड़ में जायें तेरे केकड़े
या कछुए या मुर्गे या हो और कुछ।
जब से मैं आयी हूं इनके सिवा
कुछ भी तो मुझको यहां न मिला।
मिली न कभी मुझको सौगात है
तुम्हारे लिए शरम की बात है।

पेड़ : रोती रही लोमड़ी रात भर
न खाया-पीया और न झपकी पलक
रही ताकती उस तरफ था जहां
खरगोश का खूबसूरत मकान
लोमड़ बेचारा रहा सोचता
जगता रहा, सिर पटकता रहा
हुई जब सुबह तो हुआ बाग-बाग
तरकीब सूझी उसे लाजवाब।

लोमड़ : सुनो मेरी रानी, तरकीब ऐसी
सोची है मैंने लाजवाब
खरगोश होगा मेरे हाथ में
बनाऊंगा उसके मैं बढ़िया कबाब।

श्रीमती लोमड़ी : जल्दी बताओ क्या तुमने है सोचा
है मुझको तुम्हारी समझ पर भरोसा
अभी जाके चूल्हा जलाती हूं मैं
बड़ी सी कड़ाही चढाती हूं मैं।

लोमड़ : ले आओ ढेला वह कोलतार का
उधर द्वार के पीछे है जो पड़ा
गुड़िया बनाऊंगा उसकी बड़ी
दिखेगी जो एक लड़की खड़ी।

(लोमड़ी *बाहर जाती है।)*

लोमड़ : होंट उसके होंगे बेरी से लाल
दांत क्या होंगे ? गिट्टियों की कतार
दो पीले नींबुओं की आंखें बनाऊंगा
उस पर कौड़ी की नाक लगाऊंगा।

(श्रीमती लोमड़ी कोलतार की गुड़िया *को लाकर मंच के निचले भाग में बायीं ओर खड़ा करती है।)*

लोमड़ : इसको खड़ा करके बाड़ के पास
छिप जायें हम पेड़ की आड़ में
वह खरगोश आयेगा जल्दी यहां
लगेगा वह लड़की का दिल जीतने।

पेड़ : सुनो मित्र खरगोश ! न आओ यहां
तुम्हारे लिए यहां बिछा जाल है
तुम्हें अपना भोजन बनाने की खातिर
चली लोमड़ी ने अजब चाल है।

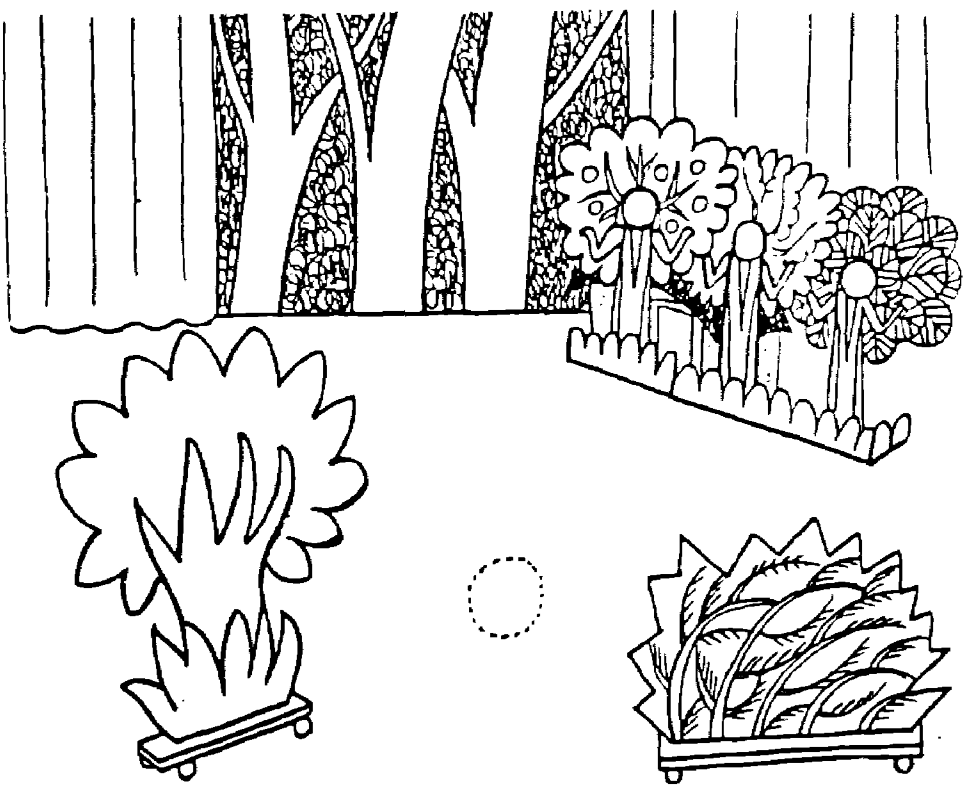
(खरगोश *आता है।)*

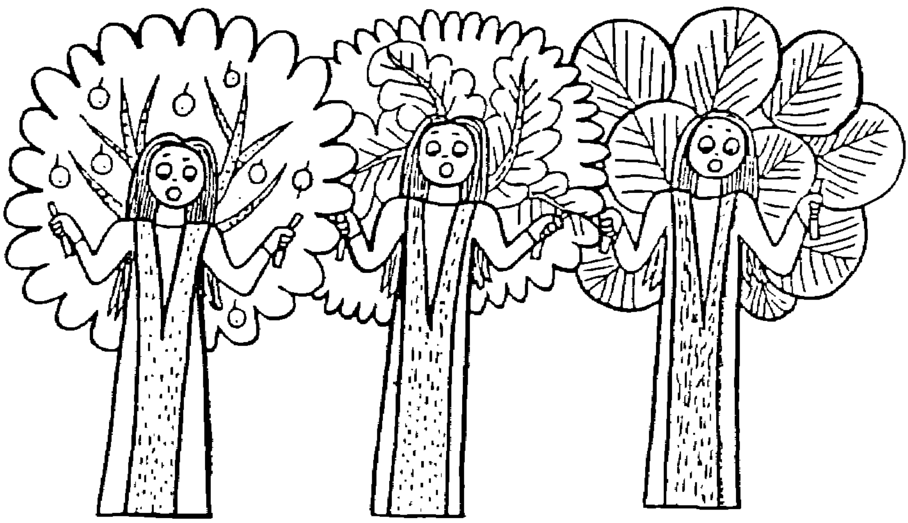
खरगोश : हैलो! यह क्या है ?
अरे, कौन हो तुम प्रिया
सुंदर, सलौनी प्यारी सी सूरत
नमस्ते, नमस्ते, ज़रा मुस्करा दो
हंस कर जरा नाम अपना बता दो

पेड़ : सुनो मित्र खरगोश, चले जाओ जल्दी
तुम्हारे लिए यहां बिछा जाल है
तुम्हें अपना भोजन बनाने की खातिर
चली लोमड़ी ने अजब चाल है।

खरगोश : अरी सुंदरी, तुम गूंगी हो क्या ?
बहरी हो या फिर घमंडी हो क्या ?
बोलो नहीं तो लगाऊंगा झापड़
हो जाओ ठीक वरना फटाफट

पेड़ : यह लड़की नहीं है, यह लड़की नहीं है
गुड़िया है गूंगी यह कोलतार की
भागो मेरे दोस्त भागो यहां से
है खतरे की घंटी नहीं प्यार की।





खरगोश : *(उछलता हुआ कोलतार की गुड़िया के पास जाकर)*
नहीं बोलती हो तो ले लो इनाम
यह थप्पड़ मेरा, अब बताओ तो नाम . . . .
अरे हाथ मेरा पकड़ती हो क्यों ?
यह मेरी कलाई जकड़ती हो क्यों ?

पेड़ : यह लड़की नहीं है यह लड़की नहीं है
गुड़िया है गूंगी यह कोलतार की
तुम्हें अपना भोजन बनाने की खातिर
चली लोमड़ी ने अजब चाल है।

खरगोश : मेरे पास एक और भी हाथ है
यह लो और कसकर लगाता हूं मैं
अरे क्या मुसीबत है इसको भी पकड़ा
छोड़ो हाथ मेरे बस जाता हूं मैं।

पेड़ : कोशिश बहुत की खरगोश ने
छुड़ा न सका हाथ अपने मगर
लोमड़ ने देखा हुआ खुश बहुत
पेड़ की ओट से निकल आया बाहर।

लोमड़ : पकड़ा गया अरे जकड़ा गया
मुश्किल से जाल में आया शिकार
तुम्हारे लिए घर की सबसे बड़ी
कड़ाही रखी है सुबह से तैयार।

खरगोश : मारो मुझे बेशक खा लो अभी
स्वाद मुंह में कोलतार का आयेगा
साफ करना है मुझे तो फेंको झाड़ में
फिर खाओ तो बड़ा ही मजा आयेगा।

पेड़ : फेंको इसे कांटों की झाड़ में
कोलतार इसका निकल जायेगा
हो जायेगा साफ-सुथरा वहां
शाम तक यहां फिर चला आयेगा।

श्रीमती लोमड़ी : हां, हां इसे फेंक दो झाड़ में
लथपथ हुआ है यह कोलतार में
हो जाएगा साफ-सुथरा वहां
चला आयेगा फिर वापस यहां।

पेड़ : हां, हां, इसे फेंक दो झाड़ में
फेंक दो . . . . फेंक दो . . . इसे फेंक दो
कांटों से कोलतार निकल जायेगा

लोमड़ : आओ, इसे खींच कर ले चलें
कांटों के बीच इसे छोड़ दें
हो जायेगा साफ-सुथरा यह जब
मजे से पकायेंगे हम इसको तब।

पेड़ : लोमड़ और लोमड़ी ने किया वही काम
फेंका खरगोश को कांटों की झाड़ में
कांटों ने नोच लिये बाल खरगोश के
लेकिन वह भाग गया पेड़ों की आड़ में।

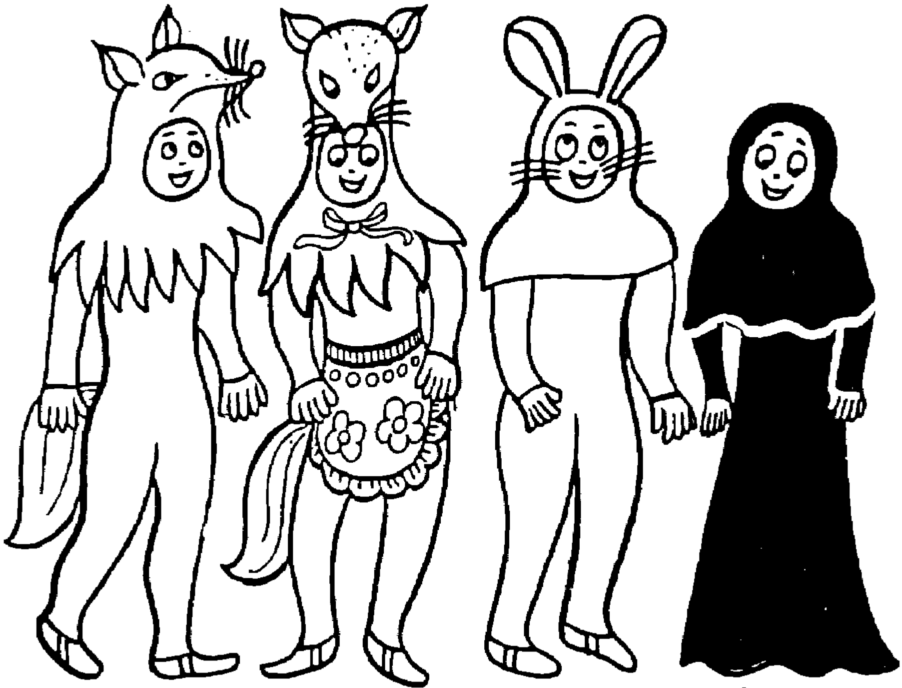
खरगोश : *(कूदकर आता है)*
कौन पकड़ सकता है भला खरगोश को ?

मक्कार बूढ़े लोमड़ की है क्या मजाल ?
तेज हूं, चुस्त हूं, भोला-भाला हूं मैं
मैं भोजन बनूं, है यह कैसा कमाल ?

पर्दा

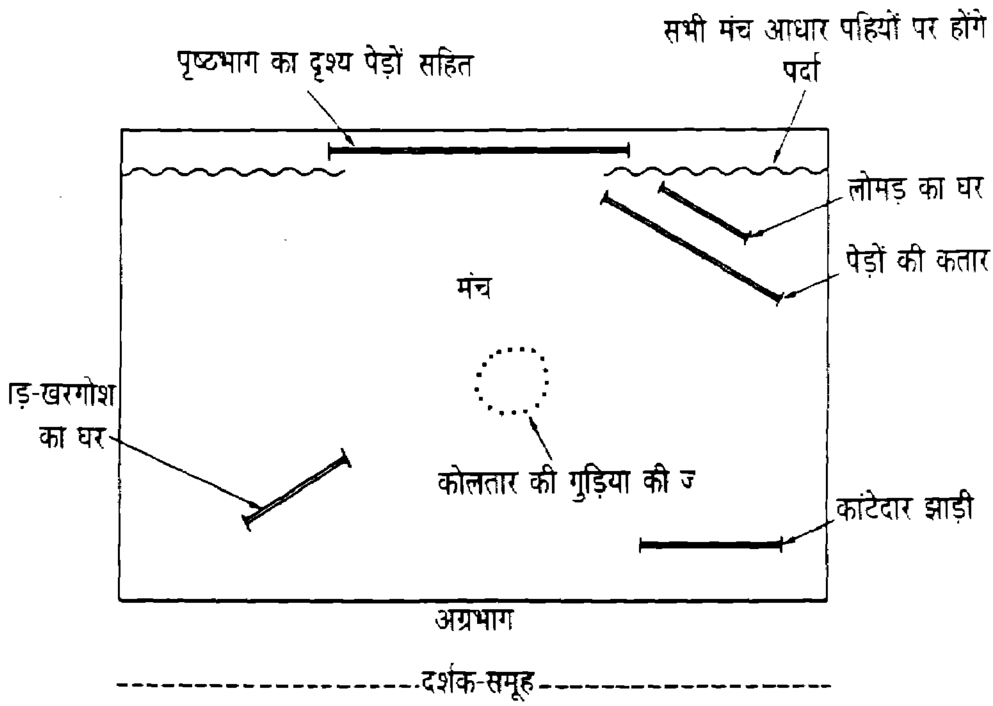
अंग्रेजी अनुवाद : लीला एकनायके
चित्र : सिबिल वेट्टासिंघे

वेशभूषा



लोमड़ श्रीमती लोमड़ी खरगोश कोलतार कन्या

मंच की रूपरेखा



साया

_थाईलैंड_



साया

--थंतिका तप्पादित

● *पात्र-परिचय*

लड़का	एक लड़का
साया (लड़के का)	एक लड़का
साया नेता	साये की वेशभूषा में लंबा आदमी
साये	सायों की वेशभूषा में बच्चे और बड़े
भेड़िया	भेड़िये की वेशभूषा में एक लड़का
मेमना	मेमने की वेशभूषा में एक लड़की
गुलाबी साया	एक लड़की
अन्य	साया-मालिकों का अभिनय करने वाले लड़के, लड़कियां और वयस्क

दृश्य एक

(बाग की पगडंडी जिसके किनारे-किनारे झाड़ियां हैं। एक लड़का आता है और घबराया सा इधर-उधर देखता है। उसके पीछे गहरे नीले तंग कपड़ों में साया आता है। लड़का आगे बढ़ता है, फिर पीछे हटता है। साया भी उसी समय आगे बढ़ता और पीछे हटता है। लड़का सावधानी से दायीं ओर देखता है। साया भी उसकी तरह दायीं ओर देखता है। लड़का जेब से बटुआ निकालता है। साया भी वैसे ही करता है। उसका बटुआ काला है।)

लड़का : अ ह हा! एक बटुआ और मिला। यह कितनी आसानी से मिला! मालिक को तो कुछ पता ही नहीं चला।

(साया पर्स को देखता है। लड़का सूरज की तरफ देखता है। साया भी उसकी तरह करता है। लड़का धूप को रोकने के लिए हाथ चेहरे के सामने करता है। साया भी उसी तरह करता है।)

लड़का : कितनी गर्मी है आज!

(लड़का घुटने ऊपर करके बैठता है और हाथ को पंखे की तरह हिलाता है। साया भी वैसे ही करता है। लड़का हाथ के बटुए को देखकर मुस्कराता है और फिर उसे वापस जेब में रख लेता है। साया भी वही करता है। लड़का अचानक मुड़कर साये को देखता है और अचंभित रह जाता है। साया भी वैसे ही करता है।)

लड़का : ओह! मैंने सोचा कोई और है। मैं कितना बुद्धू हूं। अपने ही साये से डर गया। एक मिनट के लिए तो तुमने मुझे डरा ही दिया था।

(लड़का साये की तरफ उंगली उठाता है। साया उसकी नकल करता है। सूरज चढ़ आया है, इसलिए गर्मी बढ़ रही है। लड़का साये की तरफ देखता हुआ पंखा करता है। साया भी लड़के की तरफ देखता है लड़का झल्लाकर मुड़कर देखता है, लेकिन साये पर नजर रखता है। साया भी वैसे ही करता है। लड़का बहुत गुस्से में आ जाता है और उठ खड़ा होता है।)

लड़का : चले जाओ यहां से। तुम यहां रहोगे तो पुलिस से चौकन्ना रहना मुश्किल हो जायेगा। मेरा पीछा छोड़ो।

(लड़का *उठकर दूसरी तरफ जाता है। साया उसके पीछे जाता है।)*

लड़का : तुमने सुना नहीं ? मेरा पीछा करना छोड़ दो। बंद करो यह सब।

(लड़का *मुट्ठी बांधकर साये की तरफ तीन कदम आगे आता है। साया मुट्ठी बांधकर तीन कदम पीछे हटता है।)*

लड़का : तुम अपने को बहुत होशियार समझते हो ? तुम सुस्त और बेवकूफ हो। मैं अपने दिमाग का इस्तेमाल करता हूं और अपनी रोजी-रोटी कमाता हूं। तुम तो कुछ भी नहीं करते। इस वक्त मैं बहुत परेशान हूं और तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो ?

(साया लड़के की हू-ब-हू नकल करता है। बोलने की जगह वह होंठ हिलाता है।)

लड़का : मैं पकड़ा गया तो क्या होगा ? तुम मदद करोगे ?

(साया लड़के *का पीछा करता रहता है।)*

लड़का : अच्छा, अच्छा। इतने ही जिद्दी हो तो करते रहो मेरा पीछा। मैं चलना बंद करके एक जगह बैठ जाऊंगा। जल्दी ही सूरज छिप जायेगा और तुम अंधेरे में खो जाओगे।

(लड़का *बैठ जाता है। साया भी बैठ जाता है। रोशनी फीकी पड़ जाती है। तेज हवा की आवाज बताती है कि आंधी आने वाली है, आसमान में बादल घिर आये हैं।* लड़का *आसमान की तरफ देखता है।)*

लड़का : बारिश आने वाली है। सूरज की रोशनी नहीं रहेगी। अंधेरा साये को निगल जायेगा।

(अंधेरा होता है और फिर धीमी सी रोशनी। लड़का *आसपास देखता है। साया इस बार उसका पीछा नहीं करता।* लड़का *खड़ा हो जाता है।)*

लड़का : हा हा हा . . . हुआ न वही। रोशनी नहीं, साया नहीं। अच्छा मौका मिला। कोई परेशान करने वाला नहीं है। मैं बिल्कुल आजाद हूं . . .

(साया *उठकर अंगड़ाई लेते हुए उबासी लेता है।)*

साया : चलो, मैं भी आजाद हुआ।

लड़का : क . . . क्या?

(साया *एक बार फिर अंगड़ाई लेता है।)*

साया : आखिर, मैं भी आजाद हो गया।

लड़का : तुम मेरे बगैर कैसे हिल-डुल रहे हो ?

साया : भई, जब रोशनी नहीं होगी तो साया आजाद होगा। वह जो चाहे कर सकता है।

लड़का : अजीब बात है।

साया : यह तो कुछ भी नहीं है। क्या तुम समझते हो कि मुझे तुम्हारा पीछा करने में मजा आता है ? नहीं। अभी तो मौका मिला है मुझे कि जो मन में आये, करूं।

लड़का : तुम कहना क्या चाहते हो ? तुम मेरे साथ नहीं रहना चाहते ?

साया : बात यह है कि तुम चोरी करते हो तो मुझे अच्छा नहीं लगता। यह अच्छी बात नहीं है। मैं चोरी नहीं करना चाहता लेकिन मुझे करनी पड़ती है, क्योंकि तुम चोरी करते हो। तुम जहां जाते हो मैं वहां नहीं जाना चाहता, लेकिन रोशनी होती है तो मुझे जाना पड़ता है। . . . अब रोशनी नहीं है, इसलिए मैं आजाद हूं। अब जहां मेरा मन करेगा, जाऊंगा।

लड़का : सच . . . ? तुम कहां जाना चाहते हो ?

साया : मैं वहां जाना चाहता हूं जहां अपने दोस्त सायों से मिल सकूं। हम सब इस वक्त आजाद होते हैं। हम अक्सर सायों के किले में इकट्ठे होते हैं।

लड़का : यह किला क्या है ?

साया : यह किला वह जगह है जहां हम सब आजाद होने पर जमा होते हैं। अब मैं वहां जा रहा हूं।

लड़का : एक मिनट। क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूं ?

साया : क्या ? तुम मेरे साथ आना चाहते हो ? मैं तो सोचता था कि तुम मुझ से तंग आ गये हो।

लड़का : हां, तुम मेरा पीछा करते हो तो मुझे बहुत बुरा लगता है, लेकिन चूंकि तुम आजाद हो, इसलिए अब हम दोस्त बन सकते हैं।

साया : लेकिन एक वायदा करो।

लड़का : क्या ?

साया : वायदा करो कि तुम वहां चोरी नहीं करोगे। अगर उन्होंने तुम्हें पकड़ लिया तो मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकूंगा।

लड़का : मैं वायदा करता हूं।

साया : पक्की बात ?

लड़का : पक्की।

साया : अपना वायदा तोड़ना मत। आओ मेरे साथ।

(दोनों साथ-साथ बाहर जाते है।)

दृश्य दो

(सायों के किले के अंदर सेट के गहरे रंग हैं और फर्श [illegible] का है। तेज रंगों की तंग वर्दियां पहने कई साये हैं। कुछ के जानवरों की तरह कान और पूंछें हैं, जिसका मतलब है कि वे जानवरों के साये हैं। सायों के किले में साये रंग-बिरंगे हो सकते हैं। प्रत्येक ने एक ही रंग की तंग वर्दी पहन रखी है, ताकि पता चल सके कि वह साया है। सायों का साया नेता [illegible] और दूसरे साये नाच रहे है। नेता ने अनुकूल रंग की तंग वर्दी [illegible] पहन रखा है। उसके सिर पर मुकुट है। उसके हाथ में छड़ी है जिस पर सितारा जड़ा हुआ है।)

साये : *(गाते हुए)* हम साये हैं, हम साये हैं
छोटे-बड़े सब साये हैं
एक-एक सब साये हैं
सूअर, कुत्ते, पंछी, मुर्गे
जेबरा ऊंची गर्दन वाले
उदास दिन का गम मनाने और नाचने आये हम
पीली रोशनी, बुझा आसमान
हम साये, आजाद हैं हम।

साया 1 : मैं सारी दुनिया को अपना गम भरा गीत सुनाऊंगा।

साया 2 : सारा गम भूल जाओ। रोओ मत।

साया 3 : सूरज सो गया है। सू . . . सू . . . सू . . .

साया 4 : आओ, मौज मनाओ।
हम साये हैं, हम साये हैं
एक एक सब साये हैं

(लड़का और साया संगीत के साथ प्रवेश करते हैं। साया शोख रंग की अपनी वर्दी पहनता है। वे मिलकर तीन कदम चलते हुए आगे आते हैं ताकि दर्शकों को यह बता सकें कि वे कौन हैं ?)

साया : यह है सायों का किला। ये सब मेरे दोस्त साये हैं।

लड़का : सायों का किला ? और साये दोस्त ? वह सबसे ऊपर कौन है ?

साया : यह सायों का नेता है। वह हम सब का नेता है, साया नेता।

लड़का : सायों का नेता ? उसके हाथ में क्या है ? बड़ी मजेदार चीज लगती है।

साया : यह जादू की छड़ी है।

लड़का : जादू की छड़ी ?

साया : इस जादू की छड़ी से रात को दिन से ज्यादा लंबा किया जा सकता है। वह इसे सर्दियों में इस्तेमाल करता है। जब ठंड बहुत पड़ती है और लोग गहरी नींद सोते हैं, उस वक्त सायों को आजादी से इकट्ठे मिल-बैठने का ज्यादा वक्त मिलता है।

लड़का : जादू की छड़ी . . . । दिन से रात ज्यादा लंबी हो जाती है। कितना अच्छा हो कि मेरे पास भी ऐसी ही छड़ी हो। मुझे यह छड़ी मिल जाये तो हमेशा रात ही रहे। हम हमेशा अपने बिस्तर में पड़े रहें। स्कूल जाना ही न पड़े।

साया : बेवकूफी की बातें मत करो।

साये : *(गाते हुए)* उदास दिन की खुशी मनाने
और नाचने आये हम
पीली रोशनी, बुझा आसमान
हम साये, आजाद हैं हम।

साया 1 : मैं सारी दुनिया को गीत सुनाऊंगा।

साया 2 : सारा गम भूल जाओ। रोओ मत।

साया 3 : सूरज सो गया है। सू . . . सू . . . सू . . .

साया 4 : आओ, मौज मनाओ।
हम साये हैं, हम साये हैं
एक एक सब साये हैं।

(गीत के अंत में सायों का नेता लड़के *और* साये *को देखता है।)*

साया नेता : क्यों छोटे साये ? तुमने इस मानव लड़के को किले में लाने की हिम्मत कैसे की ? *(सभी* साये *उनके आसपास खड़े हो जाते हैं।)*

साया : महाराज, यह लड़का मेरा मालिक है। यह सायों का किला देखना चाहता है। क्या आप इसे इजाजत देंगे ?

साया नेता : तो यह बात है।

लड़का : महाराज। मैं ज्यादा देर यहां नहीं रहूंगा। . . . आप . . . आपकी यह छड़ी बहुत सुंदर है महाराज। *(हाथ फैलाकर)* . . . क्या मैं . . .

साया : ऐसा मत करो। (लड़के *का हाथ पीछे हटाता है।)*

साया नेता : हा . . . हा . . . यह मेरी जादू की छड़ी है। ठीक है, बच्चे। तुम यहां आये हो तो बोलो तुम क्या जानना चाहते हो ? क्या सायों के बारे में जानना चाहते हो ?

लड़का : हां . . . हां . . . सायों के बारे में जानना चाहता हूं। ओह ! मैं जानता हूं।जब मैं बहुत छोटा था तो अपने साये के साथ खेलता था।

साया : *(साथ-साथ)* अपने साये के साथ खेलते थे ?

लड़का : इस तरह। अगर रोशनी इस तरफ से आती थी तो *(वह दर्शकों की तरफ उंगली से इशारा करता है।)* हम ऐसा करते थे। *(वह छोटी उंगली, पहली उंगली और अंगूठे को मिलाकर दिखाता है।)* और भेड़िये का साया बन जाता था। ऐसे . . .

साया नेता : हा . . . हा . . . क्या तुम्हें उन्होंने यही सिखाया है ?

लड़का : क्या आप इस तरह भेड़िया बना सकते हैं ?

साया नेता : बच्चे, तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह सायों का किला है। आम जगह नहीं। हमारे यहां बहुत कुछ होना है। देखो।

(साया नेता लड़के को मंच के निचले भाग में ले आता है और गाता है।)

साया नेता : यह बायां हाथ, यह दायां हाथ
पकड़ो इसे कसकर साथ *(वह जादू की छड़ी उठाता है।)*
रोशनी आओ *(वह छड़ी घुमाता है और प्रकाश बिखरता है।)* साये
देखो

(भेड़िये और मेमने का संगीत नाटक खेला जाता है। यह काली वेशभूषा पहने अभिनेताओं द्वारा किया जा सकता है। वे इस तरह नाचते हैं जैसे साये घूम रहे हों। यहां छाया कठपुतलियों का इस्तेमाल भी किया जा सकता है।)

भेड़िया : मैं भेड़िया हूं, बड़ा ही खूंखार . . .
घूमता रहता जंगल के आर-पार

(संगीत, नन्हा मेमना साये के रूप में मंच पर घूमता है।)

मुझे दिखाई देता है
छोटा सा इक मेमना
नन्हा प्यारा मेमना
अहा, भूख लगी है मुझको
यम . . . यम . . . यम . . .

मेमना : मैं प्यासा हूं, मैं अकेला हूं
यहां मिलेगा पानी मुझको
मैं प्यासा हूं, मैं अकेला हूं।

भेड़िया : अरे, मेमने ! क्या करते हो ?
पानी को गंदा करते हो ?
देख रहा तेरी शैतानी
कैसे मैं पीऊंगा पानी ?

मेमना : भाई भेड़िये, भाई भेड़िये
मैं तो तुम से नीचे हूं
यह पानी तो बह रहा है
ऊपर से नीचे की ओर

मैं कैसे गंदा कर सकता हूं
सोचो तो, करो तो गौर।

(सायोंको *संगीत का मजा आता है।* साया नेता लड़के *को नाटक के बारे में बताता है।)*

भेड़िया : *(स्वगत)* मेमने की बात तो ठीक है। *(ऊंचे स्वर में)* ठीक, ठीक, ठीक। लेकिन तुम्हारे बाप ने कल इसे गंदा किया था; इसलिए आज मैं तुम्हें खा जाऊंगा। . . .

(भेड़िया मेमने *का पीछा करता है। साये बहुत उत्तेजित दिखाई देते हैं।)*

साया नेता : हा . . . हा . . . देखो दुष्ट भेड़िये को। बेचारे मेमने को पकड़ना चाहता है। ठहर पाजी, मैं तुम्हें मजा चखाता हूं।

(साया नेता *नाटक में शामिल होना चाहता है, लेकिन उसकी छड़ी आड़े आ जाती है।)*

लड़का : महाराज। लाइये, आपकी छड़ी मैं पकड़ता हूं।

साया नेता : शुक्रिया, शुक्रिया . . . *(लड़के को छड़ी देता है।)* ठहर जा, ऐ दुष्ट भेड़िये।



(संगीत जारी रहता है। लड़का छड़ी देखता है।)

लड़का : आखिर यह छड़ी मुझे मिल गयी।

साया : इसे मत लेना . . .

लड़का : चुप रहो।

(लड़का भागता है। संगीत रुक जाता है। सब कुछ ठहर जाता है।)

साया नेता : ठहर जाओ . . . चोर।

लड़का : नहीं . . . नहीं . . .

(साये लड़के की तरफ बढ़ते हैं।)

साया नेता : मुझे यह छड़ी वापस दे दो।

लड़का : मैं . . . मैं . . . मैं . . .

(साये लड़के की तरफ बढ़ते जाते हैं।)

साया नेता : अब . . .

(लड़का छड़ी लेना को देता है।)

साया नेता : चोर कहीं के। सायों के किले में चोरी करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ? तुम्हें इसकी सजा मिलेगी।

साये : इसे दंड दो . . . इसे दंड दो।

लड़का : . . . लेकिन . . . मेरा चोरी करने का इरादा नहीं था।

साया नेता : तुम्हें दंड मिलेगा। हम किले को बंद करके यहां से चले जायेंगे। और तुम चोरी करनेवाले को अंधेरे में अकेले रहना पड़ेगा।

साये : अकेले . . . बिल्कुल अकेले।

साया नेता : तुम्हारा साया भी यहां नहीं रहेगा। तुम्हें दंड मिलेगा। चोर . . . तुम्हें अपने किये की सजा भुगतनी पड़ेगी।

(सभी पीछे हटते हैं। लड़का मदद के लिए इधर-उधर भागता है।)

लड़का : ठहरो, ठहरो। मुझे छोड़कर मत जाओ।

साये : चोर, अपने किये की सजा भुगतो।

(सायेपीछे हटते जाते हैं। लड़का भागकर अपने साये के पास जाता है।)

लड़का : मेरी मदद करो . . . ।

साया : मुझे माफ करो। मैं कुछ नहीं कर सकता। तुम्हें मजा मिलनी ही चाहिए। *(साया धीरे-धीरे पीछे हटता है। सभी बाहर चले जाते हैं। लड़का एक कोने से दूसरे कोने में भागता है।)*

लड़का : रुको . . . मुझे अकेला छोड़कर मत जाओ।

गूंज : रुको . . . मुझे अकेला छोड़कर मत जाओ।

लड़का : ठहरो . . .

गूंज : ठहरो . . . ठहरो . . . ठहरो . . .

लड़का : रुको . . . *(वह इधर-उधर भागता है, फिर निराश हो कर बैठ जाता है। कुछ क्षण चुप रहता है।)* . . . . ओह . . . . अब मैं कभी चोरी नहीं करूंगा। सायों के किले में मैं अकेला रह गया हूं। मैं कभी चोरी नहीं करूंगा।

(अचानक एक लड़की के धीरे-धीरे सुबकने की आवाज सुनाई देती है।)

लड़का : कौन हो ? तुम कौन हो। *(वह उठता है।)*

गुलाबी साया : *(रोती है, फिर लड़के को देखकर)* ओह ! मैंने सोचा यहां और कोई नहीं है।

लड़का : तुम कौन हो ? रो क्यों रही हो ?

गुलाबी साया : मैं भाग गयी थी। मैं एक बहुत बुरी लड़की का साया हूं।

लड़का : बुरी लड़की?

गुलाबी साया : हां, वह बहुत दुष्ट है। वह जानवरों को सताती है। कुत्तों को मारती है। पंछियों और चूहों को मार डालती है। मुझे यह सब बहुत बुरा लगता था, लेकिन जब वह यह सब करती थी तो मुझे भी करना पड़ता था।

लड़का : बुरी बात ।

गुलाबी साया : बुरी नहीं। बहुत बुरी। मेरी मालिक लड़की अपने मां-बाप से हमेशा झूठ बोलती है। जब वह गलती करती है तो उसका दोष किसी और पर लगा देती है। मैं अपनी गलती मानना चाहती हूं, लेकिन नहीं मान पाती। *(वह फिर रोने लगती है।)*

लड़का : रोओ मत, रोओ मत . . . मुझे रोना बहुत बुरा लगता है।

गुलाबी साया : मैं जल्दी से जल्दी मौका पाते ही उसे छोड़कर भाग जाना चाहती थी। मैं उसके पास नहीं जाना चाहती। मैं बुरे काम नहीं करना चाहती। मैं बहुत शर्मिंदा हूं।

लड़का : रोओ मत गुलाबी साये, रोओ मत। *(कुछ सोचता है।)* मैं समझता हूं कि तुम्हें कितना बुरा लग रहा होगा। मैं भी बुरा लड़का था। मैं भी अब बहुत शर्मिंदा हूं। जब कोई बुरा काम करता है तो उसे और कोई भले ही न जानें, हमारा साया तो जानता ही है। *(वह बैठ जाता है।)* मैं सब को यह बात बताना चाहता हूं कि वे जो कुछ भी करते हैं, उनके साये उसे जानते हैं। इसलिए जब वे बुरा काम करने लगते हैं तो उन्हें शर्म आनी चाहिए। कितने अफसोस की बात है कि मैं यह बात सारी दुनिया को नहीं बता सकता हूं।

गुलाबी साया : क्यों नहीं बता सकते ?

लड़का : क्योंकि मैं यहां से बाहर नहीं जा सकता।

गुलाबी साया : अगर तुम बाहर जा सको तो क्या सब को यह बात बताओगे?

लड़का : जरूर। यहां से बाहर जा सकूं तो सारी दुनिया को बताऊंगा।

(चारों तरफ जोर-जोर की आवाजें)

साये : तुम सच कह रहे हो ?

लड़का : हां। *(आश्चर्य में पड़ जाता है।)*

(साये *मुस्कुराते हुए आते हैं।)*

साया नेता : तुम अच्छे लड़के हो। एक बार फिर कहो।

(संगीत बजता है। लड़का गाता है।संगीत के साथ-साथ कहता है।)

लड़का : इस दिल के अंदर दोनों हैं
अच्छा और बुरा
सबसे अच्छा चुनो
अच्छा रास्ता अपनाओ . . .

साया नेता : जो भी हो तुम
साया न तुमसे दूर
सपने में या जगते में
साया न तुमसे दूर

सब मिलकर : सावधान रे सावधान !
आसपास कोई न सही
साये से और तुम से तो
सचाई छिप सकती नहीं।

(संगीत। रोशनियां। हवा की आवाज। सब सुनते हैं। बारिश बंद हो जाती है।)

साया नेता : धूप चमकने लगी है। अब हम विदा लेते हैं। सायो ! अपने-अपने मालिकों के पास जाओ।

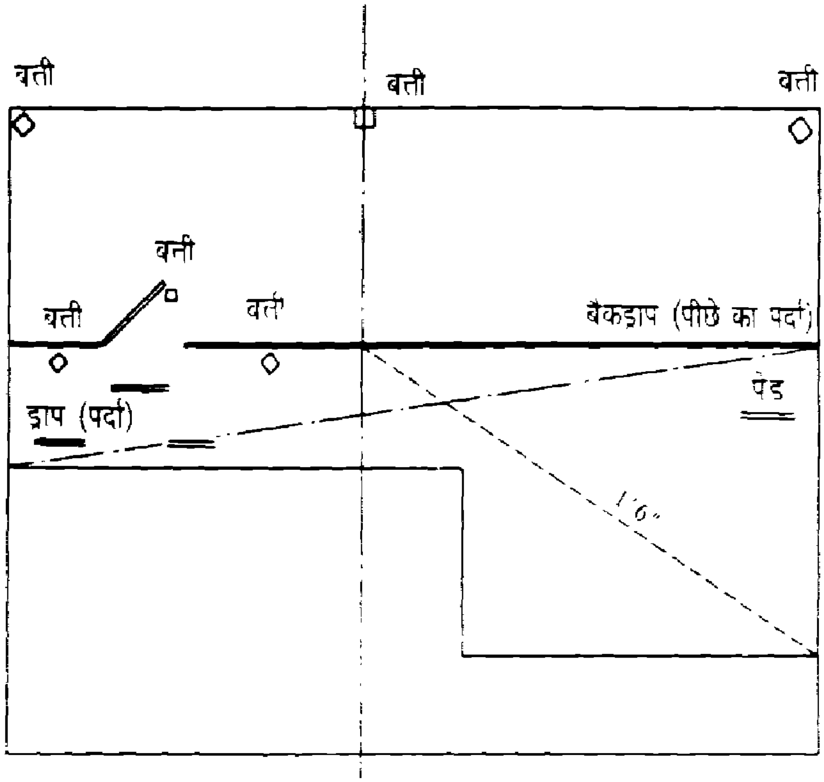
(साये *जल्दी-जल्दी भाग कर गायब हो जाते हैं। लड़का और उसका साया रह जाते है।। लड़का दर्शकों की ओर पीठ करके इधर-उधर देखता है। साया भी उसकी तरह करता है। संगीत। दोनों मिलकर नाचते हैं। साये भी अपने मालिकों के साथ वापस आते हैं और सब नाचने लगते हैं।)*

सब : *(गाते हुए)* इस दिल के अंदर दोनों हैं
अच्छा और बुरा
सबसे अच्छा चुनो
अच्छा रास्ता अपनाओ . . .
जो भी हो तुम
साया न तुमसे दूर
सपने में या जगते में
साया न तुमसे दूर
सावधान रे सावधान !
आसपास कोई न सही
साये से और तुम से तो
सचाई छिप सकती नहीं।

पर्दा

अंग्रेजी अनुवाद : ओंचुमा युथावोंग
चित्र : फैतून बूनफानोन

मंच की रूपरेखा



मंच के फर्श की योजना

1. संकल्पना प्रकाश और [illegible]
2. प्रकाश ड्राप (पर्दे [illegible]
3. बैकड्राप का इस्तेमाल [illegible]
4. अभिनय के लिए [illegible] लगाने के लिए काफी जगह [illegible]

सेट

दृश्य 1. छोटी-छोटी झाड़ियों के बीच पगडंडी।

दृश्य 2. सायों का किला अस्तर लगे काले कपड़े में प्लेटफार्म की सतह पर बनेगा।

वेशभूषा

वेशभूषा जानवरों, लड़कों, लड़कियों और वयस्कों का संकेत दे। पहले दृश्य के साये काले कपड़े पहनते हैं। सायों के किले में रंग-बिरंगी कसी हुई वर्दियां पहनी जाती हैं जिनका रंग उनके मालिकों के कपड़ों से मिलता हो।



सहभागी देशों द्वारा तैयार की गयी सामग्री के प्रकाश्य रूप देने तथा संपादकीय काम में सहयोग देने के लिए श्री डॉन केन्नी और चित्रांकन के लिए श्री हान्मो सुगियूरा के प्रति विशेष आभार।

तरंग प्रिंटर्स, लक्ष्मी नगर, दिल्ली द्वारा मुद्रित